1 शिक्षा मनोविज्ञान एवं अधिगम (Educational Psychology and Learning)

शिक्षा मनोविज्ञान (Educational Psychology)

शिक्षा का अर्थ

- शिक्षा को परिभाषित करते हुए महात्मा गांधी ने कहा, था "शिक्षा का तात्पर्य व्यक्ति के शरीर, मन और आत्मा के समुचित विकास से है।"
- हिंदी में शिक्षा का अर्थ 'ज्ञान' से लगाया जाता है। अंग्रेज़ी में इसे Education कहा जाता है। Education शब्द लैटिन भाषा के Educatum से निकला हुआ है, जिसका सामान्य अर्थ होता है– to bring up together।

शिक्षा मनोविज्ञान का अर्थ

- शिक्षा मनोविज्ञान से तात्पर्य शिक्षण एवं सीखने की प्रक्रिया को सुधारने के लिये मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का प्रयोग करने से है। यह शैक्षिक परिस्थितियों में व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन करता है।
- यह बालकों की मानसिक, नैतिक एवं शारीरिक क्षमताओं को निर्धारित करके उसके अनुसार उचित शिक्षा की व्यवस्था करने में सहायता पहुँचाता है।

शिक्षा मनोविज्ञान की परिभाषाएँ

शिक्षा मनोविज्ञान को विभिन्न चिंतकों द्वारा परिभाषित किया गया है। कुछ महत्त्वपूर्ण परिभाषाओं का उल्लेख निम्नलिखित है–

- **स्किनर** ने वर्ष 1958 में शिक्षा मनोविज्ञान को परिभाषित करते हुए कहा, "शिक्षा मनोविज्ञान मनोविज्ञान की वह शाखा है जो सीखने और सिखाने की प्रक्रिया का अध्ययन करती है।"
- स्कॉटलैंड के मनोवैज्ञानिक **जेम्स ड्रीवर** ने शिक्षा मनोविज्ञान को परिभाषित करते हुए कहा, "शिक्षा मनोविज्ञान प्रयुक्त मनोविज्ञान की एक ऐसी शाखा है जो शिक्षा में मनोवैज्ञानिक नियमों एवं परिणामों के उपयोग से तथा साथ ही साथ शिक्षा की समस्याओं के मनोवैज्ञानिक अध्ययन से संबंधित होती है।"
- **क्रो एवं क्रो** ने वर्ष 1973 में शिक्षा मनोविज्ञान को परिभाषित करते हुए कहा, "शिक्षा मनोविज्ञान जन्म से लेकर वृद्धावस्था तक के अधि गम अनुभवों का विवरण एवं व्याख्या प्रस्तुत करता है।"
- अमेरिकी मनोवैज्ञानिक **सैंट्रोक** के अनुसार, "शिक्षा मनोविज्ञान मनोविज्ञान की ऐसी शाखा है जो शैक्षिक परिस्थितियों में शिक्षण एवं अधिगम के बोध में विभिन्नता दिखलाती है।"
- **कॉलसनिक** ने वर्ष 1936 में शिक्षा मनोविज्ञान को परिभाषित करते हुए कहा, "मनोविज्ञान के सिद्धांतों व परिणामों का शिक्षा के क्षेत्र में अनुप्रयोग शिक्षा मनोविज्ञान है।"
- **ट्रो** के अनुसार, "शिक्षा मनोविज्ञान शैक्षिक परिस्थितियों के मनोवैज्ञानिक पक्ष का अध्ययन है।"
- **स्टीफन** के अनुसार, "शिक्षा मनोविज्ञान शैक्षिक विकास का क्रमबद्ध अध्ययन है।"
- **थॉर्नडाइक** के अनुसार शिक्षा मनोविज्ञान के अंतर्गत शिक्षा से संबंधित संपूर्ण व्यवहार और व्यक्तित्व आ जाता है।
- विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रस्तुत की गई शिक्षा मनोविज्ञान की विभिन्न परिभाषाओं को आधार बनाकर कहा जा सकता है कि शिक्षा मनोविज्ञान में व्यक्ति के व्यवहार, मानसिक प्रक्रियाओं एवं अनुभवों का अध्ययन शैक्षिक परिस्थितियों में किया जाता है।
- शिक्षा मनोविज्ञान मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसका ध्येय शिक्षण की प्रभावशाली तकनीकों को विकसित करना तथा अधिगमकर्त्ता की योग्यताओं एवं अभिरुचियों का आकलन करना है। यह व्यावहारिक मनोविज्ञान है जो शिक्षा एवं सीखने की प्रक्रिया को सुधारने में प्रयासरत है।
- साथ ही, यह भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है कि शिक्षा मनोविज्ञान बालकों की विभिन्न क्षमताओं के मापन के साथ-साथ उनके समुचित विकास एवं अनुकूल शिक्षा के लिये उचित परामर्श भी प्रदान करता है।

शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति
(Nature of Educational Psychology)

- शिक्षा मनोविज्ञान प्रकृति में वैज्ञानिक प्रकृति का होता है। इसका कारण है कि इसके द्वारा शैक्षिक वातावरण में अधिगमतकर्त्ता के व्यवहार का वैज्ञानिक विधियों, नियमों तथा सिद्धांतों के माध्यम से अध्ययन किया जाता है।
- शिक्षा मनोविज्ञान विधायक और नियामक दोनों प्रकार का विज्ञान है। विधायक विज्ञान तथ्यों पर आधारित होता है, वहीं नियामक विज्ञान मूल्यांकन पर आधारित होता है।
- जहाँ शिक्षा का स्वरूप संश्लेषणात्मक होता है, वहीं शिक्षा मनोविज्ञान का स्वरूप विश्लेषणात्मक होता है। यह वस्तुपरक विज्ञान की श्रेणी में आता है।
- शिक्षा मनोविज्ञान को व्यवहार के विज्ञान की श्रेणी में भी रखा जाता है, क्योंकि इसके अंतर्गत शैक्षणिक परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए बालक के व्यवहार का अध्ययन किया जाता है।
- शैक्षणिक परिस्थितियों के अंतर्गत बालक के व्यवहार का अध्ययन करना ही शिक्षा मनोविज्ञान की विषयवस्तु है। इसका सीधा संबंध शिक्षण में अधिगम क्रियाकलापों से है।

शिक्षा मनोविज्ञान के उद्देश्य
(Objectives of Educational Psychology)

शिक्षा मनोविज्ञान के उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. शिक्षकों की मदद करना

   इसका प्रमुख उद्देश्य शिक्षकों को शिक्षा संबंधी आवश्यक मनोवैज्ञानिक तथ्यों से परिचित कराकर उनके कार्यों को आसान बनाना है ताकि वे शिक्षार्थियों को विकास के पथ पर निर्देशित कर सकें। सामान्य अर्थों में शिक्षा मनोविज्ञान का उद्देश्य शिक्षकों को शैक्षणिक कार्यों में सहायता प्रदान करना होता है।
2. उचित निर्देश देना तथा पाठ्यक्रम निर्माण में सहायता देना
3. व्यावसायिक निर्देशन प्रदान करना तथा उचित अध्यापन की विधि प्रस्तुत करना।

   विद्यालय से संबद्ध प्रशासकों एवं अधिकारियों की सहायता करना।
4. शिक्षार्थियों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना, साथ ही अभिभावकों को भी उचित मार्गदर्शन प्रदान करना।

शिक्षा मनोविज्ञान द्वारा शिक्षकों को सहायता

शिक्षा मनोविज्ञान द्वारा निम्नलिखित रूप में शिक्षकों को सहायता प्रदान की जाती है–

- ❑ यह शिक्षकों में शैक्षिक समस्याओं के प्रति कारगार मनोवृत्ति उत्पन्न करता है।
- ❑ यह शिक्षार्थियों के व्यवहारों को गंभीरतापूर्वक समझने में मदद प्रदान करता है।
- ❑ यह शिक्षकों को बालकों के व्यवहार में उचित परिवर्तन के लिये मार्ग प्रशस्त करता है।
- ❑ शिक्षा मनोविज्ञान, शिक्षार्थियों की सफलताओं और कमज़ोरियों तथा उनके उपचार संबंधी सिफारिशें करने में शिक्षकों को मदद प्रदान करता है।
- ❑ शिक्षा मनोविज्ञान, शिक्षार्थियों को देने योग्य शैक्षणिक सामग्रियों के संबंध में शिक्षकों का मार्गदर्शन करता है।
- ❑ शिक्षा मनोविज्ञान, शिक्षकों को अपनी सही भूमिका निभाने में विशेष रूप से सहायता करता है।
- ❑ यह शिक्षार्थियों के बीच वैयक्तिक विभिन्नता को ध्यान में रखकर निर्देशन कार्यक्रमों का निर्माण करने में शिक्षकों को सहायता करता है।
- ❑ शिक्षा मनोविज्ञान के माध्यम से शिक्षक अपनी सीमाओं को आसानी से समझ लेते हैं तथा उनका उचित निराकरण करते हैं।

शिक्षा मनोविज्ञान का कार्यक्षेत्र
(Scope of Educational Psychology)

शिक्षा मनोविज्ञान के कार्यक्षेत्र को निम्नलिखित रूप में बाँटा जा सकता है–

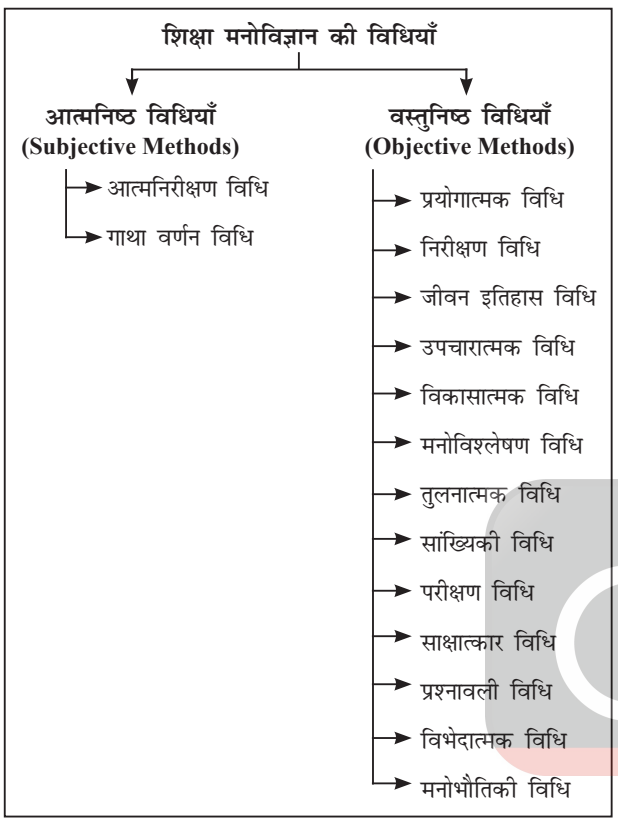
- **पाठ्यक्रम निर्माण:** शिक्षा मनोविज्ञान पाठ्यक्रम निर्माण में उचित भूमिका का निर्वहन करता है। यह सर्वविदित है कि सभी क्षेत्रों के लिये एक-सा पाठ्यक्रम नहीं बनाया जा सकता। इसका निर्माण छात्रों की रुचियों, अभिरुचियों, आवश्यकताओं, बैद्धिक क्षमता, आयु आदि के अनुसार किया जाता है। अत: इस कार्य में शिक्षा मनोविज्ञान की भूमिका बढ़ जाती है।
- **अध्ययन की विधियाँ:** शिक्षा मनोविज्ञान विकास की प्रक्रिया से गुज़र रहा है। वर्तमान तक विद्यमान अनेक पद्धतियाँ अनेक स्थानों पर अध्ययन के लिये उपयुक्त नहीं बैठती हैं। अध्ययन की विभिन्न विधियों की खोज करना एवं प्रचलित विधियों में अपेक्षित सुधार करना भी शिक्षा मनोविज्ञान के अंतर्गत आता है। यह एक नए प्रकार का विज्ञान है इसके अंतर्गत निरंतर विकास की प्रक्रिया जारी रहती है।
- **सीखना:** शिक्षा मनोविज्ञान के तहत सीखने से संबंधित बातों, यथा- सीखने के नियम, सीखने के सिद्धांत, सीखने को प्रभावित करने वाले कारक, शिक्षा का स्थानांतरण आदि का अध्ययन किया जाता है।
- **समूह मनोविज्ञान:** वर्तमान समय में दुनिया के लगभग सभी देशों में बालकों को समूह में पढ़ाए जाने का प्रचलन है। शिक्षा मनोविज्ञान में व्यक्ति के अध्ययन के साथ-साथ उसके समूह का भी अध्ययन किया जाता है। समूह में व्यक्ति के व्यवहार के सभी पक्षों का अध्ययन किया जाता है। अत: इस क्षेत्र में शिक्षा मनोविज्ञान की भूमिका बढ़ जाती है।
- **मापन एवं मूल्यांकन:** शिक्षा मनोविज्ञान में शैक्षिक उपलब्धि एवं विशेष योग्यता का मापन तथा वृद्धि, व्यक्तित्व, चरित्र संबंधी मापन के लिये विभिन्न साधनों, विधियों, परीक्षणों और सांख्यिकीय कार्यों का प्रयोग किया जाता है। सीखने की प्रक्रिया में अध्यापकों को शिक्षार्थियों की बुद्धि, व्यक्तित्व तथा विभिन्न योग्यताओं का ज्ञान आवश्यक है। इन सबका मापन शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र में आता है।
- **मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन:** मनोवैज्ञानिकों ने यह साबित किया है कि बच्चों की शिक्षा एवं विकास में बच्चों व शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य और उनके समायोजन की क्षमता की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। शिक्षा मनोविज्ञान में शिक्षार्थियों और शिक्षकों के मानसिक विकास में बाधा पहुँचाने वाले तत्त्वों का अध्ययन किया जाता है। इसके अतिरिक्त कुसमायोजन के कारणों और विधियों का भी अध्ययन किया जाता है।

शिक्षा मनोविज्ञान का महत्त्व
(Importance of Educational Psychology)

शिक्षा मनोविज्ञान के महत्त्व को निम्नलिखित रूप में समझा जा सकता है–

- शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षार्थियों में बाल विकास की विभिन्न अवस्थाओं की विशेषता को समझने में मदद प्रदान करता है।
- कक्षा के शिक्षण के स्वरूप को समझने में शिक्षा मनोविज्ञान का महत्त्व बढ़ जाता है।
- शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षार्थियों की समस्याओं को समझने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है। यह उनके समक्ष उत्पन्न समस्याओं को पहचानकर उचित शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्शन से उन्हें दूर करने का प्रयास करता है और शिक्षा के स्तर में आवश्यक सुधार लाता है।
- शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षार्थियों की वैयक्तिक विभिन्नता को समझने में मदद करता है।

- प्रभावी शिक्षण विधियों की पहचान तथा पाठ्यक्रम के निर्माण में शिक्षा मनोविज्ञान का महत्त्व बढ़ जाता है।
- समूह गतिकी को समझने में, अपवादात्मक बच्चों की शिक्षा के लिये आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान करने में तथा शोधकार्य में शिक्षा मनोविज्ञान का अत्यधिक महत्त्व है।



कक्षा स्थितियों में शिक्षक के निहितार्थ

कक्षा स्थितियों में शिक्षक के निहितार्थ को निम्नलिखित रूप से वर्णित किया जा सकता है–

- **बालकों की समस्याओं का ज्ञान:** शिक्षकों के लिये बालकों की आवश्यकताओं एवं समस्याओं से संबंधित उपयोगी जानकारी की आवश्यकता होती है। यह जानकारी मनोविज्ञान के अध्ययन द्वारा ही संभव हो पाती है।
- **सीखने के उद्देश्यों का निर्धारण:** शिक्षण के उद्देश्यों का निर्धारण शिक्षक की प्रथम अवस्था है। यही शिक्षण उद्देश्य को निश्चित दिशा प्रदान करने के साथ शिक्षण एवं मूल्यांकन विधियों के निर्धारण में सहायता प्रदान करता है। शिक्षा मनोवैज्ञानिकों ने उद्देश्यों को दीर्घकालीन, अल्पकालीन व व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों से संबंधित किया है। शिक्षा मनोविज्ञान के ज्ञान के आधार पर ही एक शिक्षक उद्देश्यों का निर्धारण सुचारु रूप से करता है।
- **स्वयं का ज्ञान:** शिक्षकों के लिये स्वयं का ज्ञान होना अति आवश्यक है। शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापक की योग्यता, प्रतिभा, क्षमता, गुण आदि का ज्ञान कराता है। साथ ही स्वयं के ज्ञान के द्वारा कार्य की प्रेरणा प्रदान करता है। शिक्षा मनोविज्ञान के द्वारा शिक्षकों को अपनी अभिवृत्ति, विश्वास, प्रवीणता एवं योग्यताओं के विश्लेषण में मदद मिलती है।
- **विविध शिक्षा प्रणाली:** संप्रेषण कला और विषय का पूर्ण ज्ञान होने के बावजूद एक अच्छा शिक्षक होना आवश्यक नहीं है। अच्छा शिक्षक होने के लिये मनोविज्ञान के सिद्धांतों की जानकारी एवं इनकी प्रयुक्तता आना आवश्यक है। 19वीं शताब्दी से विभिन्न शिक्षण प्रणालियों का उद्गम विभिन्न मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के आधार पर हुआ। फ्रोबेल की किण्डरगार्टन पद्धति, मॉण्टेसरी पद्धति, यूरिस्ट पद्धति एवं बेसिक शिक्षा प्रणाली आदि की जानकारी शिक्षा मनोविज्ञान द्वारा अध्यापक को मिलती है। शिक्षा प्रणाली के अध्ययन से शिक्षा के बारे में एक नया दृष्टिकोण विकसित होता है। यही कारण है कि आज सहयोगी क्रियाओं पर बल दिया जाता है और इन्हें अतिरिक्त शैक्षणिक क्रियाओं की संज्ञा न देकर सह-शैक्षणिक क्रियाएँ कहा जाता है।
- **अधिगम:** शिक्षा मनोविज्ञान द्वारा एक शिक्षक कक्षा शिक्षण से संबंधित अधिगम की प्रकृति, स्थितियों, परिणामों तथा मूल्यांकन से संबंधित तथ्यों की जानकारी प्राप्त करता है। शिक्षक अधिगम के विभिन्न सिद्धांतों को जानकर विद्यार्थियों की अधिगम आवश्यकताओं, अनुदेशीय स्रोतों को ध्यान रखते हुए चयनित करता है। अनुदेशीय सामग्री का चयन भी विद्यार्थियों की वैयक्तिक विभिन्नताओं के आधार पर भी संभव है। इस संदर्भ में शिक्षा मनोविज्ञान सहायता करता है।

अधिगम की अवधारणा (Concept of Learning)

- मनुष्य के जीवन में सीखना एक सामाजिक एवं आम प्रचलित प्रक्रिया में का अंग माना जाता है। व्यक्ति में जन्म के साथ ही सीखने की प्रक्रिया आरंभ हो जाती है।
- अधिगम प्रक्रिया जीवनपर्यंत चलती रहती है। मनुष्य प्रतिदिन जाने-अनजाने कुछ न कुछ सीखता ही रहता है। इसे एक उदाहरण के माध्यम से आसानी से समझा जा सकता है-
  - जब एक छोटा बच्चा जलती हुई दियासलाई की तीली की लौ को छूने के प्रयास में उँगली को जला बैठता है तो उसे इस बात की अनुभूति होती है कि तीली को छूने से उँगली जल जाती है। दूसरी बार वह ऐसा करने से बचता है। इस तरह का अनुभव उसे जलती हुई वस्तुओं अर्थात् आग से दूर रहना सिखा देता है। इस प्रकार बच्चा यह आसानी से सीख जाता है कि अगर किसी गर्म वस्तु या लौ को हाथ लगाया जाएगा तो आवश्यक ही जलने की पीड़ा उठानी पडेगी।
- इस प्रकार मानव के जीवन में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष अनुभवों, चाहे वे सकारात्मक हों या नकारात्मक, के माध्यम से परिवर्तन आते रहते हैं और वह सीखता रहता है। अनुभवों के माध्यम से व्यवहार में होने वाले इन परिवर्तनों को साधारण रूप से सीखने की संज्ञा दी जाती है।

अधिगम की परिभाषा *(Definition of Learning)*

सीखने की प्रक्रिया की उपर्युक्त व्याख्या बहुत ही सरल व्याख्या है। इसका विस्तृत अर्थ समझने के लिये कुछ अधिक स्पष्टीकरण और पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकता है। इसी संदर्भ में विभिन्न चिंतकों द्वारा अधिगम को विभिन्न रूपों में परिभाषित किया गया है, जिनमें से कुछ महत्त्वपूर्ण परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं–

- **हिलगार्ड** के अनुसार, "सीखना या अधिगम वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई क्रिया आरंभ होती है अथवा परिस्थिति से सामना होने पर प्रतिक्रिया द्वारा परिवर्तित की जाती है बशर्ते कि क्रिया में होने वाले परिवर्तन की विशेषताओं को मूल प्रवृत्तियों, परिपक्वता या प्राणी की अस्थायी अवस्थाओं (जैसे- थकावट अथवा औषधि के प्रभाव इत्यादि) के आधार पर नहीं समझाया जा सके।"
- **गार्डनर मरफी** के अनुसार, "सीखने या अधिगम शब्द में वातावरण संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये व्यवहार में होने वाले सभी प्रकार के परिवर्तन सम्मिलित हैं।"
- **वुडवर्थ** के अनुसार, "किसी भी ऐसी क्रिया को जो कि व्यक्ति के (अच्छे या बुरे किसी भी तरह के) विकास में सहायक होती है और उसके वर्तमान व्यवसाय एवं अनुभवों को, जो कुछ वे हो सकते थे, उनसे भिन्न बनाती है, सीखने की संज्ञा दी जा सकती है।"
- **गेट्स व अन्य के अनुसार,** "अनुभव के द्वारा व्यवहार में होने वाले परिवर्तन को सीखना या अधिगम कहते है।"
- **किंगस्ले एवं गैरी** के अनुसार, "अभ्यास अथवा प्रशिक्षण के फलस्वरूप नवीन तरीके से व्यवहार (अपने विस्तृत अर्थ में) करने अथवा व्यवहार में परिवर्तन लाने की प्रक्रिया को सीखना कहते हैं।"
- **क्रो एवं क्रो** के अनुसार, "सीखना आदतों, ज्ञान और अभिवृत्तियों का अर्जन है। इसमें कार्यों को करने के नवीन तरीके सम्मिलित हैं और इसकी शुरुआत व्यक्ति द्वारा किसी भी बाधा को दूर करने अथवा नवीन परिस्थितियों में अपने समायोजन को लेकर होती है। इसके माध्यम से व्यवहार में उत्तरोत्तर परिवर्तन होता रहता है। यह व्यक्ति को अपने अभिप्राय अथवा लक्ष्य को पाने में समर्थ बनाती है।"
- **स्किनर** के अनुसार, "अधिगम व्यवहार के उत्तरोत्तर सामंजस्य की प्रक्रिया है।"
- **क्रोनवेक** के अनुसार, "अधिगम अनुभव के परिणामस्वरूप व्यवहार परिवर्तन द्वारा प्रदर्शित होता है।"
- **जे.पी. गिलफोर्ड** के अनुसार, "व्यवहार के कारण व्यवहार परिवर्तन अधिगम है।"
- **कोलविन** के अनुसार, "पूर्व निर्मित व्यवहार में अनुभव द्वारा परिवर्तन ही अधिगम है।"

अधिगम की प्रकृति *(Nature of Learning)*

विभिन्न मनोवैज्ञानिक चिंतकों द्वारा प्रस्तुत की गई अधिगम की परिभाषाओं के आधार पर अधिगम की प्रकृति को निम्नलिखित रूप से स्पष्ट किया जा सकता है–

- सीखने में मानव जीवन के जन्म से लेकर मृत्यु तक उन सभी अनुभवों और प्रशिक्षणों का समावेशन होता है जिनके द्वारा व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन लाने की भूमिका निभाई जाती है।
- सीखना एक प्रक्रिया है, प्रक्रिया का परिणाम नहीं है।
- अधिगम के द्वारा मानव को अनुकूलन और समायोजन करने के कार्य में सहायता मिलती है।
- अधिगम के माध्यम से व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन लाने की भूमिका निभाई जाती है। उसका तात्पर्य यह नहीं है कि व्यक्ति इन परिवर्तनों के द्वारा हमेशा विकास के सही रास्ते पर ही चलता है। मानव अच्छा और बुरा दोनों प्रकार के व्यवहारों को सीखने के द्वारा अर्जित कर सकता है और इस प्रकार अपने व्यक्तित्व को शीर्ष या गर्त किसी भी रास्ते पर ला सकता है।
- अधिगम के सभी प्रकार प्रयोजनपूर्ण एवं उद्देश्ययुक्त होते हैं। जहाँ कोई प्रयोजन नहीं होता वहाँ अधिगम की कोई बात नहीं होती।
- व्यवहार के सभी क्षेत्रों, यथा- ज्ञानात्मक, क्रियात्मक एवं भावात्मक में अधिगम के द्वारा आवश्यक परिवर्तन लाए जा सकते हैं।
- अधिगम एक सार्वभौमिक और सतत प्रक्रिया है। सभी प्राणी आजीवन सीखते रहते हैं। अधिगम किसी एक जाति, वर्ण, धर्म, आयु और लिंग की विरासत नहीं है। सभी प्राणी सीखने की क्षमता रखते हैं तथा सीखने की यह प्रक्रिया जीवन भर सतत रूप से चलती रहती है।
- अधिगम के अंतर्गत हम उन व्यवहारजन्य परिवर्तनों को शामिल नहीं कर सकते जो परिपक्वन, थकान, बीमारी अथवा मादक पदार्थों के सेवन के परिणामस्वरूप प्राप्त होते हैं।
- अधिगम यह बताता है कि व्यवहार में होने वाले परिवर्तनों को यद्यपि हम सीखने की प्रक्रिया से जोड़ते है, परंतु व्यवहार में होने वाले कुछ परिवर्तन ऐसे भी हैं जिन्हें अधिगम नहीं कहा जा सकता है। व्यवहार में वे परिवर्तन अनुभव और प्रशिक्षण के अतिरिक्त किन्हीं अन्य कारकों अथवा प्रभावों के कारण भी उत्पन्न होते हैं।
- अधिगम एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें अनुभव और प्रशिक्षण के परिणामस्वरूप किसी सीखने वाले के व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन लाए जा सकते हैं।

अधिगम के परिणाम *(Results of Learning)*

अधिगम के परिणामों को निम्नलिखित रूप में व्यक्त किया जा सकता है–

- **व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन:** अधिगम के परिणामस्वरूप व्यक्ति के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाए जा सकते हैं। इसका कारण है कि यह व्यवहार परिवर्तन की प्रक्रिया है। इसके माध्यम से बालकों के संपूर्ण व्यवहार- ज्ञानात्मक, क्रियात्मक तथा भावनात्मक में अपेक्षित परिवर्तन लाने की भूमिका अच्छी तरह निभाई जा सकती है।
- **शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति:** अधिगम के द्वारा शिक्षण अधिगम के उद्देश्यों को आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। अधिगम के माध्यम से विद्यार्थी निर्धारित शिक्षण-अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये समुचित प्रयास कर सकता है। इस प्रकार के उद्देश्यों की पूर्ति

द्वारा विद्यार्थियों में अपेक्षित ज्ञान और समझ, सूझबूझ, कुशलताएँ, रुचि तथा दृष्टिकोण आदि को विकसित किया जा सकता है।

- **विद्यार्थियों के विकास एवं वृद्धि में सहायक:** अधिगम के द्वारा विद्यार्थी को उचित वृद्धि एवं विकास में सहायता पहुँचती है। वृद्धि एवं विकास के सभी आयामों शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक, संवेगात्मक, सौन्दर्यात्मक तथा भाषा संबंधी विकास आदि में सीखने की प्रक्रिया प्रत्येक कदम पर मदद पहुँचाती है।
- **व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में सहायक:** अधिगम व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में सहायक होता है। बालक के व्यक्तित्व का विकास शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य होता है और अधिगम की प्रक्रिया सभी प्रकार से इस कार्य में अच्छी तरह सहायता पहुँचाती है।
- **समायोजन में सहायक:** अधिगम की प्रक्रिया के फलस्वरूप सीखने वाले को अपने तथा वातावरण से उचित समायोजन के कार्य में पर्याप्त सहायता मिलती है।
- **जीवन के लक्ष्यों की पूर्ति में सहायक:** अधिगम के द्वारा जीवन के लक्ष्यों की पूर्ति में मदद मिलती है। अधिगम की प्रक्रिया द्वारा प्राप्त परिणाम व्यक्ति को अपने आदर्शों एवं लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करता है।

इस प्रकार अधिगम सीखने की प्रक्रिया के फलस्वरूप व्यक्ति को अपने जीवन में सफलता और समायोजन के लिये किये जाने वाले सभी प्रयत्नों में हर वक्त सहायता पहुँचाने का कार्य करता है।

अधिगम के प्रकार (Types of Learning)

बालकों के व्यवहार में होने वाले परिवर्तनों के आधार पर मनोवैज्ञानिकों द्वारा अधिगम को मुख्य रूप से तीन भागों में विभाजित किया गया है–

1. **ज्ञानात्मक अधिगम:** ऐसा अधिगम जिसके माध्यम से बालक के ज्ञानात्मक व्यवहार के क्षेत्र में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन लाया जाता है उसे ज्ञानात्मक अधिगम कहा जाता है। ज्ञानात्मक अधिगम की मदद से बालक नवीन ज्ञान प्राप्त करता है तथा पुराने ज्ञान में वृद्धि करता है, साथ ही आवश्यक संशोधन को प्राथमिकता देता है। व्यक्तियों, वस्तुओं, स्थानों, प्रक्रियाओं में पहचान करता है। उनको वर्गीकृत करता है, उनको नाम प्रदान करता है और उनमें भेद करता है। इसके अतिरिक्त सभी प्रकार की सूझ-बूझ, समझ, चिंतन-मनन, तर्क, निरीक्षण, समस्या-समाधान संबंधी संज्ञानात्मक योग्यताओं या क्षमताओं के विकास का आधार इसी प्रकार का अधिगम होता है।
2. **मनोगामिक या क्रियात्मक अधिगम:** ऐसा अधिगम जिसके माध्यम से बालक के क्रियात्मक या मनोगामिक व्यवहार क्षेत्र में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन लाया जाता है, मनोगामिक या क्रियात्मक अधिगम कहलाता है। मनुष्यों द्वारा कर्मेन्द्रियों के माध्यम से किये गए प्रत्येक कार्य के कुशल संपादन के पीछे मनोगामिक अधिगम का ही हाथ होता है। इस दृष्टि से सभी प्रकार के मनोगामिक और क्रियात्मक कौशलों (Psychomotor and Motor Skills) का अर्जन इस प्रकार के अधिगम में शामिल किया जा सकता है।
3. **भावात्मक अधिगम:** ऐसा अधिगम जिसके माध्यम से बालक के भावात्मक व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन लाए जाते हैं, उसे भावात्मक अधिगम की श्रेणी में रखा जाता है। इस प्रकार के अधिगम की सहायता से बालक को विभिन्न प्रकार की अच्छी व बुरी आदतों को ग्रहण करने में विभिन्न प्रकार की रुचियों, अभिरुचियों, अभिवृत्तियों तथा मूल्यों के विकास में, विभिन्न प्रकार के संवेगों के विकास में तथा विभिन्न प्रकार के सामाजिक एवं वैयक्तिक शील गुणों के विकास में मदद मिलती है।

अधिगम के निर्धारक (Determinants of Learning)

अधिगम की प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले महत्त्वपूर्ण करकों को मुख्य रूप से दो भागों में बाँटकर देखा जा सकता है–

1. **आंतरिक निर्धारक:** अधिगमकर्त्ता से संबंधित आंतरिक कारक या निर्धारकों में जिन महत्त्वपूर्ण निर्धारकों को स्थान दिया जाता है, वे हैं–
   - अधिगमकर्त्ता का मानसिक तथा शारीरिक स्वास्थ्य।
   - अधिगमकर्त्ता की मूलभूत क्षमता और योग्यता।
   - अधिगमकर्त्ता की महत्त्वाकांक्षा और उपलब्धि अभिप्रेरणा का स्तर।
   - अधिगमकर्त्ता के जीवन का उद्देश्य।
   - अधिगमकर्त्ता के परिपक्वन का स्तर।
   - अधिगमकर्त्ता की सीखने के प्रति तत्परता, निश्चय तथा इच्छाशक्ति।
2. **बाह्य निर्धारक:** अधिगम परिस्थितियों से जुड़े हुए बाह्य कारक या निर्धारक में मुख्य रूप से जिन कारकों या निर्धारकों का उल्लेख किया जा सकता है, वे हैं–

- सीखे जाने वाले कार्य या अनुभवों की प्रकृति, सीखने की विधियाँ तथा तकनीक।
- प्रशिक्षक की योग्यता, व्यक्तित्व व्यवहार एवं सीखने के तरीके।
- अधिगम के समय उपलब्ध परिस्थितियाँ एवं वातावरण तथा अधिगम के द्वारा प्राप्त होने वाले परिणाम।

आंतरिक एवं बाह्य निर्धारकों का अधिगम प्रक्रिया को दिशा और गति प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। निर्धारक के रूप में ये दोनों कारक किस रूप में अधिगम को प्रभावित करते हैं इसको निम्नलिखित बिंदुओं से समझा जा सकता है–

परिपक्वन

यह एक नैसर्गिक प्रक्रिया है, जिसके लिये बाह्य उद्दीपनों की आवश्यकता नहीं होती। यह मानव की अंतर्निहित शक्तियों का विकास है।

बिग्गी एवं हंट ने परिपक्वन को परिभाषित करते हुए कहा है, "परिपक्वन एक विकासात्मक प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत एक व्यक्ति समय के साथ-साथ उन सभी विशेषताओं और गुणों को ग्रहण करता है जिनकी नींव उसके गर्भ में आने के समय ही उसकी कोशिकाओं में रखी जा चुकी है।"

इस तरह हम कह सकते हैं कि परिपक्वन का संबंध उन व्यवहारगत परिवर्तनों से होता है जो कि नैसर्गिक और सामान्य वृद्धि से जुड़े हुए होते हैं।

अभिप्रेरणा

अभिप्रेरणा व्यक्ति की वह अवस्था एवं तत्परता है, जो किसी व्यवहार को करने के लिये एवं किन्हीं उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिये निर्देशित करती है। यह व्यक्ति के अंदर होने वाला शक्ति परिवर्तन है जो भावात्मक जाग्रति तथा पूर्वानुमान उद्देश्य प्रतिक्रियाओं द्वारा वर्णित होता है। सामान्य अर्थों में कहा जाए तो अभिप्रेरणा से तात्पर्य व्यक्ति की किसी समय-विशेष में उस अवस्था से है जो उसको किसी कार्य या व्यवहार-विशेष में संलग्न रहने के लिये प्रेरित या संचालित करती है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो यह सीखने की क्रियाओं में विद्यार्थी की रुचि को उत्पन्न और उत्तेजित करने के साथ संबंधित है। अभिप्रेरणा के कारण ही कोई भी विद्यार्थी शिक्षा में रुचि लेता है, कोई भी किसान अपने खेतों में रुचि लेता है, कोई भी वकील अपनी वकालत में रुचि लेता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि यह एक ऐसी शक्ति है जो मनुष्य को काम करने के लिये प्रेरित करती है।

तत्परता

जब कोई व्यक्ति किसी कार्य को करने के लिये तत्पर होता है तो इसका अर्थ है कि उसकी कार्य करने में गहरी रुचि है। वह व्यक्ति इस कार्य को पूरा करने के लिये तन-मन-धन से लग जाता है। इस प्रकार किसी भी अधिगम प्रक्रिया में जुट जाने संबंधी तैयारी की अवस्था को अधिगमकर्त्ता की तत्परता का नाम दिया जाता है।

तत्परता का अधिगम से संबंध

तत्परता का अधिगम से संबंध को दर्शाने के लिये प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक थॉर्नडाइक ने तत्परता के नियम (Laws of Readiness) का सिद्धांत प्रस्तुत किया। इस सिद्धांत के आधार पर उन्होंने स्पष्ट किया कि अधिगमकर्त्ता की अधिगम प्रक्रिया में सफलता इस बात पर बहुत कुछ निर्भर करती है कि वह इस प्रक्रिया में सक्रिय भाग लेने हेतु किस सीमा तक तत्पर है।

इस नियम के अनुसार, "जब कोई संवहन इकाई संवहन के लिये तैयार हो तो उसे संवहन में संतोष मिलता है। परंतु जब कोई संवहन इकाई संवहन के लिये तैयार न हो तब उसके लिये संवहन कष्टप्रद होता है। जब कोई संवहन इकाई संवहन के लिये तैयार हो तो उसे ऐसा न करने देना भी कष्टप्रद होता है।"

अतिमहत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी तथ्य

- Education शब्द लैटिन भाषा के Educatum से निकला हुआ है जिसका अर्थ होता है– 'to bring up together'।
- शिक्षा मनोविज्ञान शैक्षिक परिस्थितियों में व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन करता है।
- शिक्षा मनोविज्ञान को सर्वप्रथम स्किनर द्वारा वर्ष 1958 में परिभाषित किया गया था।
- थॉर्नडाइक के अनुसार शिक्षा मनोविज्ञान के अंतर्गत शिक्षा से संबंधित संपूर्ण व्यवहार और व्यक्तित्व आ जाता है।
- जहाँ शिक्षा का स्वरूप संश्लेषणात्मक होता है, वहीं शिक्षा मनोविज्ञान का स्वरूप विश्लेषणात्मक होता है।
- शिक्षा मनोविज्ञान का उद्देश्य शिक्षकों को अपने शैक्षणिक कार्यों में सहायता प्रदान करना होता है।
- शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षार्थियों में बाल विकास की विभिन्न अवस्थाओं की विशेषता को समझने में मदद प्रदान करता है।
- शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षार्थियों की वैयक्तिक विभिन्नता को समझने में मदद प्रदान करता है।
- शिक्षा मनोविज्ञान के अनुसार बच्चे अपने ज्ञान का सृजन स्वयं करते हैं।
- शिक्षक का आदर्श रूप में व्यवहार करना बच्चों में नैतिकता की स्थापना के लिये सर्वोत्तम मार्ग है।
- शिक्षा का अतिमहत्त्वपूर्ण उद्देश्य है बच्चों का सर्वांगीण विकास करना।
- बाल मनोविज्ञान के अनुसार प्रत्येक बच्चा विशिष्ट होता है।
- स्किनर महोदय ने कहा था, "मनोविज्ञान शिक्षा का आधारभूत विज्ञान है।"
- शिक्षा मनोविज्ञान की उत्पत्ति का वर्ष 1900 ई. को माना जाता है।
- व्यावहारिक जीवन के लिये विद्यार्थियों को तैयार करना शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिये।
- स्वामी विवेकानंद के अनुसार, "शिक्षा मनुष्य में अंतर्निहित क्षमता का परिपूर्णता में विकास करती है।"
- विवेचनात्मक शिक्षाशास्त्र का दृढ़ विश्वास है कि शिक्षार्थियों के अनुभव और प्रत्यक्षण (Perception) महत्त्वपूर्ण होते हैं।
- अंतर्दर्शन विधि शिक्षा मनोविज्ञान की सर्वाधिक व्यक्तिनिष्ठ विधि है।
- शिक्षा मनोविज्ञान छात्र केंद्रित शिक्षा पर अधिक बल देता है।
- गुथरी महोदय ने बाल अधिगम विकास में पुरस्कार को महत्त्व नहीं दिया।
- गेस्टाल्ट सिद्धांतवादी ने 'सीखने के अंतर्दृष्टि सिद्धांत' को बढ़ावा दिया।
- अधिगम का व्यावहारिक सिद्धांत संबद्ध प्रतिक्रिया का सिद्धांत है।
- 'सीखने की तत्परता' सीखने के सातत्य में शिक्षार्थियों के वर्तमान संज्ञानात्मक स्तर की ओर संकेत करती है।
- परिपक्वता एवं आयु अधिगम को प्रभावित करने वाले व्यक्तिगत कारक हैं।
- प्रवीणता-अभिमुखी लक्ष्यों पर ज़ोर देकर अधिगम की अभिप्रेरणा को कायम रखा जा सकता है।
- 'संतुलित उत्तेजना, कोई भय नहीं' अधिगम की सर्वोत्तम अवस्था है।
- बच्चों के अधिगम में शारीरिक स्वास्थ्य और सांवेगिक अवस्था की एक महत्त्वपूर्ण भूमिका है।
- कक्षा में प्रभावशाली अधिगम के लिये सहयोगिक वातावरण की रचना करनी चाहिये बजाय प्रतिस्पर्द्धिक वातावरण के।

- गार्डनर मरफी के अनुसार "सीखने या अधिगम शब्द में वातावरण संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये व्यवहार में होने वाले सभी प्रकार के परिवर्तन सम्मिलित हैं।"
- स्किनर के अनुसार, "अधिगम व्यवहार के उत्तरोत्तर सामंजस्य की प्रक्रिया है।"
- सीखना एक प्रक्रिया है, प्रक्रिया का परिणाम नहीं है।
- अधिगम एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें अनुभव और प्रशिक्षण के परिणामस्वरूप किसी सीखने वाले के व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थायी लाए जा सकते हैं।
- ज्ञानात्मक अधिगम, मनोगामिक या क्रियात्मक अधिगम तथा भावात्मक अधिगम, अधिगम के तीन मुख्य प्रकार हैं।
- अधिगम की प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले महत्त्वपूर्ण कारकों को आंतरिक एवं बाह्य निर्धारकों में बाँटा जाता है।
- परिपक्वन, अभिप्रेरणा तथा तत्परता अधिगम को प्रभावित करने वाले मुख्य कारक होते हैं।
- तत्परता के नियम (Laws of Readiness) का प्रतिपादन अमेरिकी मनोवैज्ञानिक थॉर्नडाइक ने किया था।

अभ्यास प्रश्न

1. विविध पृष्ठभूमियों के अधिगमकर्त्ताओं को संबोधित करने हेतु, एक अध्यापक को–
   (a) सभी के लिये मानकीकृत आकलनों का इस्तेमाल करना चाहिये।
   (b) ऐसे कथनों का इस्तेमाल करना चाहिये जो नकारात्मक रूढ़िबद्ध धारणाओं को मज़बूत करें।
   (c) विविधता संबंधी मुद्दों पर बातचीत टालनी चाहिये।
   (d) विविध विन्यासों के उदाहरण लेने चाहिये।
   CTET, 2021

2. अधिगम कठिनाइयों से जूझते छात्रों की ज़रूरतों को संबोधित करने के लिये एक अध्यापक को क्या नहीं करना चाहिये?
   (a) व्यक्तिगत शैक्षिक योजना बनाना
   (b) शिक्षाशास्त्र और आकलन की जटिल संरचनाओं का प्रयोग
   (c) दृश्य-श्रव्य सामग्रियों का इस्तेमाल
   (d) संरचनात्मक शिक्षाशास्त्रीय उपागमों का इस्तेमाल
   CTET, 2021

3. निम्नलिखित में से अध्यापन-अधिगम का सबसे प्रभावशाली माध्यम कौन-सा है?
   (a) बिना विश्लेषण के अवलोकन करना
   (b) अनुकरण/नकल और दोहराना
   (c) विषयवस्तु को यंत्रवत याद करना
   (d) संकल्पनाओं के बीच संबंध खोजना **CTET, 2021**

4. अधिगम की अभिप्रेरणा को किस प्रकार कायम रखा जा सकता है?
   (a) बच्चों को बहुत आसान क्रियाकलाप देकर
   (b) यंत्रवत याद करने पर ज़ोर देकर
   (c) बच्चे को दंड देकर
   (d) प्रवीणता-अभिमुखी लक्ष्यों पर ज़ोर देकर **CTET, 2021**

5. अधिगम का संरचनात्मक विचार यह सुझाव देता है कि ज्ञान की संरचना में
   (a) बच्चे सक्रिय भूमिका निभाते हैं।
   (b) बच्चे पूर्ण रूप से पाठ्यपुस्तकों पर निर्भर रहते हैं।
   (c) बच्चों की कोई भूमिका नहीं होती।
   (d) बच्चे पूर्ण रूप से वयस्कों पर निर्भर रहते हैं।
   CTET, 2021

6. अधिगम के लिये निम्नलिखित में से कौन-सी धारणा उपयुक्त है?
   (a) प्रयासों से कोई फर्क नहीं पड़ता।
   (b) असफलता अनियंत्रित है।
   (c) योग्यता सुधार्य है।
   (d) योग्यता अटल है। **CTET, 2021**

7. अधिगम की सर्वोत्तम अवस्था कौन-सी है?
   (a) संतुलित उत्तेजना, कोई भय नहीं
   (b) कोई उत्तेजना नहीं, कोई भय नहीं
   (c) उच्च उत्तेजना, उच्च भय
   (d) निम्न उत्तेजना, उच्च भय **CTET, 2021**

8. निम्नलिखित में से कौन-सा उदाहरण विद्यार्थियों को अधिगम के लिये अभिप्रेरित करने की प्रभावशाली पद्धति है?
   (a) वे कार्य देना जो कि बहुत सरल हों।
   (b) प्रतियोगिताओं के लिये बहुत से अवसर उत्पन्न करना।
   (c) पाठ उपलब्ध कराना, विशेषकर जब विद्यार्थी कोई नया कौशल सीख रहे हों।
   (d) सीखने से ज़्यादा कार्य पूर्ण करने पर बल देना।
   CTET, 2021

9. अधिगम, एक.....और.....प्रक्रिया है।
   (a) सरल, व्यक्तिगत (b) जटिल, निष्क्रिय
   (c) जटिल, सक्रिय (d) सरल, रैखिक
   CTET, 2021

10. अपनी कक्षा में अर्थपूर्ण अधिगम को सुसाध्य बनाने के लिये, अध्यापिका को अपनी कक्षा में सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, भाषायी विविधता को.....चाहिये।
    (a) समझना (b) अनदेखा करना
    (c) टालना (d) अपेक्षित करना
    CTET, 2021

11. निम्नलिखित में से कौन-सी शिक्षा मनोविज्ञान की सर्वाधिक व्यक्तिनिष्ठ विधि है?
(a) अंतर्दर्शन (b) बहिर्दर्शन
(c) अवलोकन (d) प्रयोगीकरण
UPTET, 2017

12. शिक्षा मनोविज्ञान की विषयवस्तु निम्नलिखित में से किन मुख्य कारकों के ओत-प्रोत घूमती है?
(a) शिक्षार्थी एवं अधिगम अनुभव
(b) शिक्षक एवं अधिगम प्रक्रिया
(c) अधिगम परिस्थितियाँ
(d) सभी विकल्प सही हैं **HTET, 2017**

13. शिक्षा मनोविज्ञान अधिक बल देता है–
(a) शिक्षक केंद्रित शिक्षा पर (b) छात्र केंद्रित शिक्षा पर
(c) पाठ्यक्रम केंद्रित शिक्षा पर (d) विद्यालय केंद्रित शिक्षा पर
HTET, 2017

14. निम्नलिखित में से कौन-सा कारक अधिगम को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है?
(a) अनुत्तीर्ण हो जाने का भय
(b) सहपाठियों से प्रतियोगिता
(c) अर्थपूर्ण संबंध
(d) माता-पिता की ओर से दबाव **CTET, 2014**

15. किस अधिगम मनोवैज्ञानिक ने बाल अधिगम विकास में पुरस्कार को महत्त्व नहीं दिया है?
(a) थॉर्नडाइक (b) पावलॉव
(c) स्किनर (d) गुथरी **UPTET, 2013**

16. 'सीखने की तत्परता' _____ की ओर संकेत करती है।
(a) थॉर्नडाइक का तत्परता का नियम
(b) शिक्षार्थियों का सामान्य स्तर
(c) सीखने के सातत्य में शिक्षार्थियों का वर्तमान संज्ञानात्मक स्तर
(d) सीखने के कार्य की प्रकृति को संतुष्ट करने **CTET, 2013**

17. शिक्षा मनोविज्ञान की दृष्टि से निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सत्य है?
(a) बच्चे अपने ज्ञान का सृजन स्वयं करते हैं।
(b) विद्यालय में आने से पहले बच्चों को कोई पूर्व ज्ञान नहीं होता है।
(c) अधिगम प्रक्रिया में बच्चों को कष्ट होता है।
(d) बच्चे यथावत वही सीखते हैं, जो उन्हें पढ़ाया जाता है।
UTET, 2011

18. शिक्षा का अति महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है-
(a) आजीविका कमाना
(b) बच्चे का सर्वांगीण विकास
(c) पढ़ना एवं लिखना सीखना
(d) बौद्धिक विकास **UTET, 2011**

19. "मनोविज्ञान शिक्षा का आधारभूत विज्ञान है", यह किसने कहा है?
(a) बी.एन. झा (b) स्किनर
(c) डेविस (d) वुडवर्थ **BTET, 2011**

20. आधुनिक मनोविज्ञान का अर्थ है–
(a) मन का अध्ययन (b) आत्मा का अध्ययन
(c) शरीर का अध्ययन (d) व्यवहार का अध्ययन
BTET, 2011

21. शिक्षा मनोविज्ञान की उत्पत्ति का वर्ष कौन-सा माना जाता है?
(a) 1947 (b) 1920
(c) 1940 (d) 1900 **BTET, 2011**

22. शिक्षा मनोविज्ञान का संबंध किससे नहीं है?
(a) मानव व्यवहार का अध्ययन
(b) मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन
(c) सीखने के तरीकों का अध्ययन
(d) संचार माध्यमों को अध्ययन **BTET, 2011**

23. शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिये-
(a) विद्यार्थियों में व्यावसायिक कुशलता का विकास करना
(b) विद्यार्थियों में सामाजिक जागरूकता तैयार करना
(c) विद्यार्थियों को परीक्षा के लिये तैयार करना
(d) व्यावहारिक जीवन के लिये विद्यार्थियों को तैयार करना
UPTET, 2011

24. "शिक्षा मनुष्य में अंतर्निहित क्षमता का परिपूर्णता में विकास करती है।" यह कथन किसका है?
(a) स्वामी विवेकानंद (b) स्किनर
(c) पेस्टॉलॉजी (d) रवींद्रनाथ टैगोर
CG TET, 2011

25. "एक बच्चा अतीत की समान परिस्थिति में की गई अनुक्रियाओं के आधार पर नई स्थिति के प्रति अनुक्रिया करता है।" यह कथन किससे संबंधित है?
(a) सीखने का 'सादृश्यता-नियम'
(b) सीखने का 'प्रभाव-नियम'
(c) सीखने की प्रक्रिया का 'अभिवृत्ति-नियम'
(d) सीखने का 'तत्परता-नियम' **CTET, 2011**

उत्तरमाला

1. (d)	2. (b)	3. (d)	4. (d)	5. (a)	6. (c)	7. (a)	8. (c)	9. (c)	10. (a)
11. (a)	12. (d)	13. (b)	14. (c)	15. (d)	16. (c)	17. (a)	18. (b)	19. (b)	20. (d)
21. (d)	22. (d)	23. (d)	24. (a)	25. (a)					

2 विकास की अवधारणा एवं इसका अधिगम से संबंध (Concept of Development and its Relationship with Learning)

विकास की अवधारणा (Concept of Development)

विकास का अर्थ

- विकास एक ऐसी सार्वभौमिक प्रक्रिया है जो व्यक्ति के जन्म लेने के साथ ही प्रारंभ हो जाती है तथा आजीवन अनवरत रूप से जारी रहती है।
- मनुष्य के जीवन में आए विभिन्न प्रकार के परिवर्तनों को सामान्य भाषा में विकास के नाम से जाना जाता है। इस प्रक्रिया में शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा भावनात्मक आदि पहलू सम्मिलित होते हैं।
- कुछ मनोवैज्ञानिकों द्वारा विकास को 'क्रमिक परिवर्तनों की शृंखला' का नाम भी दिया गया है। इसके फलस्वरूप व्यक्ति में नई विशेषताओं का उदय होता है, साथ ही पुरातन विशेषताएँ विलोपित हो जाती हैं।
- मनुष्य अपने जीवन की प्रौढ़ावस्था में पहुँचकर स्वयं को जिन गुणों से संपन्न पाता है वे सभी विकास की प्रक्रिया के ही परिणाम होते हैं।
- विकास एक ऐसी आंतरिक शक्ति है जो किसी प्राणी या समाज को उन्नति की ओर अग्रसर करती है। यह उस स्थिति का नाम है जिससे प्राणी में कार्यक्षमता बढ़ती है।

विकास की परिभाषा

विश्व के विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने विकास को निम्नलिखित रूप में परिभाषित किया है–

- **हरलॉक के अनुसार,** "विकास केवल अभिवृद्धि तक ही सीमित नहीं है वरन् वह 'व्यवस्थित' तथा 'समनुगत' परिवर्तन है, जिसमें कि प्रौढ़ावस्था के लक्ष्य की ओर परिवर्तनों का प्रगतिशील क्रम निहित रहता है, जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति में नवीन विशेषताएँ व योग्यताएँ प्रकट होती हैं।"
- **मुनरो के अनुसार,** "परिवर्तन-शृंखला की वह अवस्था जिसमें बच्चा भ्रूणावस्था से लेकर प्रौढ़ावस्था तक गुज़रता है, विकास कहते हैं।"
- **सोरेन्सन के अनुसार,** "विकास का अर्थ परिपक्वता और कार्यपरक सुधार की व्यवस्था से है जिसका संबंध गुणात्मक एवं परिमाणात्मक परिवर्तनों से है।"
- **स्किनर के अनुसार**, "विकास जीव और उसके वातावरण की अंत:क्रिया का प्रतिफल है।"
- **इरा. जी. गोर्डन के अनुसार,** "विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्ति के जन्म से लेकर उस समय तक चलती रहती है जब तक कि वह पूर्ण विकास को प्राप्त नहीं कर लेता है।"
- **लालबार्बा के अनुसार,** "विकास का अर्थ परिपक्वता से संबंधित परिवर्तनों से है जो मानव के जीवन में समय के साथ घटित होते रहते हैं।

विकास की विभिन्न अवस्थाएँ

विकास की अवस्थाओं को विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न प्रकार से वर्गीकृत किया गया है। इन अवस्थाओं का वर्णन निम्नलिखित प्रकार से है–

- **रॉस के अनुसार** विकास की मुख्यत: चार अवस्थाएँ होती हैं जो निम्नलिखित प्रकार से हैं–
  - (i) शैशवावस्था ⟶ 1-3 वर्ष
  - (ii) पूर्व-बाल्यावस्था ⟶ 3-6 वर्ष
  - (iii) उत्तर-बाल्यावस्था ⟶ 6-12 वर्ष
  - (iv) किशोरावस्था ⟶ 12-18 वर्ष
- **जोन्स के अनुसार** विकास की मुख्यत: तीन अवस्थाएँ होती हैं जो निम्नलिखित प्रकार से हैं–
  - (i) शैशवावस्था ⟶ जन्म से 5 वर्ष तक
  - (ii) बाल्यावस्था ⟶ 5 से 12 वर्ष तक
  - (iii) किशोरावस्था ⟶ 12 से 18 वर्ष तक
- **शैले के अनुसार** विकास की मुख्यत: तीन अवस्थाएँ होती हैं जो निम्नलिखित प्रकार से हैं–
  - (i) शैशवावस्था ⟶ 0 से 5 वर्ष तक
  - (ii) बाल्यावस्था ⟶ 6 से 12 वर्ष तक
  - (iii) किशोरावस्था ⟶ 13 से 18 वर्ष तक
- **कॉलसनिक के अनुसार** विकास की मुख्यत: सात अवस्थाएँ होती हैं जो निम्नलिखित प्रकार से हैं–
  - (i) भ्रूणावस्था ⟶ जन्म से पहले की अवस्था
  - (ii) नव-शैशवावस्था ⟶ जन्म से 4 सप्ताह तक
  - (iii) आरंभिक अवस्था ⟶ 5 माह से 15 माह तक
  - (iv) उत्तर-शैशवास्था ⟶ 15 माह से 30 माह तक
  - (v) पूर्व-बाल्यावस्था ⟶ 2 से 5 वर्ष तक
  - (vi) मध्य-बाल्यावस्था ⟶ 6 से 9 वर्ष तक
  - (vii) उत्तर-बाल्यावस्था ⟶ 9 से 12 वर्ष तक
- **हरलॉक के अनुसार** विकास की मुख्यत: ग्यारह अवस्थाएँ होती हैं जो निम्नलिखित प्रकार से हैं–
  - (i) गर्भावस्था ⟶ गर्भाधान से जन्म तक
  - (ii) शैशवावस्था ⟶ जन्म से दो सप्ताह तक
  - (iii) बचपनावस्था ⟶ तीसरे सप्ताह से दो वर्ष तक
  - (iv) पूर्व-बाल्यावस्था ⟶ तीसरे वर्ष से छ: वर्ष तक
  - (v) उत्तर-बाल्यावस्था ⟶ सातवें वर्ष से बारह वर्ष तक

(vi) वय: संधि → बारह वर्ष से चौदह वर्ष तक
(vii) पूर्व-किशोरावस्था → तेरह से सत्रह वर्ष तक
(viii) उत्तर-किशोरावस्था → अठारह से इक्कीस वर्ष तक
(ix) प्रौढ़ावस्था → इक्कीस से चालीस वर्ष तक
(x) मध्यावस्था → इकतालीस से साठ वर्ष तक
(xi) वृद्धावस्था → साठ वर्ष के बाद

सामान्य तौर पर विकास की विभिन्न अवस्थाओं को निम्नलिखित रूप में व्यक्त किया जा सकता है–

गर्भकालीन अवस्था

इस अवस्था के अंतर्गत गर्भाधान से लेकर जन्म के समय तक की अवधि को शामिल किया जाता है। इस अवस्था में भ्रूण के विकास की गति अन्य अवस्थाओं से तीव्र होती है। इसमें होने वाले परिवर्तन मुख्यत: शारीरिक होते हैं।

शैशवावस्था

इस अवस्था में जन्म से लेकर 15 दिन तक की अवधि को शामिल किया जाता है। इसे 'समायोजन काल' भी कहा जाता है। इसका कारण है कि इस काल में माता-पिता बालक की उचित देखभाल के माध्यम से नए वातावरण के साथ समायोजन स्थापित करते हैं।

बचपनावस्था

इस अवस्था में दो सप्ताह से लेकर दो वर्ष तक की अवधि को शामिल किया जाता है। इसे निर्भरता का काल भी कहा जाता है। यह वही अवस्था है जिसमें संवेगात्मक विकास के अनुसार बालक में प्रसन्नता, क्रोध, हर्ष, घृणा आदि का विकास हो जाता है। यह अवस्था संवेग-प्रधान की मानी जाती है।

बाल्यावस्था

इस अवस्था को दो भागों, पूर्व-बाल्यावस्था (2 से 6 वर्ष) तथा उत्तर-बाल्यावस्था (7 से 12 वर्ष) में विभाजित किया जाता है। यह अवस्था बालक के शारीरिक एवं मानसिक विकास की दृष्टि से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होती है। इसमें बालकों में जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास होता है। वह अपने माता-पिता और शिक्षकों से विभिन्न प्रकार के सवाल करता है। साथ ही इस अवस्था में बालकों में 'समूह-प्रवृत्ति' का विकास होता है। इस प्रवृत्ति के कारण बालक अपने साथियों के साथ रहना तथा खेलना पसंद करते हैं।

वय:संधि

बालक के विकास के क्रम में वय:संधि बाल्यावस्था और किशोरावस्था को मिलाने में सेतु का काम करती है। शारीरिक विकास की दृष्टि से यह अवस्था महत्त्वपूर्ण होती है। इसमें यौन अंगों की परिपक्वता का विकास होता है। बालिकाओं में यह अवस्था 11 से 13 वर्ष के मध्य तथा बालकों में 12 से 13 वर्ष के बीच होती है।

किशोरावस्था

यह अवस्था 13 वर्ष से प्रारंभ होकर 21 वर्ष तक चलती है। इसे मुख्यत: दो भागों, पूर्व-किशोरावस्था (13-16 वर्ष) तथा उत्तर किशोरावस्था (17-21 वर्ष) में विभाजित किया जाता है। बालकों में समस्या की अधिकता, कल्पना की अधिकता, सामाजिक अस्थिरता आदि इस अवस्था की पहचान है।

प्रौढ़ावस्था

इस अवस्था में 21 से 40 वर्ष की अवधि को शामिल किया जाता है। इसमें व्यक्ति अपने लक्ष्यों को पाने की कोशिश में लगा रहता है। इसी अवस्था में व्यक्ति पारिवारिक जीवन में प्रवेश करता है।

मध्यावस्था

इसमें 41 से 60 वर्ष की आयु को शामिल किया जाता है। इस अवस्था में व्यक्ति के लिये सामाजिक संबंधों के प्रति समर्पित होता है।

वृद्धावस्था

वृद्धावस्था जीवन की अंतिम अवस्था होती है। यह 60 वर्ष से प्रारंभ होकर जीवन के अंत (मृत्यु) तक चलती है। इसे ह्रास की अवस्था माना जाता है।

विकास को प्रभावित करने वाले कारक (Factors Affecting Development)

विकास को प्रभावित करने वाले कारकों को मुख्यत: दो भागों आंतरिक एवं बाह्य में बाँटकर देखा जाता है। इनका विस्तृत वर्णन निम्न निम्नलिखित है–

आंतरिक कारक

वे सभी कारक जो व्यक्ति के अंदर समाहित होते है, उन्हें आंतरिक कारक की श्रेणी में रखा जाता है। इसके अंतर्गत निम्नलिखित कारकों को शामिल किया जाता है–

- **वंशानुगत कारक:** वंशानुगत कारक गर्भाधान के समय ही अपना प्रभाव डालना प्रारंभ कर देते हैं। इसके परिणामस्वरूप बालक को वृद्धि एवं विकास के लिये एक सुनिश्चित आधार प्राप्त होता है। वंशानुगत कारक बालक की त्वचा का रंग, आँखों का रंग, बालों की प्रकृति और रंग, स्नायु संस्थान, मस्तिष्क, शारीरिक गठन, भार, ऊँचाई, नलिकाविहीन ग्रंथियों की कार्यप्रणाली आदि को प्रभावित करते हैं।
- **जैविक एवं संरचनात्मक कारक:** वंशक्रम के कारण जो भी गुण अथवा अवगुण बालक को जन्म से प्राप्त होते हैं वे आनुवंशिक पूंजी के रूप में कार्य करते हैं। ऐसी आनुवंशिक पूंजी आगामी जीवन व्यवहार को प्रभावित करती है, जिसका वर्णन निम्नलिखित है–
  - ऐसे बालक जो जन्म से ही कमज़ोर, दुबले-पतले, बीमार और किसी-न-किसी शारीरिक अक्षमता से पीड़ित होते हैं, उनसे सामान्य स्वास्थ्य तथा शारीरिक वृद्धि और विकास के सामान्य स्तर पर पहुँच जाने की उम्मीद कम ही होती है। उनकी इस प्रकार की कमियाँ उनके शारीरिक स्वास्थ्य तथा वृद्धि एवं विकास को ही प्रभावित नहीं करती बल्कि संवेगात्मक, मानसिक और सामाजिक विकास में भी बाधक सिद्ध होती हैं।

- व्यक्ति के पास स्नायु संस्थान के रूप में जो कुछ प्रत्येक समय होता है, वह व्यक्ति के ज्ञानात्मक व्यवहार एवं विकास को प्रभावित करने की पूरी ताकत रखता है। रीढ़ की हड्डी अथवा मस्तिष्क पर पहुँचा छोटा आघात भी बालक को मानसिक रूप से दिव्यांग की श्रेणी में ला सकता है। स्नायु संस्थान तथा उसके समस्त अंगों का उचित रूप में होना बालक के विकास में सकारात्मक भूमिका का निर्वहन करता है।
- नलिकाविहीन ग्रंथियाँ (Ductless Glands) आरंभ से ही मानव के विकास की प्रक्रिया में अपनी भूमिका का निर्वहन प्रारंभ कर देती हैं। इन ग्रंथियों से उत्पन्न हारमोंस रक्त में घुले होने के कारण शरीर के प्रत्येक अंग में पहुँचते हैं; और इसलिये न केवल शारीरिक विकास बल्कि हमारे विचारों, भावनाओं आदि की जिस प्रकार की प्रक्रिया होती है, व्यक्ति के मानसिक, शारीरिक, सामाजिक, संवेगात्मक और नैतिक विकास की धारा भी उसी प्रकार मुड़ जाती है। आदि ग्रंथियों से निकलने वाले हारमोन की मात्रा काफी ज़्यादा कम या अधिक हो जाए तो ग्रंथियों की अत्यधिक सक्रियता या निष्क्रियता दोनों ही व्यक्ति के संतुलित विकास के लिये हानिकारक साबित हो सकती हैं।
- शारीरिक रूप से न्यूनता व्यक्ति के विकास में बाधक होती है। इन न्यूनताओं की कमियों के कारण व्यक्ति एक तरफ तो अन्य सामान्य व्यक्तियों की तरह कार्य करने एवं व्यवहार करने में पीछे रहता है, वहीं दूसरी तरफ वह विभिन्न प्रकार की हीन भावनाओं से भी ग्रस्त हो जाता है। इससे उसका आत्मविश्वास कम होता जाता है जिसका परिणाम यह होता है कि वह विकास की दौड़ में पीछे छूट जाता है।

- **बुद्धि:** मनोवैज्ञानिकों द्वारा बुद्धि को सीखने संबंधी योग्यता, समायोजन योग्यता और समय के अनुसार ठीक निर्णय ले सकने की योग्यता के रूप में परिभाषित किया जाता है। ज़ाहिर है, इस प्रकार के व्यवहार में सहायक बुद्धि, बालक की हर प्रकार की वृद्धि एवं विकास में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करेगी। एक बुद्धिमान व्यक्ति से अपने संवेगों को अच्छी तरह नियंत्रण में रखकर ही पूर्ण संयमित एवं संतुलित व्यवहार की अपेक्षा की जाती है। वह अपने तथा दूसरों के साथ तालमेल स्थापित कर चलना और व्यवहार करना अच्छी तरह जानता है जिसके परिणामस्वरूप उसका सामाजिक एवं नैतिक विकास अल्पवृद्धि युक्त बालकों से हमेशा ही अच्छी तरह संपन्न होता है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि व्यक्ति के विकास के समस्त पहलुओं में वृद्धि की मुख्य भूमिका होती है।
- **संवेगात्मक कारक:** बालक के विकास को प्रभावित करने में संवेगात्मक परिपक्वता तथा संवेगात्मक समायोजन क्षमता का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। बालक में जिस प्रकार के संवेगों का जिस रूप में विकास होगा वह उसके सामाजिक, मानसिक, नैतिक, शारीरिक तथा भाषा संबंधी विकास को पूरी तरह प्रभावित करने की क्षमता रखता है। संवेगात्मक रूप से असंतुलित बालक पढ़ाई में या किसी अन्य गंभीर कार्य में ध्यान नहीं दे पाते, परिणामस्वरूप उनका मानसिक विकास भी प्रभावित होता है। इसके विपरीत, जो बालक संवेगात्मक दृष्टि से संतुलित पाए जाते हैं, वे वृद्धि एवं विकास के सभी आयामों में संतोषप्रद ढंग से प्रगति करते हैं।
- **सामाजिक प्रकृति:** अगर बालक सामाजिक रूप से संतुलित होगा तो उसका सकारात्मक प्रभाव उसके शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, भौतिक तथा भाषा संबंधी विकास पर पड़ेगा। सामाजिक दृष्टि से कुशल बालक अपने वातावरण से दूसरों की अपेक्षा अधिक सीखता है तथा अधिक अच्छे प्रकार से प्रगति करने की संभावना ऐसे बच्चों में ही दूसरों की अपेक्षा ज़्यादा पाई जाती है।

बाह्य कारक

जो कारक व्यक्ति के अंदर निहित न होकर बाह्य वातावरण में निहित होते हैं उन्हें विकास को प्रभावित करने वाले बाह्य कारकों की श्रेणी में रखा जाता है। बाह्य कारक गर्भाधान के तुरंत बाद ही बालक के विकास को प्रभावित करना प्रारंभ कर देते हैं। इस प्रकार बाह्य कारकों को निम्नलिखित रूप में विभाजित किया जा सकता है–

- **माँ के गर्भ में मिलने वाला वातावरण:** गर्भाधान के समय से लेकर बालक के जन्म तक, जो कि लगभग 9 माह की अवधि होती है, जो कुछ भी माँ के गर्भ में उसके पालन-पोषण के लिये प्राप्त होता है, विकास की दृष्टि से काफी महत्त्वपूर्ण होता है। ये बालक के शारीरिक विकास के साथ-साथ आगामी सभी प्रकार के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं। इस वातावरण से जुड़े हुए विभिन्न कारकों को निम्नलिखित प्रकार से अंकित किया जा सकता है–
  - गर्भावस्था के दौरान माँ का शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य
  - गर्भ में पलने वाले बालकों की संख्या
  - पोषण की प्रकृति, जो बालक को माँ के गर्भ में मिलता है।
  - किसी एक्स-रे और रेडिएशन, रेडियोधर्मिता, क्षतिकारक किरणों तथा वायु प्रदूषण आदि का घातक प्रभाव
  - सामान्य अथवा असामान्य जन्म प्रक्रिया
  - गर्भाशय में बालक को पहुँची कोई चोट अथवा दुर्घटना संबंधी दुष्परिणाम।
- **जन्म के पश्चात् मिलने वाला वातावरण:** बालक को जन्म के समय ही जिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है वे उसके सभी प्रकार के विकास को पूरी तरह प्रभावित एवं नियंत्रित करती हैं। इस प्रकार के वातावरण में शामिल प्रमुख कारकों को निम्नलिखित रूप से वर्णित किया जा सकता है–
  - **जीवन की घटनाएँ एवं दुर्घटनाएँ:** व्यक्ति के जीवन में जो कुछ भी घटनाएँ या दुर्घटनाएँ घटती हैं, वे बालक के विकास के सभी आयामों को प्रभावित करती हैं।

    एक बालक जिससे उसकी माँ का साथ किसी दुर्घटनावश जन्म लेते ही या उसके बाद छूट दिया गया हो, उसके संपूर्ण विकास की कहानी ही अब बदल जाएगी। एक छोटी-सी प्रेरणादायक घटना जहाँ बालक के विकास को उन्नति का मार्ग दिखा सकती है, वहीं अनजाने में की गई गलती, अकस्मात् घटने वाली घटना

या दुर्घटना उसे अवनति के गर्त में डाल सकती है। कोई सिर में लगी छोटी-सी चोट उसके स्नायु पर ऐसा आघात पहुँचा सकती है कि उसका मानसिक विकास ही अवरुद्ध हो जाए अथवा वह हमेशा के लिये अपना संवेगात्मक संतुलन ही खो बैठे।

- **शारीरिक स्वास्थ्य एवं पोषण से जुड़ा हुआ भौतिक वातावरण :** पोषण एवं शारीरिक स्वास्थ्य के लिये व्यक्ति को जिस प्रकार का भौतिक वातावरण मिलता है उसका उसके शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य, संवेगात्मक तथा सामाजिक-व्यवहार-समायोजन और कार्य करने के अपने तरीके पर वैसा ही अनुकूल या प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। स्वस्थ और स्वच्छ जलवायु, प्रदूषणविहीन वातावरण एवं खाद्य पदार्थ, संतुलित भोजन, रहने और कार्य करने संबंधी उपयुक्त भौतिक सुविधाएँ एवं वातावरण, उपयुक्त चिकित्सा सुविधाओं आदि का विकास पर हमेशा अनुकूल प्रभाव पड़ता है, जबकि इस प्रकार के भौतिक वातावरण की कमियाँ उसके विकास के लिये महँगी साबित होती हैं।
- **सामाजिक एवं सांस्कृतिक वातावरण से प्राप्त सुविधाएँ एवं अवसर**

  बालक को अपने सामाजिक एवं सांस्कृतिक वातावरण से अपने जन्म के समय से ही जो कुछ प्राप्त होता है वह उसके विकास के सभी आयामों को पूरी तरह से प्रभावित करता है।

  इस प्रकार के वातावरण में जुड़े हुए विभिन्न तत्त्व, कारक और परिस्थितियाँ निम्नलिखित हो सकती हैं–

  - बालक की माता-पिता और परिवार द्वारा की जाने वाली देखभाल
  - माता-पिता और परिवार की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति
  - बालक को मिलने वाला शिक्षा का स्तर एवं वातावरण
  - बालक के विकास के लिये मौजूद सामाजिक एवं सांस्कृतिक वातावरण का स्तर एवं सुविधाएँ
  - जाति, धर्म, प्रांतीयता तथा नागरिकता के आधार पर बालक को समाज से मिलने वाला व्यवहार
  - बालक को मनोरंजन और रुचियों के पोषण के लिये मिलने वाली सुविधाएँ।

विकास के सिद्धांत

विकास के कुछ महत्त्वपूर्ण सिद्धांतों को निम्नलिखित रूप में वर्णित किया जा सकता है–

- **विकास का प्रतिरूप :** विकास का एक निश्चित प्रतिरूप होता है। मनुष्य का शारीरिक विकास दो दिशाओं, मस्तकाधोमुखी दिशा तथा निकट से दूर दिशा में होता है। प्रथम प्रकार की दिशा में शारीरिक विकास 'सिर से पैर की ओर' होता था। वहीं दूसरे प्रकार की दिशा में शारीरिक विकास पहले केंद्रीय भागों में प्रारंभ होता है उसके पश्चात् केंद्र से दूर के भागों में होता है।
- **विकास की दिशा :** विकास सामान्य से विशेष की ओर होता है। कोई भी बालक विकासक्रम में पहले सामान्य क्रियाएँ संपादित करता है उसके बाद विशेष क्रियाओं की तरफ जाता है। विकास का यह नियम शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक तथा सामाजिक सभी प्रकार के विकास पर लागू होता है।
- **विकास अवस्थाओं का पालन :** विकास अवस्थाओं के अनुसार होता है। बालक को सामान्य रूप से देखने पर ऐसा मालूम पड़ता है कि उसका विकास रुक-रुक कर हो रहा है, लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं होता है। उदाहरण के रूप में जब बालक के दूध के दाँत निकलते हैं तो ऐसा महसूस होता है कि दाँत एकाएक निकल आए, परंतु इसकी नींव गर्भावस्था के पाँचवे महीने में पड़ जाती है और ये जन्म के बाद 5-6 महीने में आते हैं।
- **विकास में व्यक्तिगत विभेद :** विकास में व्यक्तिगत विभेद हमेशा स्थिर होते हैं। जिस बालक में शारीरिक क्रियाएँ जल्दी उत्पन्न होती हैं वह शीघ्रता से बोलने भी लगता है, जिससे उसके भीतर सामाजिकता का विकास तेज़ी से होता है। इसके उलट जिन बालकों के शारीरिक विकास की गति धीमी होती है उनमें मानसिक और अन्य प्रकार का विकास भी विलंब से होता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्रत्येक बालक में शारीरिक व मानसिक योग्यताओं की मात्रा भिन्न-भिन्न होती है। इस कारण समान आयु के दो बालक व्यवहार में समानता नहीं रखते हैं।
- **विकास की गति में विभिन्नता :** विकास की गति में तीव्रता और मंदता विद्यमान होती है। व्यक्ति का विकास सदैव एक ही गति से नहीं होता बल्कि उसमें निरंतर उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। उदाहरण के लिये विकास की अवस्था में यह गति तीव्र रहती है उसके पश्चात् मंद पड़ जाती है।
- **परिपक्वता और शिक्षण का परिणाम :** बालक का विकास परिपक्वता और शिक्षण का परिणाम होता है। परिपक्वता का अर्थ व्यक्ति के वंशानुक्रम द्वारा शारीरिक गुणों का विकास है। बालक के अंदर स्वतंत्र रूप से एक ऐसी क्रिया चलती रहती है, जिसके परिणामस्वरूप उसके शारीरिक अंग अपने-आप परिपक्व हो जाते हैं। उसके लिये उसे वातावरण से मदद नहीं लेनी पड़ती है। वही शिक्षण और अभ्यास परिपक्वता के विकास में मदद प्रदान करते हैं। ये सीखने के लिये परिपक्व आधार तैयार करते हैं और सीखने के द्वारा बालक के व्यवहार में प्रगतिशील परिवर्तन आते हैं।
- **विकास की प्रक्रिया :** विकास एक अविराम प्रक्रिया है। यह निरंतर चलती रहती है। उदाहरण के रूप में शारीरिक विकास गर्भावस्था से लेकर परिपक्वावस्था तक चलता रहता है, लेकिन कालांतर में वह उठने-बैठने, चलने-फिरने और दौड़ने-भागने की क्रियाएँ करने लगता है।

विकास के अभिलक्षण (Characteristics of Development)

विश्व के विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा विकास के अभिलक्षणों को निम्नलिखित रूप में रेखांकित किया गया है–

- विकासात्मक परिवर्तन प्रगतिशील, व्यवस्थित तथा नियमित होते हैं। सामान्य से विशिष्ट और सरल से जटिल एवं एकीकृत से क्रियात्मक स्तरों की ओर अग्रसर होने के दौरान प्राय: ये एक क्रम का अनुसरण करते हैं।

- विकास कुछ क्षेत्रों में बहुत तीव्र वृद्धि को दर्शाता है, जबकि कुछ अन्य क्षेत्रों में यह धीमी गति से होता है। अर्थात विकास स्वरूप में बहुआयामी होता है।
- विकास में लचीलापन होता है। इसका अर्थ है कि एक ही व्यक्ति अपनी पूर्व विकास दर की तुलना में आगे के विकास में तीव्र गति से प्रगति कर सकता है।
- विकासात्मक परिवर्तन 'मात्रात्मक' होता है। उदाहरण के रूप में आयु बढ़ने के साथ कद बढ़ना।
- किशोरावस्था में शरीर के साथ-साथ संवेगात्मक, सामाजिक और संज्ञानात्मक क्रियात्मकता में भी तेज़ी से बदलाव परिलक्षित होते हैं।
- विकास प्रासंगिक होता है। यह ऐतिहासिक, परिवेशीय और सामाजिक-सांस्कृतिक घटकों से प्रभावित होता है।

विकास का अधिगम से संबंध
(Relationship of Development with Learning)

विकास के सभी पहलू एक-दूसरे से संबद्ध होते हुए अधिगम को प्रभावित करते हैं। इसे निम्नलिखित रूप से समझा जा सकता है–

- बच्चों का विकास और अधिगम एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। विकास अधिगम को प्रभावित करता है, साथ ही अधिगम भी विकास को प्रभावित करता है।
- छोटे बच्चों में मानसिक और संज्ञानात्मक विकास में शारीरिक विकास मददगार होता है। मानसिक विकास, भाषायी विकास और सामाजिक विकास अधिगम को प्रभावित करते हैं।
- संवेगात्मक विकास मानव विकास का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है। व्यक्ति का संवेगात्मक व्यवहार उसकी शारीरिक वृद्धि एवं विकास को ही नहीं बल्कि बौद्धिक, सामाजिक एवं नैतिक विकास को भी प्रभावित करता है। विद्यालय के परिवेश और क्रियाकलापों को उचित प्रकार से संगठित कराकर अध्यापक बच्चों के संवेगात्मक विकास में अपना योगदान दे सकते हैं।
- क्रियात्मक विकास के ज्ञान से शिक्षकों को यह ज्ञात होता है कि किस आयु-विशेष या अवस्था में बालक में किस प्रकार के कौशलों की योग्यता अर्जित करने की क्षमता होती है।
- मनोगत्यात्मक विकास का भी अधिगम से घनिष्ठ संबंध होता है। मनोगत्यात्मक विकास की जानकारी होने पर शिक्षक बच्चों में अधिगम की प्रक्रिया को सुचारु रूप से संचालित कर सकते हैं।

अतिमहत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी तथ्य

- ❑ विकास एक ऐसी सार्वभौमिक प्रक्रिया है जो मृत्युपर्यंत चलती रहती है।
- ❑ विकास को 'क्रमिक परिवर्तनों की शृंखला' के नाम से भी जाना जाता है।
- ❑ स्किनर के अनुसार, "विकास जीव और उसके वातावरण की अंत:क्रिया का प्रतिफल है।"
- ❑ विकास में होने वाले परिवर्तन सामाजिक, मानसिक, शारीरिक तथा संवेगात्मक होते हैं।
- ❑ गर्भकालीन अवस्था में होने वाला विकास मुख्यत: शारीरिक होता है।
- ❑ शैशवावस्था को 'समायोजन का काल' माना जाता है।
- ❑ बचपनावस्था को 'संवेग-प्रधान' अवस्था के रूप में जाना जाता है।
- ❑ बाल्यावस्था में बालक जिज्ञासु प्रकृति का होता है। वह अपने बड़ों से विभिन्न प्रकार के प्रश्न पूछता रहता है।
- ❑ बल्यावस्था में बालकों में 'समूह-प्रकृति' का विकास होता है।
- ❑ वय: संधि में यौन अंगों की परिपक्वता का विकास होता है।
- ❑ किशोरावस्था में बालकों में समस्या की अधिकता, कल्पना की अधिकता तथा सामाजिक अस्थिरता आती है।
- ❑ प्रौढ़ावस्था में व्यक्ति पारिवारिक जीवन में प्रवेश करता है। इसकी अवधि 21 से 40 वर्ष होती है।
- ❑ मध्यावस्था व्यक्ति के लिये सामाजिक संबंधों के प्रति समर्पित होती है।
- ❑ वृद्धावस्था को विकासक्रम में ह्रास की अवस्था माना जाता है।
- ❑ निरंतरता के सिद्धांत के अनुसार, "विकास कभी न समाप्त होने वाली प्रक्रिया है।"
- ❑ अवधारणाओं का विकास मुख्य रूप से बौद्धिक विकास का हिस्सा है।
- ❑ बचपन के सांप्रतिक दृष्टिकोण (Current view) की मान्यता है कि बचपन वृद्धि एवं परिवर्तन की एक अनूठी अवधि है।
- ❑ विकास का अर्थ परिपक्वता एवं अनुभव के फलस्वरूप होने वाले परिवर्तनों की शृंखला है।
- ❑ मानव विकास वंशक्रम एवं वातावरण के योगदान का परिणाम होता है।
- ❑ शर्म एवं गर्व जैसी भावना का विकास बाल्यावस्था में होता है।
- ❑ अवधारणाओं का विकास मुख्य रूप से बौद्धिक विकास का हिस्सा है।
- ❑ व्यक्तिगत शिक्षार्थी एक-दूसरे से विकास की दर के मामले में भिन्न होते हैं।
- ❑ मानवीय मूल्य जो प्रकृति में सार्वत्रिक हैं, के विकास का अर्थ है- अभिव्यक्ति।
- ❑ किशोरावस्था में बच्चे अपने समकक्षी वर्ग के सक्रिय सदस्य बनते हैं।
- ❑ पुरुषोचित या स्त्रियोचित सामाजिक भूमिकाओं को प्राप्त करना उत्तर बाल्यावस्था के लिये उपयुक्त नहीं है।
- ❑ परिपक्वता एवं अनुभव के फलस्वरूप होने वाले परिवर्तनों की उत्तरोत्तर शृंखला विकास कहलाती है।
- ❑ पूर्व बाल्यावस्था को 'खिलौने की आयु' कहा जाता है।
- ❑ उत्तर बाल्यावस्था में बालक भौतिक वस्तुओं के द्रव्यमान, संख्या व क्षेत्र में परिवर्तन को समझने लगता है।

- शैशवावस्था में बच्चों के क्रियाकलाप मूलप्रवृत्यात्मक होते हैं।
- मानव विकास मात्रात्मक एवं गुणात्मक होता है।
- सामूहिकता की भावना बाल्यावस्था की प्रमुख मनोवैज्ञानिक विशेषता है।
- शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था और प्रौढ़ावस्था मानव विकास का सही क्रम है।
- 'संवेगात्मक क्रांति' किशोरावस्था से अधिक जुड़ा हुआ है।
- मानव विकास की बाल्यावस्था को सुनहरी अवस्था कहा जाता है।
- मध्य बाल्यावस्था में भाषा समाजीकृत की बजाय अहंकेंद्रित अधिक होती है।
- विकास की गति एक व्यक्ति से दूसरे में भिन्न होती है, किंतु यह एक क्रमबद्ध और व्यवस्थित नमूने का अनुगमन करती है।
- भाषा विकास के लिये प्रारंभिक बचपन अतिसंवेदनशील काल है।
- उत्तर बाल्यावस्था में बालकों में नई खोज की और घूमने की प्रवृत्ति बहुत अधिक बढ़ जाती है।
- हरलॉक के अनुसार, "विकास के परिणामस्वरूप नवीन विशेषताएँ और नवीन योग्यताएँ प्रकट होती हैं।"
- गाल्टन का नाम 'सुजननशास्त्र के पिता' से जुड़ा हुआ है।
- गिरोह की अवस्था 8-10 वर्ष आयु वर्ग एवं विलंब विकास समाजीकरण से संबंधित है।
- विकास की बाल्यावस्था को कोल तथा ब्रुस ने 'संवेगात्मक विकास का अनोखा' काल कहा है।
- जन्म से किशोरावस्था तक बच्चों में विकास सांवेदिक, मूर्त तथा अमूर्त क्रम से होता है।
- बाल्यावस्था की अवधि में विकास बहुस्तरीय और मिश्रित होता है।
- लेव वायगोत्स्की के अनुसार बच्चों के संज्ञानात्मक विकास में सांस्कृतिक उपकरण महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

अभ्यास प्रश्न

1. विकास के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
   (a) विकास केवल बाल्यावस्था के दौरान ही होता है।
   (b) विकास बहुआयामी होता है।
   (c) विकास की दर सभी संस्कृतियों में सभी के लिये समान होती है।
   (d) विकास केवल विद्यालय में होने वाले अधिगम से ही होता है। **CTET, 2021**

2. जन्म से किशोरावस्था तक बच्चों में विकास किस क्रम से होता है?
   (a) मूर्त, अमूर्त, सांवेदिक (b) अमूर्त, मूर्त, सांवेदिक
   (c) सांवेदिक, मूर्त, अमूर्त (d) अमूर्त, सांवेदिक, मूर्त **CTET, 2021**

3. विकास के विषय में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
   (a) विकास सुरुचिपूर्ण, सुव्यवस्थित समूह की अवस्थाओं में पूर्वनिश्चित आनुवंशिक घटकों के कारण होता है।
   (b) विकास एक सरल और एकदिशीय प्रक्रिया है।
   (c) बच्चों के विकास में बहुत-सी सांस्कृतिक विविधताएँ होती हैं।
   (d) संसार में सभी बच्चों का विकास एक ही क्रम में और सुनिश्चित समय से होता है। **CTET, 2021**

4. निम्नलिखित में से मध्य बाल्यावस्था की अवधि का मुख्य प्रमाण चिह्न कौन-सा है?
   (a) पेशीय कौशल और समग्र शारीरिक वृद्धि का तेज़ी से विकास
   (b) वैज्ञानिक तर्क और अमूर्त रूप से सोचने की क्षमता का विकास
   (c) प्रतीकात्मक-खेल का उभरना
   (d) तर्कसंगत विचारों का विकास जो कि प्राकृतिक रूप से मूर्त है **CTET, 2021**

5. बाल्यावस्था की अवधि में विकास-
   (a) में केवल परिमाणात्मक परिवर्तन होते हैं।
   (b) अनियमित और असंबद्ध होता है।
   (c) धीमी गति से होता है एवं उसे मापा नहीं जा सकता।
   (d) बहुस्तरीय और मिश्रित होता है। **CTET, 2021**

6. किस मनोवैज्ञानिक के अनुसार बच्चों के संज्ञानात्मक विकास में 'सांस्कृतिक उपकरण' एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
   (a) अलबर्ट बण्डुरा (b) बी.एफ. स्किनर
   (c) लेव वायगोत्स्की (d) जीन पियाजे **CTET, 2021**

7. विकास की किस अवस्था को कोल तथा ब्रुस ने 'संवेगात्मक विकास का अनोखा' काल कहा है?
   (a) बाल्यावस्था (b) शैशवावस्था
   (c) किशोरावस्था (d) प्रौढ़ावस्था **UTET, 2020**

8. कक्षा में छात्रों को प्रश्न पूछने के लिये-
   (a) प्रेरित करना चाहिये (b) हतोत्साहित करना चाहिये
   (c) अनुमति नहीं देना चाहिये (d) रोक देना चाहिये **UPTET, 2020**

9. "विकास कभी न समाप्त होने वाली प्रक्रिया है।" यह कथन विकास के किस सिद्धांत से संबंधित है?
   (a) एकीकरण का सिद्धांत
   (b) अंत:क्रिया का सिद्धांत
   (c) निरंतरता का सिद्धांत
   (d) अंत:संबंध का सिद्धांत **UPTET, 2020**

10. बच्चे की वृद्धि मुख्यत: संबंधित है–
(a) सामाजिक विकास से (b) शारीरिक विकास से
(c) नैतिक विकास से (d) भावनात्मक विकास से
UPTET, 2020

11. पाठ्य सहगामी क्रियाएँ मुख्यत: संबंधित हैं–
(a) छात्रों के सर्वांगीण विकास से
(b) शैक्षिक संस्थानों के विकास से
(c) छात्रों के मानसिक विकास से
(d) छात्रों के वृत्तिक विकास से **UPTET, 2020**

12. मानव विकास का प्रारंभ होता है–
(a) पूर्व बाल्यावस्था से (b) गर्भावस्था से
(c) शैशवास्था से (d) उत्तर-बाल्यावस्था से
UPTET, 2020

13. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सत्य नहीं है?
(a) सीखना व्यवहार परिवर्तन की एक प्रक्रिया है
(b) शिक्षा एक लक्ष्य उन्मुख प्रक्रिया है
(c) विकास एक मात्रात्मक प्रक्रिया है
(d) वृद्धि एक जैविक प्रक्रिया है **UPTET, 2020**

14. एक प्राथमिक कक्षाकक्ष में एक शिक्षक को क्या करना चाहिये?
(a) केवल उदाहरण देने चाहिये
(b) केवल गैर-उदाहरण देने चाहिये
(c) उदाहरण एवं गैर-उदाहरण दोनों देने चाहिये
(d) उदाहरण एवं गैर-उदाहरण दोनों नहीं देने चाहिये
UPTET, 2020

15. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन बालक विकास के सिद्धांतों के बारे में गलत है?
(a) विकास एक निश्चित और पूर्व अनुमानित प्रारूप से होता है।
(b) विकास आनुवंशिकी और वातावरण का उत्पाद (परिणाम) है।
(c) सभी व्यक्ति विकास में समान होते हैं।
(d) विकास समाकलन के सिद्धांत पर कार्य करता है।
HTET, 2019

16. वह अवधि जो वयस्कता के संक्रमण की पहल करती है, उसे क्या कहते हैं?
(a) किशोरावस्था (b) मध्य बाल्यावस्था
(c) पूर्व क्रियात्मक अवधि (d) बाल्यावस्था की समाप्ति
CTET, 2019

17. निम्नलिखित में से कौन विकास के व्यापक आयामों की सही पहचान करता है?
(a) शारीरिक, संज्ञानात्मक, सामाजिक और संवेगात्मक
(b) संवेगात्मक, बौद्धिक, आध्यात्मिक एवं स्व
(c) शारीरिक, व्यक्तित्व, आध्यात्मिक एवं संवेगात्मक
(d) सामाजिक, शारीरिक, व्यक्तित्व एवं स्व **CTET, 2019**

18. निम्नलिखित में से कौन-सा विकास का सिद्धांत नहीं है?
(a) व्यक्ति अलग-अलग गति से विकास करते हैं
(b) विकास तुलनात्मक रूप से क्रमिक होता है
(c) विकास समय के साथ धीरे-धीरे घटित होता है
(d) विकास की सटीक गति एवं प्रकृति जन्म के समय ही निर्धारित हो जाती है **CTET, 2019**

19. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा विकास एवं अधिगम के बीच संबंध को सही तरीके से सूचित करता है?
(a) विकास एवं अधिगम संबंधित नहीं हैं
(b) अधिगम विकास का ध्यान किये बिना घटित होता है
(c) अधिगम की दर विकास की दर से काफी अधिक होती है
(d) विकास एवं अधिगम अंत:संबंधित और अंत:निर्भर होते हैं
CTET, 2019

20. निम्नलिखित में से कौन-सा विकास का सिद्धांत नहीं है?
(a) विकास जीवनपर्यन्त होता है
(b) विकास परिवर्त्य होता है
(c) विकास आनुवंशिकता एवं पर्यावरण दोनों के द्वारा प्रभावित होता है
(d) विकास सार्वभौमिक है तथा सांस्कृतिक संदर्भ इसे प्रभावित नहीं करते **CTET, 2019**

21. बाल्यावस्था की अवधारणा से क्या अभिप्राय है?
(a) यह विभिन्न सांस्कृतिक संदर्भों में सार्वभौम रूप से समान है
(b) समकालीन सामाजिक-संरचनावादी मनोवैज्ञानिकों के अनुसार यह एक सामाजिक संरचना है
(c) यह है कि बच्चे दुष्ट रूप में पैदा होते हैं और उन्हें सभ्य बनाना होता है
(d) यह कि बच्चे शून्य से शुरुआत करते हैं और उनके गुण पूरी तरह से परिवेश के द्वारा निर्धारित किये जाते हैं
CTET, 2019

22. निम्नलिखित में से कौन-सी 'मध्य बाल्यावस्था' की विशेषता है?
(a) शारीरिक वृद्धि एवं विकास बहुत तेज़ गति से होता है
(b) अमूर्त रूप से सोचने तथा वैज्ञानिक तर्क का प्रयोग करने की योग्यता विकसित होती है
(c) बच्चे तार्किक एवं मूर्त रूप से सोचना प्रारंभ कर देते हैं
(d) अधिगम मुख्य रूप से संवेदी एवं चालक गतिविधियों द्वारा घटित होता है **CTET, 2019**

23. निम्नलिखित कारणों से खेल युवा बच्चों के विकास में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है, सिवाय-
(a) वे अपने शरीर पर निपुणता प्राप्त करते हैं।
(b) यह उनकी इंद्रियों को उत्तेजित करता है।
(c) यह समय बिताने का एक सुखद तरीका है।
(d) वे नए कौशल हासिल करते हैं और सीखते हैं कि उन्हें कब उपयोग किया जाए। **CTET, 2018**

24. शरीर के केंद्रीय भाग से परिधियों या अग्रांगों की ओर विकास दर्शाता है–
(a) मध्य बाह्य विकास के सिद्धांतों को
(b) सोपानीय विकास के सिद्धांतों को
(c) विकिरणीय विकास के सिद्धांतों को
(d) विकेंद्रीकृत विकास के सिद्धांतों को **CTET, 2018**

25. निम्नलिखित में से कौन-सी बाद की बाल्यावस्था के बौद्धिक विकास की विशेषता नहीं है?
(a) विज्ञान की काल्पनिक कथाओं में अधिक रुचि
(b) बढ़ती हुई तार्किक शक्ति
(c) भविष्य की योजना की सूझ-बूझ
(d) काल्पनिक भयों का अंत **UPTET, 2018**

26. गिरोह अवस्था किस आयु-वर्ग एवं विलंब-विकास से संबंधित है?
(a) 3-6 वर्ष एवं भाषा
(b) 8-10 वर्ष एवं समाजीकरण
(c) 16-19 वर्ष एवं नैतिकता
(d) 16-19 वर्ष एवं संज्ञानात्मक **UPTET, 2018**

27. निम्नलिखित में से कौन-सा फ्लैंडर की अंत:क्रिया विश्लेषण प्रणाली से संबंधित नहीं है?
(a) छात्र कथन (Student talk)
(b) अभिभावक कथन (Guardian talk)
(c) शिक्षक कथन (Teacher talk)
(d) मौन (Silence) **UPTET, 2018**

28. निम्नलिखित में से कौन-सा बाल्यावस्था की एक विशेषता नहीं है?
(a) सामूहिक की प्रबलता
(b) जिज्ञासा की कमी
(c) अभिवृद्धि में स्थिरता
(d) समूह एवं खेलों में सहभागिता **RTET, 2018**

29. निम्नलिखित में से कौन-सा वृद्धि और विकास का प्रथम चरण है?
(a) शारीरिक विकास (b) सामाजिक विकास
(c) नैतिक विकास (d) मानसिक विकास **UPTET, 2018**

30. निम्नलिखित में से कौन-सा विकास का सिद्धांत नहीं है?
(a) अनुकूलित प्रत्यावर्तन का सिद्धांत
(b) निरंतर विकास का सिद्धांत
(c) परस्पर संबंध का सिद्धांत
(d) समान प्रतिमान का सिद्धांत **UPTET, 2017**

31. "विकास के परिणामस्वरूप नवीन विशेषताएँ और नवीन योग्यताएँ प्रकट होती हैं।" यह कथन किसने दिया है?
(a) गोसेल (b) हरलॉक
(c) मेरेडिथ (d) डगलस और हॉलैंड **UPTET, 2017**

32. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है?
(a) वृद्धि एवं विकास दो अलग आयाम हैं।
(b) वृद्धि जीवनपर्यंत चलती है।
(c) वृद्धि विकास की प्रक्रिया का ही एक भाग है।
(d) विकास सतत प्रक्रिया है। **HTET, 2017**

33. इनमें से किनका नाम 'सुजननशास्त्र के पिता' से जुड़ा हुआ है?
(a) क्रो एवं क्रो (b) गाल्टन
(c) रॉस (d) वुडवर्थ **UPTET, 2016**

34. चालक विकास की दर में व्यक्तिगत विविधताएँ होती हैं, फिर भी चालक विकास का क्रम.....से.....तक है।
(a) शीर्षगामी; अधोगामी
(b) अधोगामी; शीर्षगामी
(c) अपरिष्कृत (स्थूल) चालक विकास; परिष्कृत (सूक्ष्म) चालक विकास
(d) परिष्कृत (सूक्ष्म) चालक विकास; अपरिष्कृत (स्थूल) चालक विकास **CTET, 2016**

35. विकास की गति एक व्यक्ति से दूसरे में भिन्न होती है, किंतु यह एक ——— नमूने का अनुगमन करती है।
(a) एडी-से-चोटी (b) अव्यवस्थित
(c) अप्रत्याशित (d) क्रमबद्ध और व्यवस्थित **CTET, 2016**

36. विकास के लिये निम्नलिखित में से कौन-सा एक उचित नहीं है?
(a) विकास जन्म के साथ प्रारंभ होता है और मृत्यु पर समाप्त होता है।
(b) 'सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ' विकास में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है।
(c) विकास एकल आयामी है।
(d) विकास पृथक होता है। **CTET, 2016**

37. भाषा विकास के लिये प्रारंभिक बचपन ——— काल है।
(a) कम महत्त्वपूर्ण (b) अतिमहत्त्वपूर्ण
(c) अतिसंवेदनशील (d) निरक्षेप **CTET, 2016**

38. मध्य-बचपन अवधि है
(a) 2 से 6 वर्ष (b) 6 से 11 वर्ष
(c) 10 वर्ष के बाद (d) जन्म से 2 वर्ष **CTET, 2016**

39. विकास के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा एक कथन सही नहीं है?
(a) विकास भिन्न व्यक्तियों में भिन्न गति से होता है।
(b) विकास जन्म से किशोरावस्था तक बहुत तीव्र गति से होता है और उसके बाद रुक जाता है।
(c) विकास जन्म से किशोरावस्था तक आगे की ओर बढ़ता है और फिर पीछे की ओर।
(d) विकासात्मक परिवर्तन सीधी रेखा में आगे जाते हैं। **CTET, 2016**

40. भाषा के विकास के लिये सबसे संवेदनशील समय निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(a) मध्यावस्था का काल (b) वयस्कावस्था
(c) प्रारंभिक बचपन का समय (d) जन्म पूर्व का समय
UPTET, 2016

41. विकास के सिद्धांतों के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(a) विकास वंशानुगतता और वातावरण के बीच सतत अन्योन्यक्रिया से होता है।
(b) विकास परिपक्वन और अधिगम पर आधारित होता है।
(c) प्रत्येक बच्चा विकास के चरणों से गुज़रता है, फिर भी बच्चों में वैयक्तिक भिन्नताएँ बहुत होती हैं।
(d) विकास एक परिमाणात्मक प्रक्रिया है जिसका ठीक-ठीक मापन हो सकता है। **UPTET, 2016**

42. विकास की किस अवस्था में बुद्धि का अधिकतम विकास होता है?
(a) बाल्यावस्था (b) शैशवावस्था
(c) किशोरावस्था (d) प्रौढ़ावस्था
UPTET, 2016

43. निम्नलिखित में से कौन-सा एक सही क्रम है?
(a) अंडाणु-शुक्राणु, ब्लास्टोसिस्ट, युग्मनज
(b) ब्लास्टोसिस्ट, अंडाणु-शुक्राणु, युग्मनज
(c) ब्लास्टोसिस्ट, युग्मनज, अंडाणु-शुक्राणु
(d) अंडाणु-शुक्राणु, युग्मनज, ब्लास्टोसिस्ट **UPTET, 2016**

44. वह अवस्था जो कि माता के 21वें गुणसूत्र जोड़े के अलग न हो पाने के कारण होती है, कहलाती है–
(a) डाउन्स सिंड्रोम (b) क्लीनफेल्टर सिंड्रोम
(c) टर्नर सिंड्रोम (d) विल्सन सिंड्रोम
UPTET, 2016

45. निम्नलिखित में से किसको मुख्य (अधिकारी) ग्रंथि कहते हैं?
(a) थायरॉइड ग्रंथि (b) एड्रिनल ग्रंथि
(c) अंत:स्रावी ग्रंथि (d) पीयूष ग्रंथि
UPTET, 2016

46. इस अवस्था में बालकों में नई खोज करने की और घूमने की प्रवृत्ति बहुत अधिक बढ़ जाती है–
(a) शैशवावस्था (b) उत्तर बाल्यावस्था
(c) किशोरावस्था (d) प्रौढ़ावस्था
RTET, 2016

47. तर्क, जिज्ञासा तथा निरीक्षण शक्ति का विकास किस आयु में होता है?
(a) 7 वर्ष (b) 11 वर्ष
(c) 9 वर्ष (d) 6 वर्ष **RTET, 2016**

48. शैशवावस्था की विशेषता नहीं है–
(a) शारीरिक विकास की तीव्रता
(b) दूसरों पर निर्भरता
(c) नैतिकता का होना
(d) मानसिक विकास में तीव्रता **RTET, 2016**

49. निम्नलिखित में से कौन-सा आयु समूह परवर्ती बाल्यावस्था श्रेणी के अंतर्गत आता है?
(a) 11 से 18 वर्ष (b) 18 से 24 वर्ष
(c) जन्म से 6 वर्ष (d) 6 से 11 वर्ष
CTET, 2015

50. "कोई भी नाराज़ हो सकता है यह आसान है, परंतु एक सही व्यक्ति के ऊपर, सही मात्रा में, सही समय पर, सही उद्देश्य के लिये तथा सही तरीके से नाराज़ होना आसान नहीं है।" यह संबंधित है–
(a) संवेगात्मक विकास से (b) सामाजिक विकास से
(c) संज्ञानात्मक विकास से (d) शारीरिक विकास से
CTET, 2015

51. शैशवकाल की अवधि है–
(a) जन्म से 2 वर्ष तक (b) जन्म से 3 वर्ष तक
(c) 2 से 3 वर्ष तक (d) जन्म से 1 वर्ष तक
CTET, 2015

52. मध्य बाल्यावस्था में भाषा ——— की बजाय ——— अधिक है।
(a) समाजीकृत, अहंकेंद्रित (b) जीववादी, समाजीकृत
(c) परिपक्व, अपरिपक्व (d) अहंकेंद्रित, समाजीकृत
CTET, 2015

53. विकास ——— से ——— की ओर बढ़ता है।
(a) जटिल, कठिन (b) विशिष्ट, सामान्य
(c) साधारण, आसान (d) सामान्य, विशिष्ट
CTET, 2015

54. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन विकास और अधिगम के बीच संबंध को सर्वश्रेष्ठ रूप से जोड़ता है?
(a) विकास अधिगम से स्वतंत्र है।
(b) अधिगम विकास के पीछे रहता है।
(c) अधिगम और विकास समानार्थक पारिभाषिक शब्द हैं।
(d) अधिगम और विकास एक जटिल तरीके से अंत:संबंधित हैं।
CTET, 2015

55. किशोरों के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सर्वाधिक उचित है?
(a) चिंतन का मूर्त क्रियाओं में प्रदर्शित होना
(b) बुद्धि-लब्धांक में अकस्मात वृद्धि
(c) संवेगात्मक परोत्थान की घटना बढ़ जाना
(d) पढ़ाई के प्रति लापरवाह रवैया **UPTET, 2015**

56. मानव विकास ——— है।
(a) मात्रात्मक (b) गुणात्मक
(c) कुछ सीमा तक अमापनीय (d) (a) और (b) दोनों
CTET, 2014

57. बाल्यावस्था की प्रमुख मनोवैज्ञानिक विशेषता क्या है?
(a) दूसरों पर निर्भरता
(b) सामूहिकता की भावना
(c) धार्मिकता
(d) अनुकरणात्मक प्रवृत्ति का अभाव **UPTET, 2014**

58. किशोरावस्था में संवेगों की तीव्रता किस प्रकार प्रकट होती है?
(a) प्रतिकूल पारिवारिक संबंध
(b) व्यवसाय की समस्या
(c) नई परिस्थिति के साथ समायोजन
(d) उपर्युक्त सभी **UPTET, 2014**

59. बाल विकास में-
(a) प्रक्रिया पर बल दिया जाता है।
(b) वातावरण और अनुभव की भूमिका पर बल दिया जाता है।
(c) गर्भावस्था से किशोरावस्था तक का अध्ययन होता है।
(d) उपर्युक्त सभी **UPTET, 2014**

60. बाल विकास का अध्ययन क्षेत्र है-
(a) बाल विकास की विभिन्न अवस्थाओं का अध्ययन
(b) वातावरण का बाल विकास पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन
(c) वैयक्तिक विभिन्नताओं का अध्ययन
(d) उपर्युक्त सभी **UPTET, 2014**

61. 'सर्वाधिक उपयुक्त जीवित रहता है' का सिद्धांत है–
(a) लैमार्क (b) हैरिसन
(c) डार्विन (d) मैक्डूगल **UPTET, 2014**

62. निम्नलिखित में से कौन-सा मानव विकास का सही क्रम है?
(a) शैशवावस्था, किशोरावस्था, बाल्यावस्था, प्रौढ़ावस्था
(b) शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था, प्रौढ़ावस्था
(c) बाल्यावस्था, किशोरावस्था, प्रौढ़ावस्था, शैशवावस्था
(d) बाल्यावस्था, शैशवावस्था, किशोरावस्था, प्रौढ़ावस्था **HTET, 2014**

63. पद 'संवेगात्मक क्रांति' किस अवस्था से अधिक जुड़ा हुआ है?
(a) शैशवावस्था से (b) बाल्यावस्था से
(c) किशोरावस्था से (d) प्रौढ़ावस्था से **HTET, 2014**

64. मानव विकास की वह अवस्था जिसे 'सुनहरी अवस्था' कहा जाता है, वह है–
(a) शैशवावस्था (b) बाल्यावस्था
(c) किशोरावस्था (d) प्रौढ़ावस्था **HTET, 2014**

65. निम्नलिखित में से कौन प्रारंभिक बाल्यावस्था अवधि के दौरान उन भूमिकाओं एवं व्यवहारों के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं, जो एक समूह में स्वीकार्य हैं?
(a) भाई-बहन एवं अध्यापक (b) अध्यापक एवं साथी
(c) साथी एवं माता-पिता (d) माता-पिता एवं भाई-बहन **CTET, 2014**

66. शैशवावस्था में बच्चों के क्रियाकलाप ———— होते हैं।
(a) मूलप्रवृत्यात्मक (b) संरक्षित
(c) संज्ञानात्मक (d) संवेगात्मक **UPTET, 2013**

67. किशोरावस्था में बच्चे किस प्रकार की समस्या का सामना करते हैं?
(a) शारीरिक एवं मानसिक परिवर्तन से समायोजन करना
(b) अपने साथियों से समायोजन करना
(c) अपने माता-पिता से समायोजन करना
(d) पढ़ाई संबंधी समायोजन करना **UPTET, 2013**

68. शिक्षक को ज्ञान होना चाहिये-
(a) अध्यापन विषय का
(b) बाल मनोविज्ञान का
(c) शिक्षा संहिता का
(d) अध्यापन विषय एवं बाल मनोविज्ञान का **CTET, 2011**

69. शिक्षक एवं विद्यार्थी के मध्य संबंध होना चाहिये-
(a) स्नेह का (b) विश्वास का
(c) सम्मान का (d) ये सभी **UPTET, 2011**

70. विकास के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सत्य नहीं है?
(a) विकास के प्रत्येक अवस्था में अपने खतरे हैं।
(b) विकास उकसाने/बढ़ावा देने से नहीं होता है।
(c) विकास सांस्कृतिक परिवर्तनों से प्रभावित होता है।
(d) विकास के प्रत्येक अवस्था की अपनी विशेषताएँ होती हैं। **RTET, 2011**

71. निम्नलिखित में से कौन-सा विकासात्मक कार्य उत्तर बाल्यावस्था के लिये उपयुक्त नहीं है?
(a) सामान्य खेलों के लिये आवश्यक शारीरिक कुशलताएँ सीखना
(b) पुरुषोचित या स्त्रियोचित सामाजिक भूमिकाओं को प्राप्त करना
(c) व्यक्तिगत आत्मनिर्भरता प्राप्त करना
(d) अपने हमउम्र बालकों के साथ रहना सीखना **RTET, 2011**

72. विकास का अर्थ है–
(a) परिवर्तनों की उत्तरोत्तर शृंखला
(b) अभिप्रेरणा के फलस्वरूप होने वाले परिवर्तनों की उत्तरोत्तर शृंखला
(c) अभिप्रेरणा एवं अनुभव के फलस्वरूप होने वाले परिवर्तनों की उत्तरोत्तर शृंखला
(d) परिपक्वता एवं अनुभव के फलस्वरूप होने वाले परिवर्तनों की उत्तरोत्तर शृंखला **RTET, 2011**

73. 'खिलौने की आयु' कहा जाता है–
(a) पूर्व बाल्यावस्था को (b) उत्तर बाल्यावस्था को
(c) शैशवावस्था को (d) ये सभी **RTET, 2011**

74. निम्नलिखित में से कौन-सी पूर्व बाल्यावस्था की विशेषता नहीं है?
(a) दल/समूह में रहने की अवस्था
(b) अनुकरण करने की अवस्था
(c) प्रश्न करने की अवस्था
(d) खेलने की अवस्था **RTET, 2011**

75. उत्तर बाल्यावस्था में बालक भौतिक वस्तुओं के किस आवश्यक तत्त्व में परिवर्तन को समझने लगते हैं?
(a) द्रव्यमान (b) द्रव्यमान और संख्या
(c) संख्या (d) द्रव्यमान, संख्या व क्षेत्र **RTET, 2011**

76. मानव विकास किन दोनों के योगदान का परिणाम है?
(a) अभिभावक एवं अध्यापक का
(b) सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारकों का
(c) वंशानुक्रम एवं वातावरण का
(d) इनमें से कोई नहीं **RTET, 2011**

77. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन विकास के बारे में सत्य नहीं है?
(a) विकास अंत:क्रिया का फल है
(b) विकास एक व्यवस्थित शृंखला का अनुगामी है
(c) विकास एक व्यक्तिगत प्रक्रिया है
(d) विकास विशिष्ट से सामान्य की ओर होता है **RTET, 2011**

78. "विकास कभी न समाप्त होने वाली प्रक्रिया है।" यह विचार किससे संबंधित है?
(a) अंत: संबंध का सिद्धांत (b) निरंतरता का सिद्धांत
(c) एकीकरण का सिद्धांत (d) अंत:क्रिया का सिद्धांत **CTET, 2011**

79. अवधारणाओं का विकास मुख्य रूप से ———— का हिस्सा है।
(a) बौद्धिक विकास
(b) शारीरिक विकास
(c) सामाजिक विकास
(d) संवेगात्मक विकास **CTET, 2011**

80. व्यक्तिगत शिक्षार्थी एक-दूसरे से ———— में भिन्न होते हैं।
(a) विकास की दर
(b) विकासक्रम
(c) विकास की सामान्य क्षमता
(d) वृद्धि एवं विकास के सिद्धांत **CTET, 2011**

81. मानवीय मूल्यों, जो प्रकृति में सार्वत्रिक हैं, के विकास का अर्थ है-
(a) मतारोपण
(b) अंगीकरण
(c) अनुकरण
(d) अभिव्यक्ति **CTET, 2011**

82. निम्नलिखित में से किस स्तर में बच्चे अपने समकक्षी वर्ग के सक्रिय सदस्य बनते हैं?
(a) किशोरावस्था (b) वयस्कावस्था
(c) प्राक् बाल्यावस्था (d) बाल्यावस्था **CTET, 2011**

83. बचपन का सांप्रतिक दृष्टिकोण की मान्यता है-
(a) बहुत तरीके से बच्चे प्राप्त वयस्कों के बराबर होते हैं।
(b) बच्चों को युवा प्राप्त वयस्कों के रूप में सबसे अच्छा माना जाता है।
(c) बचपन आधारिक रूप से प्रतीक्षा अवधि है।
(d) बचपन, वृद्धि एवं परिवर्तन की एक अनूठी अवधि है। **CTET, 2010**

उत्तरमाला

1. (b)	2. (c)	3. (c)	4. (d)	5. (d)	6. (c)	7. (a)	8. (a)	9. (c)	10. (b)
11. (a)	12. (b)	13. (c)	14. (c)	15. (c)	16. (a)	17. (a)	18. (d)	19. (d)	20. (d)
21. (b)	22. (c)	23. (c)	24. (a)	25. (b)	26. (b)	27. (b)	28. (b)	29. (a)	30. (a)
31. (b)	32. (a)	33. (b)	34. (c)	35. (d)	36. (b)	37. (c)	38. (b)	39. (a)	40. (c)
41. (d)	42. (c)	43. (d)	44. (a)	45. (d)	46. (b)	47. (b)	48. (c)	49. (d)	50. (a)
51. (a)	52. (a)	53. (d)	54. (d)	55. (c)	56. (d)	57. (b)	58. (d)	59. (d)	60. (d)
61. (c)	62. (b)	63. (c)	64. (b)	65. (d)	66. (a)	67. (a)	68. (d)	69. (d)	70. (b)
71. (b)	72. (d)	73. (a)	74. (d)	75. (d)	76. (c)	77. (d)	78. (b)	79. (a)	80. (a)
81. (d)	82. (a)	83. (d)							

3 बाल विकास के सिद्धांत (Theories of Child Development)

बाल विकास (Child Development)

- बाल विकास बच्चे के विकास के विभिन्न स्वरूपों तथा व्यवहार और क्षमताओं में परिवर्तन का वैज्ञानिक अध्ययन है। यह एक विस्तृत क्षेत्र है जिसके अंतर्गत मानव विकास तथा परिवर्तन के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया जाता है।
- 'बाल विकास' पद दो शब्दों (बाल एवं विकास) से मिलकर बना है। जिसमें बाल का अर्थ होता है बालक तथा विकास का संबंध परिवर्तनों की ऐसी प्रक्रिया से होता है जिससे गुणात्मक तथा परिमाणात्मक दोनों प्रकार के परिवर्तन जुड़े रहते हैं।
- बालक वह नर या मादा व्यक्ति होता है जिसने अभी परिपक्वता ग्रहण कर प्रौढ़ या युवा कहलाना शुरू नहीं किया। इस दृष्टि से गर्भाधान के समय से प्रारंभ होकर किशोरावस्था की समाप्ति तक संपूर्ण समय में होने वाली वृद्धि एवं विकास के स्वरूप एवं प्रक्रिया के अध्ययन को बाल विकास के अंतर्गत शामिल किया जाता है।
- बाल विकास बाल मनोविज्ञान की ही एक शाखा है जो बालकों के विकास, व्यवहार तथा विकास को प्रभावित करने वाले विभिन्न तथ्यों का अध्ययन करता है।
- बाल विकास एवं बाल मनोविज्ञान में एक मुख्य अंतर यह है कि बाल मनोविज्ञान बालक की क्षमताओं का अध्ययन करता है, जबकि बाल विकास क्षमताओं के विकास की दशा का अध्ययन करता है।

बाल विकास की परिभाषाएँ *(Definitions of Child Development)*

विश्व के विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा बाल विकास की विभिन्न परिभाषाएँ प्रस्तुत की गई हैं, जिनका उल्लेख निम्नलिखित है–

- **क्रो एवं क्रो के अनुसार,** "बाल मनोविज्ञान वह वैज्ञानिक अध्ययन है जो व्यक्ति के विकास का अध्ययन गर्भकाल के प्रारंभ से किशोरावस्था की प्रारंभिक अवस्था तक करता है।"
- **आइजनेक के अनुसार,** "बाल मनोविज्ञान का संबंध बालक में मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं के विकास से है। गर्भकालीन अवस्था, जन्म, शैशवास्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था और परिपक्वास्था तक के बालक की मनोवैज्ञानिक विकास प्रक्रियाओं का अध्ययन बाल मनोविज्ञान के अंतर्गत किया जाता है।"
- **जेम्स ड्रेवर के अनुसार,** "बाल मनोविज्ञान मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसमें जन्म से परिपक्वावस्था तक विकसित हो रहे मानव का अध्ययन किया जाता है।"
- **हरलॉक के अनुसार,** "बाल विकास मनोविज्ञान की वह शाखा है जो गर्भाधान से लेकर मृत्युपर्यंत मनुष्य के विकास की विभिन्न अवस्थाओं में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन करती है।"

बाल विकास के सिद्धांत *(Theories of Child Development)*

बालक के विकास की प्रक्रिया के संबंध में मनोवैज्ञानिकों ने अनेक सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है, जिन्हें बाल विकास के सिद्धांत के नाम से जाना जाता है। इन सिद्धांतों को निम्नलिखित रूप में वर्णित किया जा सकता है–

निरंतर विकास का सिद्धांत

विकास की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है। यह एक शाश्वत प्रक्रिया है। हालाँकि विकास की गति हमेशा एकसमान नहीं होती। यह कभी तीव्र तथा कभी मंद रहती है। विकास की गति अपनी चरम सीमा पर पहुँचने से पूर्व समाप्त नहीं होती है। बालक में मानसिक गुण यकायक विकसित नहीं हो जाते, उसमें भाषा का विकास एक ही दिन में नहीं हो जाता अपितु इसकी नींव बालक में जन्म से ही पड़ जाती है।

एकीकरण का सिद्धांत

विकास की प्रक्रिया द्वारा एकीकरण के सिद्धांत का पालन किया जाता है। इसके अनुसार बालक अपने संपूर्ण अंग को और फिर अंग के भागों को चलाना सीखता है। इसके पश्चात् वह उन भागों में एकीकरण करना सीखता है। बालक सामान्य से विशेष की ओर बदलते हुए विशेष प्रतिक्रियाओं तथा चेष्टाओं को इकट्ठे रूप में प्रयोग में लाना सीखता है। उदाहरण के लिये एक बालक पहले पूरे पैर को, फिर पैर की उंगलियों को और फिर पैर तथा उंगलियों को एक साथ चलाना सीखता है।

परस्पर संबंध का सिद्धांत

शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक आदि विकास के सभी प्रकार परस्पर एक-दूसरे से संबद्ध होते हैं। इनमें से किसी भी एक प्रकार में होने वाला विकास अन्य सभी प्रकारों में होने वाले विकास को पूरी तरह प्रभावित करने की क्षमता रखता है। इसे एक उदाहरण के माध्यम से समझा जा सकता है। जिन बालकों में औसत से अधिक बुद्धि होती है, वे सामाजिक और शारीरिक विकास की दृष्टि से भी आगे बढ़े हुए पाए जाते हैं। दूसरी तरफ एक क्षेत्र में पाई जाने वाली न्यूनता दूसरे क्षेत्र में हो रही प्रगति में बाधक होती है। यही कारण है कि शारीरिक विकास की दृष्टि से पिछड़े बालक संवेगात्मक, बौद्धिक और सामाजिक विकास में भी पीछे छूट जाते हैं।

वैयक्तिक अंतर का सिद्धांत

वैयक्तिक अंतर के सिद्धांत के अनुसार बालकों का विकास और वृद्धि उनकी अपनी वैयक्तिकता (Individuality) के अनुरूप होती है। बालक अपनी स्वाभाविक गति से ही विकास और वृद्धि के विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ़ते रहते हैं और इसी कारण उनमें पर्याप्त विभिन्नताएँ देखने को मिलती हैं। वृद्धि और विकास की दृष्टि से कोई भी एक बालक किसी अन्य बालक के समरूप नहीं होता।

विकास भविष्यवाणी योग्य है

किसी भी बालक की वृद्धि एवं विकास की गति को ध्यान में रखते हुए उसके आगे बढ़ने की दिशा और स्वरूप के संबंध में भविष्यवाणी की जा सकती है। इस प्रकार विकास एक ऐसा क्षेत्र है जिसकी भविष्यवाणी की जा सकती है।

वृद्धि और विकास की गति की दर में भिन्नता

बालकों का विकास निरंतर चलता रहता है, लेकिन इसकी गति सभी अवस्थाओं में एक जैसी नहीं होती। इसमें भिन्नता बनी रहती है। शैशवावस्था के आरंभ के वर्षों में विकास की गति अधिक होती है, किंतु कालांतर में यह धीमी हो जाती है। किसी भी अवस्था में विकास की गति एक जैसी नहीं रह पाती।

सामान्य से विशेष की ओर गति

वृद्धि और विकास की सभी दिशाओं में विशिष्ट क्रियाओं से पहले उनके सामान्य रूप से दर्शन होते हैं। बालक अपने हाथों से कुछ चीज़ पकड़ने से पूर्व इधर-उधर यूँ ही हाथ मारने या फैलाने की चेष्टा करता है। इसी प्रकार शुरुआत में एक नवजात शिशु के रोने और चिल्लाने में उसके सभी अंग-प्रत्यंग भाग लेते हैं, किंतु बाद में वृद्धि और विकास की प्रक्रिया के फलस्वरूप यह क्रिया उसकी आँखों और वाक् यंत्र तक सीमित हो जाती है। भाषा विकास में भी बालक विशेष शब्दों से पूर्व सामान्य शब्द ही सीखता है।

विकास क्रम की एकरूपता

विकास की गति एक जैसी न होने तथा पर्याप्त व्यक्तिगत अंतर पाए जाने पर भी विकास क्रम में कुछ एकरूपता के दर्शन होते हैं। विकास की प्रक्रिया एक खास स्वरूप के अनुसार चलती है। शारीरिक दृष्टि सिर से पैर की ओर बढ़ती है जबकि मानसिक क्षेत्र में यह मूर्त से अमूर्त चिंतन की क्षमता में अभिवृद्धि के रूप में प्रकट होती है।

इसी प्रकार विकास का क्रम केंद्र से प्रारंभ होता है, फिर बाहरी विकास होता है और उसके पश्चात् संपूर्ण विकास। उदाहरण के लिये रीढ़ की हड्डी का विकास होता है, उसके बाद भुजाओं, हाथ तथा हाथ की उंगलियों का; तत्पश्चात इन सब का पूर्ण रूप से संयुक्त विकास होता है।

विकास की दिशा का सिद्धांत

विकास की दिशा 'शीर्षपाद-पुच्छीय' के साथ-साथ Proximodistal दिशा में है। विकास की दिशा सिर से पुच्छ की ओर है। उदाहरणार्थ- लंबाई में अक्ष 'शीर्षपाद-पुच्छीय' कहलाता है और केंद्र से परिधि की ओर Proximodistal कहलाता है। बच्चा पहले अपने सिर पर नियंत्रण प्राप्त करता है और फिर भुजाओं व पैरों पर। बच्चा पहले बड़ी माँसपेशियों पर नियंत्रण करना सीखता है और फिर छोटी माँसपेशियों से श्रेष्ठ गतिविधियाँ करता है। इसका तात्पर्य यह है कि बच्चा पहले भुजाओं पर नियंत्रण करने की योग्यता विकसित करता है और फिर वह अंगुलियों तथा अन्य अंगों पर नियंत्रण कर सकता है।

विकास की प्रक्रिया वंशानुक्रम और वातावरण का संयुक्त परिणाम है–

बच्चों का विकास वंशानुक्रम और वातावरण की संयुक्त देन माना जाता है। विकास की प्रक्रिया में वंशानुक्रम जहाँ बुनियाद का कार्य करता है, वहीं वातावरण इस बुनियाद पर बनाए जाने वाले व्यक्तित्व संबंधी भवन के लिये आवश्यक सामग्री एवं वातावरण जुटाने में सहयोग देता है। अत: विकास की प्रक्रियाओं में इन दोनों को समान महत्त्व दिया जाना आवश्यक हो जाता है।

विकास लंबवत सीधा न होकर वर्तुलाकार होता है

बालक का विकास लंबवत सीधा न होकर वर्तुलाकार (Spiral) होता है। वह एक-सी गति से सीधा चलकर विकास को प्राप्त नहीं होता, बल्कि बढ़ते हुए पीछे हटकर अपने विकास को परिपक्व और स्थायी बनाते हुए (वर्तुलाकार आकृति की तरह) आगे बढ़ता है। किसी एक अवस्था में वह तेज़ी से आगे बढ़ते हुए उसी गति से आगे नहीं जाता, बल्कि अपनी विकास की गति को धीमा करते हुए वर्षों में विश्राम लेता हुआ प्रतीत होता है ताकि विकास को स्थायी रूप दिया जा सके। यह सब करने के पश्चात् ही वह आगामी वर्षों में फिर कुछ आगे बढ़ने की चेष्टा कर सकता है।

बाल विकास के सिद्धांतों का शैक्षिक महत्त्व

बाल विकास के सिद्धातों के शैक्षिक महत्त्व को निम्नलिखित रूप में देखा जा सकता है–

- इससे ज्ञात होता है कि विकास की गति और मात्रा सभी बालकों में एकसमान नहीं होती है। अत: व्यक्तिगत अंतरों को ध्यान में रखकर हमें सभी बालकों से एक जैसे विकास की उम्मीद नहीं करनी चाहिये।
- बालकों के विकास की भविष्य में होने वाली प्रगति का अनुमान लगा लेने के कारण यह लाभ हो सकता है कि बालकों से आवश्यकता से अधिक या कम आशाएँ न लगा बैठें।
- बाल विकास के दिशा और परिमाण संबंधी सिद्धांत हमें यह बताते हैं कि एक ही जाति के सदस्यों में विकास से संबंधित कुछ समानता पाई जाती है। जिस दिशा में, जिस रूप में विकास होना चाहिये, उस तरह बालक का विकास उस विशेष अवस्था या आयु में हो रहा है या नहीं, इस बात का हम ध्यान रखने की चेष्टा करते हैं। इसी आधार पर हम बालकों में सामान्यता या असामान्यता की मात्रा का अनुमान लगाकर उनकी उचित वृद्धि और विकास में सहयोग प्रदान कर सकते हैं।
- विकास की सभी दिशाएँ अर्थात् विभिन्न पहलू (मानसिक, शारीरिक, संवेगात्मक और सामाजिक विकास) परस्पर एक-दूसरे से संबंधित हैं। इस तथ्य की जानकारी हमें बालक के सर्वांगीण विकास पर ध्यान देने के लिये प्रेरित करती है।
- बाल विकास के सिद्धांत न केवल माता-पिता तथा अध्यापकों को विशेष रूप से तैयार होने के लिये आधार देते हैं, बल्कि इनके बालक भी आने वाली समस्याओं तथा परिवर्तनों के लिये अपने आप को तैयार करने में समर्थ हो जाते हैं।
- वंशानुक्रम एवं वातावरण दोनों मिलकर बालक की वृद्धि और विकास के लिये उत्तरदायी हैं, कोई एक नहीं। इनमें से किसी की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती। इस बात का ज्ञान हमें वातावरण में आवश्यक सुधार लाकर बालकों का अधिक-से-अधिक कल्याण करने के लिये प्रेरित करता है।

बाल विकास की प्रकृति

बाल विकास की प्रकृति को निम्नलिखित रूप में देखा जा सकता है-

मनोविज्ञान की विशिष्ट शाखा के रूप में

- बाल विकास मनोविज्ञान की विशिष्ट शाखा के रूप में कार्य करता है। इसके अंतर्गत मानव-व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। साथ ही, इसमें गर्भकालीन अवस्था से लेकर युवावस्था तक के विकासशील मानव के व्यवहार को शामिल किया जाता है।
- बाल विकास के अंतर्गत मानव-व्यवहार के विकास एवं आयु-स्तरों पर भी विशिष्ट व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है। विकास के अंतर्गत मानव की जैविक संरचना तथा मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं में होने वाले क्रमिक परिवर्तन को शामिल किया जाता है।

मनोविज्ञान में विशिष्ट उपागम के रूप में

मानव-व्यवहारों के अध्ययन के लिये बाल विकास में निम्नलिखित विशिष्ट उपागम या विचार-पद्धतियों का उपयोग किया जाता है–

प्रयोगात्मक उपागम

प्रयोगात्मक उपागम के माध्यम से बाल विकास की विभिन्न समस्याओं के अध्ययन में कार्य-कारण संबंध को जानने का प्रयास किया जाता है। इसके द्वारा एक विशिष्ट व्यवहार किस परिस्थिति में उत्पन्न होता है या एक परिस्थिति-विशेष में व्यक्ति किस प्रकार के व्यवहार की अभिव्यक्ति करेगा, यह जाना जाता है।

दैहिक उपागम

नर्वस सिस्टम मानव शरीर की सभी क्रियाओं को नियंत्रित करता है। ये क्रियाएँ शारीरिक और मानसिक दोनों होती हैं।

हार्मोंस और ग्रंथियों की क्रियाशीलता के कारण ही शारीरिक वृद्धि, विकास और स्वास्थ्य संचालित होते हैं। बाल विकास को दैहिकशास्त्र (Physiology) के ज्ञान के माध्यम से भी समझा जा सकता है। इसका मुख्य: कारण है कि जैविक आत्म तथा मानसिक आत्म एक-दूसरे से घनिष्ठ रूप से संबंधित होते हैं।

विकासात्मक उपागम

विकासात्मक उपागम का उपयोग बाल विकास की समस्याओं के अध्ययन के लिये किया जाता है। जब बालक एक नई विकास अवस्था में पहुँचता है तब उसमें कुछ नहीं रुचियों, कुछ नई अभिवृत्तियों, कुछ नए लक्षणों, कुछ नए शील-गुणों का एक विशिष्ट समूह निर्मित होता है तो उसके अध्ययन के लिये विकासात्मक उपागम को अपनाया जाता है। इसके माध्यम से विकास की मात्रा, गति और विकास की विशिष्टताओं आदि की जानकारी अलग-अलग तथा संपूर्ण रूप में होती है।

व्यक्तित्व संबंधी उपागम

बालक का व्यवहार किसी-न-किसी पहलू को अभिव्यक्त करता है। जन्म से ही व्यक्तित्व का निर्माण प्रारंभ हो जाता है। भिन्न-भिन्न व्यक्तित्व वाले व्यक्तियों का व्यवहार भी भिन्न-भिन्न होता है।

बाल विकास के क्षेत्र

बाल विकास के क्षेत्र को निम्नलिखित रूप में समझा जा सकता है-

- बाल विकास के अंतर्गत बाल विकास की विभिन्न अवस्थाओं (गर्भकालीन अवस्था से किशोरावस्था तक) का अध्ययन शामिल होता है।
- इसके अंतर्गत विकास के विभिन्न पहलुओं (शारीरिक विकास से लेकर व्यक्तित्व विकास तक) का विस्तारपूर्वक अध्ययन किया जाता है।
- बाल विकास के अंतर्गत बालकों के जीवन-विकासक्रम में होने वाली असामान्यताओं और विकृतियों का अध्ययन किया जाता है।
- इसके अंतर्गत मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान का अध्ययन किया जाता है। मनोचिकित्सा बाल विकास एवं बाल मनोविज्ञान की ही देन है।
- इसके अंतर्गत बालकों की विभिन्न अंत:क्रियाओं का अध्ययन कर यह जानने का प्रयत्न किया जाता है कि इन क्रियाओं से बालकों के व्यवहार में क्या परिवर्तन होते हैं?
- बाल विकास के अंतर्गत बालकों की रुचियों का अध्ययन कर उन्हें शैक्षिक और व्यावसायिक निर्देशन प्रदान किया जाता है।
- इसके अंतर्गत अधिगम, कल्पना, चिंतन, तर्क, स्मृति तथा प्रत्यक्षीकरण जैसी विभिन्न मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है।
- बाल विकास के अंतर्गत बालकों की वैयक्तिक विभिन्नताओं का अध्ययन किया जाता है।
- इसके अंतर्गत बालकों की विभिन्न शारीरिक और मानसिक योग्याताओं का मापन व मूल्यांकन किया जाता है।
- बाल विकास के अंतर्गत बालक-अभिभावक संबंधों का अध्ययन किया जाता है। माता-पिता का बालकों के व्यक्तित्व-निर्धारण और समुचित विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान होता है।
- जिन बालकों के संबंध अपने माता-पिता के साथ अच्छे नहीं होते हैं वे कुसमायोजित और अपराधी प्रवृत्ति के हो जाते हैं।
- बाल विकास के अध्ययन से माता-पिता तथा बालकों के बीच अच्छे संबंध विकसित करने का प्रयास किया जाता है।

बाल अध्ययन विधियाँ (Methods of Child Study)

बाल अध्ययन की प्रमुख विधियों का वर्णन निम्नलिखित है-

क्रमबद्ध चरित्र लेखन विधि *(Systematic Biographical Method)*

इस विधि का प्रयोग प्रेयर, मूर, डी.आर. मेजर, जी.एस.गल. जैसे अनेक मनोवैज्ञानिकों ने किया है। प्रेयर महोदय ने वर्ष 1882 में इस विधि का प्रयोग क्रमबद्ध ढंग से किया। प्रेयर महोदय ने इस प्रयोग के लिये अपने ही बालक का चरित्र लेखन तैयार किया। यह चरित्र लेखन जन्म से तीन वर्ष की अवस्था का था। इस विधि के माध्यम से प्रेयर ने यह जानने का प्रयास किया कि जन्म के समय में कौन-कौन-सी प्राकृतिक क्रियाएँ पाई जाती हैं। बालक कब प्रथम बार ध्वनि और प्रकाश के प्रति अनुक्रिया करता है तथा उसकी ज्ञानेंद्रियों का विकास किस प्रकार हुआ। अत: क्रमबद्ध चरित्र लेखन विधि से बालक के जीवन तथा व्यवहार की अनेक विशेषताओं का पता लगाया जा सकता है।

इसके माध्यम से प्रयोगकर्त्ता बालक के व्यवहार का प्रतिदिन निरीक्षण करता है तथा निरीक्षण के आधार पर व्यवहार की विशेषताओं को क्रमबद्ध तरीके से सूचीबद्ध कर एक रिकॉर्ड तैयार करता है। यह रिकॉर्ड चरित्र लेखन कहलाता है। इस रिकॉर्ड का विश्लेषण करके बालक के व्यवहार के क्रमिक विकास का अध्ययन किया जाता है।

क्रमबद्ध चरित्र लेखन विधि के दोष

इस विधि के दोष निम्नलिखित हैं-

- इस विधि में बालक के व्यवहार का प्रतिदिन अध्ययन करना होता है, अत: इसका उपयोग उस अवस्था में ठीक हो सकता है जब एक प्रयोगकर्त्ता बालक के साथ ही स्थायी रूप से रहे जो कि एक मुश्किल कार्य है।
- प्रयोगकर्त्ता बालक के अधिक संपर्क में रहने से बालक के मधुर स्वभाव तथा क्रियाओं से प्रभावित हो सकता है। इस अवस्था में जमा किये गए रिकॉर्ड पक्षपातपूर्ण हो सकते हैं।
- बालकों के प्रति स्नेह-भाव के कारण अक्सर प्रयोगकर्त्ता बालक के गुणों का अति-अंकन करता है।
- यह विधि अध्ययन में अधिक समय लेती है। अत: इसमें समय की बर्बादी होती है।

निरीक्षण विधि *(Observation Method)*

- यंग महोदय ने वर्ष 1954 में कहा, "निरीक्षण नेत्रों द्वारा सावधानी से किये गए अध्ययन को सामूहिक व्यवहार, जटिल सामाजिक संस्थाओं और किसी पूर्ण वस्तु को बनाने वाली पृथक् इकाइयों का निरीक्षण करने के लिये एक विधि के रूप में उपयोग किया जा सकता है।"
- मौसर महोदय ने वर्ष 1958 में कहा, "निरीक्षण को उचित रूप से वैज्ञानिक पूछताछ की श्रेष्ठ विधि कहा जा सकता है। ठोस अर्थ में निरीक्षण में कानों और वाणी की अपेक्षा नेत्रों का उपयोग होता है।"
- गुडे तथा हाट ने 1964 में कहा, "विज्ञान निरीक्षण से प्रारंभ होता है और अपने तथ्यों की पुष्टि के लिये अंत में निरीक्षण का सहारा लेता है।"
- निरीक्षण विधि का प्रयोग छोटे बच्चों और शिशुओं की समस्याओं के समाधान के लिये किया जाता है। सर्वप्रथम जर्मनी में बाल मनोविज्ञान की समस्याओं के अध्ययन के लिये निरीक्षण विधि का प्रयोग हुआ था।
- अमेरिकी मनोवैज्ञानिक वॉटसन ने निरीक्षण विधि का प्रयोग बालकों के प्राथमिक संवेगों के अध्ययन में किया।
- गेसेल महोदय ने इस विधि में 'मूविंग पिक्चर कैमरा' का उपयोग किया और व्यवहार चित्रों के विश्लेषण से बालकों के व्यवहार के संबंध में शुद्ध परिणाम प्राप्त किये। इस अध्ययन में गेसेल ने एकतरफा दिखाई देने वाले पर्दों का प्रयोग किया।
- इनके द्वारा सिर्फ निरीक्षक बालक को देखते हैं, बालक निरीक्षक को नहीं। निरीक्षण विधि में इस प्रकार एकतरफा दिखाई देने वाले कैमरे का उपयोग निरीक्षण-कक्ष में किया जाता है।

निरीक्षण विधि के पद

निरीक्षण विधि के प्रमुख पदों का वर्णन निम्नलिखित है-

- **उपयुक्त योजना:** इस विधि द्वारा अध्ययन करने से पूर्व प्रयोगकर्त्ता को अध्ययन व्यवहार और समस्या के संबंध में उपयुक्त योजना बना लेनी चाहिये। यह निश्चय कर लेना चाहिये कि किन लोगों का निरीक्षण करना है और किस प्रकार के व्यवहार का निरीक्षण करना है। निरीक्षण के लिये क्षेत्र, समय, उपकरण आदि के संबंध में पूर्व में ही योजना बना लेनी चाहिये। पूर्व में योजना बना लेने से यह सुनियोजित हो जाता है और इससे शुद्ध आँकड़ों के संकलन में सहायता मिलती है।
- **व्यवहार का निरीक्षण:** निरीक्षण करते समय प्रयोगकर्त्ता व्यवहार के उन पक्षों का निरीक्षण अधिक ध्यान से करता है, जो उसकी अध्ययन समस्या से संबंधित हैं एवं पूर्व योजना के अनुसार हैं। वह निरीक्षणों के साथ-साथ विभिन्न उपकरणों की सहायता से व्यवहार को भी दर्ज करता है।
- **व्यवहार को दर्ज करना:** प्रयोगकर्त्ता व्यवहार को सूचीबद्ध करने के लिये भी उपकरणों का उपयोग करता है। जैसे- मूवी कैमरे के उपयोग से किसी भी प्रकार के व्यवहार के निरीक्षण को सरलता से दर्ज किया जा सकता है, व्यवहार से संबंधित संवादों को टेपरिकॉर्डर की सहायता से दर्ज किया जा सकता है।
- **विश्लेषण:** समस्या से संबंधित व्यवहारों के निरीक्षणों को दर्ज करने के पश्चात् प्रयोगकर्त्ता प्राप्त निरीक्षणों को यदि संभव होता है तो अंकों में बदलता है और प्राप्त अंकों की सूची बनाने का कार्य करता है और फिर विभिन्न सांख्यिकीय विधियों के आधार पर आँकड़ों का विश्लेषण करता है।
- **व्याख्या और सामान्यीकरण:** निरीक्षण व्यवहार का विश्लेषण करने के पश्चात् व्यवहार की व्याख्या की जाती है। यदि संभव होता है तो व्यवहार की व्याख्या विभिन्न सिद्धांतों के आधार पर की जाती है अथवा व्यवहार के कारणों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया जाता है। सामान्य रूप में देखा जाता है कि नमूना (Sample) से प्राप्त परिणाम कहाँ तक सामान्य जनसंख्या पर लागू होते हैं।

निरीक्षण विधि के प्रकार

निरीक्षण विधि के प्रकार निम्नलिखित हैं-

- **सरल अथवा अनियंत्रित निरीक्षण विधि:** यंग के अनुसार, "अनियंत्रित निरीक्षण में हमें वास्तविक जीवन परिस्थितियों की सूक्ष्म परीक्षा करनी होती है, जिसमें विशुद्धता के यंत्रों के प्रयोग का या निरीक्षित घटना की सत्यता की जाँच का कोई प्रयास नहीं किया जाता है। जब किसी घटना का निरीक्षण प्राकृतिक परिस्थितियों में किया जाए तथा प्राकृतिक परिस्थितियों पर कोई बाह्य दबाव न डाला जाए तो इस प्रकार के निरीक्षण को अनियंत्रित निरीक्षण कहते हैं।"
- **व्यवस्थित अथवा नियंत्रित निरीक्षण विधि:** जब निरीक्षणकर्त्ता और घटना दोनों पर नियंत्रण करके अध्ययन किया जाए तो इस प्रकार की निरीक्षण विधि को व्यवस्थित निरीक्षण विधि कहते हैं।

- **सहभागी निरीक्षण विधि:** इस विधि में निरीक्षणकर्त्ता जिस समूह के व्यक्तियों के व्यवहार का निरीक्षण करना चाहता है वह उस समूह में जाकर एक सदस्य के रूप में घुल-मिल जाता है और फिर उनके व्यवहार का अध्ययन करता है। इस विधि द्वारा छोटे समूहों का अध्ययन सरलता से किया जा सकता है।

प्रयोगात्मक विधि *(Experimental Method)*

प्रयोगात्मक विधि एक वैज्ञानिक विधि है। इस विधि के माध्यम से बालकों की प्रेरणा, परिपक्वता, अधिगम, अनुबंधन, विभेदीकरण तथा संवेगात्मक अनुक्रियाओं से संबंधित समस्याओं का अध्ययन किया गया है। मनोवैज्ञानिक जहोदा ने इसे परिभाषित करते हुए कहा, "प्रयोग परिकल्पना के परीक्षण की एक विधि है।"

फेस्टिगर के अनुसार, "प्रयोग का मूल आधार स्वतंत्र चर में परिवर्तन करने से परतंत्र चर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना है।" इस विधि में दो प्रकार के चर होते हैं- स्वतंत्र चर और आश्रित चर।

प्रयोगात्मक विधि के चरण

प्रयोगात्मक विधि के चरण निम्नलिखित हैं-

- **समस्या:** किसी भी प्रयोग को करने से पहले आवश्यक है कि कोई समस्या हो। इसके संबंध में टाउनसेंड महोदय ने कहा है, "समस्या तो समाधान के लिये एक प्रस्तावित प्रश्न है।"
- **संबंधित साहित्य का अध्ययन और उपकल्पना निर्माण:** समस्या को चुनने और उसके कथन के बाद प्रयोगकर्त्ता जिस समस्या को चुनता है उस समस्या से संबंधित साहित्य का अध्ययन करता है। साहित्य के अध्ययन के द्वारा प्रयोगकर्त्ता यह जानने का प्रयास करता है कि अब तक समस्या पर कितने व्यक्तियों ने क्या-क्या प्रयोगात्मक अध्ययन किये हैं और उन्हें क्या एवं कितने विश्वसनीय प्रमाण प्राप्त हुए हैं।
- **प्रयोज्य:** उपकल्पना निर्धारण के बाद प्रयोज्यों का चयन किया जाता है। प्रयोज्य से अभिप्राय उन लोगों से है जिन पर प्रयोग किया जाना है। एक प्रयोग में इनकी संख्या एक भी हो सकती है और अधिक भी हो सकती है। प्राय: एक से अधिक ही होती है।
- **चर और प्रयोगात्मक अभिकल्प:** करलिंगर के अनुसार, "चर वह गुण है जिसके विभिन्न मूल्य हो सकते हैं। उदाहरण के लिये प्रकाश, ध्वनि, तापक्रम, शोरगुल इत्यादि किसी न किसी प्रकार के चर हैं।" टाउनसेंड के अनुसार, "आश्रित चर वह कारक है जो प्रयोग द्वारा स्वतंत्र चर के प्रदर्शन पर प्रदर्शित हो, हटाने पर अदृश्य हो तथा मात्रा में परिवर्तन होने पर परिवर्तित हो जाए।"
- **उपकरण तथा सामग्री:** अध्ययनकर्त्ता प्रयोग में जिन उपकरणों का उपयोग करता है उनका संक्षेप में विवरण देता है। यदि प्रयोग के लिये वह किसी नए उपकरण को विकसित करता है तो वह उसका विस्तृत वर्णन देता है।
- **नियंत्रण:** समस्या से संबंधित साहित्य का अध्ययन करके तथा विशेषज्ञों की राय और अपने अनुभव के आधार पर वह यह निश्चित करता है कि समस्या को कौन-कौन-से कारक अथवा चर प्रभावित कर रहे हैं। समस्या को प्रभावित करने वाले कारक कई क्षेत्रों से संबंधित हो सकते हैं; जैसे- प्रयोज्यों से संबंधित कारक, वातावरण संबंधी कारक, उपकरण से संबंधित कारक इत्यादि।
- **निर्देश तथा विधि:** नियंत्रण को निश्चित कर लेने के बाद प्रयोगकर्त्ता प्रयोज्यों अथवा प्रयोज्य के लिये निर्देश निश्चित करता है कि प्रयोज्य के प्रयोग से संबंधित कार्य लेने के लिये क्या-क्या निर्देश देने हैं।
- **परिणाम:** पूर्व निश्चित प्रयोग के अनुसार आँकड़ों का संग्रह करने के पश्चात् आँकड़ों का वर्गीकरण करके सूची बनाने का कार्य करते हैं, फिर प्रयोग अभिकल्प के अनुसार उच्च सांख्यिकीय विधियों द्वारा आँकड़ों का विश्लेषण करते हैं और सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर परिणाम ज्ञात कर लेते हैं।
- **व्याख्या तथा सामान्यीकरण:** आँकड़ों के आधार पर प्राप्त परिणामों की व्याख्या करने से पूर्व सर्वप्रथम प्राप्त परिणामों के आधार पर परिकल्पना की जाँच करते हैं और निष्कर्ष निकाल लेते हैं। फिर अपने निष्कर्षों की व्याख्या विभिन्न सिद्धांतों के आधार पर करते हैं।

प्रयोगात्मक विधि की उपयोगिता

प्रयोगात्मक विधि की उपयोगिता को निम्नलिखित रूप से देखा जा सकता है-

- कार्य और कारण संबंधों का अध्ययन इस विधि द्वारा जितनी शुद्धता से किया जाता है, उतना दूसरी विधि द्वारा नहीं किया जा सकता है।
- यह विधि अन्य विधियों की अपेक्षा अधिक शुद्ध और संक्षिप्त है, क्योंकि इसमें एक व्यवहार को प्रभावित करने वाले अनेक कारकों को नियंत्रित कर कार्य और कारण के प्रभाव का अध्ययन किया जाता है।
- यह विधि परिकल्पना के परीक्षण की श्रेष्ठ विधि है।
- अन्य विधियों की अपेक्षा यह सर्वाधिक वैज्ञानिक विधि है।
- इस विधि द्वारा अध्ययन के आधार पर प्राप्त परिणाम विश्वसनीय, वैध तथा सार्वभौमिक होते हैं।

समकालीन एवं दीर्घकालीन अध्ययन प्रणालियाँ

- बाल मनोविज्ञान की विकासात्मक समस्याओं का अध्ययन करने के लिये इन विधियों द्वारा दो प्रणालियों का उपयोग करते हैं- समकालीन प्रणाली एवं दीर्घकालीन प्रणाली।
- **समकालीन अध्ययन प्रणाली:** इस अध्ययन प्रणाली में व्यवहार के विभिन्न पहलुओं के विकास के अध्ययन में सर्वप्रथम भिन्न-भिन्न अवस्था के बालकों के समूहों को आदर्श विधियों की सहायता से चुना जाता है। फिर अध्ययन समस्या से संबंधित शारीरिक व मानसिक योग्यता वाले विकास के क्रमों का इन विभिन्न स्तर के बालकों में निरीक्षण किया जाता है। अंत में आँकड़ों के औसत मानों के आधार पर विकास के क्रम को ज्ञात कर लिया जाता है।
- उदाहरण के लिये, यदि हम अध्ययन करना चाहते हैं कि भाषा का विकास किस प्रकार होता है तो सर्वप्रथम भिन्न-भिन्न आयु-स्तर के बालकों को चुनना होगा।

समकालीन अध्ययन प्रणाली की उपयोगिता

इस प्रणाली की महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

- इस प्रणाली द्वारा अध्ययनकर्त्ता बालक के संपूर्ण जीवन में घटित होने वाले विकासात्मक परिवर्तनों का अध्ययन कम समय और कम खर्च में कर सकता है।
- इस प्रणाली में अध्ययनकर्त्ता को विकासात्मक परिवर्तनों का वर्षों तक इंतज़ार नहीं करना पड़ता है।
- इस प्रणाली में विभिन्न आयु-स्तर के बालकों के क्रमिक विकास का तुलनात्मक अध्ययन भी संभव है।
- इस प्रणाली में अध्ययनकर्त्ता को किसी भी अगली विकास की अवस्था का वर्षों तक इंतज़ार नहीं करना पड़ता है।
- **दीर्घकालीन अध्ययन प्रणाली:** इस प्रणाली में एक ही आयु-स्तर के बालक समूह को चुना जाता है, फिर समूह के बालकों की आयु के बढ़ने के साथ-साथ उनकी मानसिक और शारीरिक योग्यताओं के विकासक्रम का निरीक्षण व मापन किया जाता है और अंत में इस प्रकार प्राप्त आँकड़ों के आधार पर विकासक्रम को ज्ञात कर लिया जाता है। इस प्रणाली की सहायता से शारीरिक ऊँचाई, शारीरिक वज़न, बुद्धिलब्धि, भाषा का विकास, सामाजिक और संवेगात्मक विकास इत्यादि से संबंधित समस्याओं का अध्ययन किया जाता है।
- उदाहरण के लिये, यदि हम बालकों में भाषा के विकास का अध्ययन करना चाहते हैं, तो एक वर्ष की आयु के केवल 100 बच्चों को चुनकर प्रत्येक 6 महीने पश्चात् उनके भाषा-विकास का निरीक्षण और मापन करेंगे।

दीर्घकालीन अध्ययन प्रणाली की उपयोगिता

- इस विधि में बच्चों के एक ही समूह का अध्ययन चलता रहता है, अत: इस प्रणाली में नमूना त्रुटियों की संभावना नहीं रहती है और न ही प्रतिदर्श की समस्या रहती है।
- इस प्रणाली की सहायता से व्यक्तिगत स्तर पर प्रत्येक बालक का अध्ययन होता रहता है और समूह स्तर पर भी अध्ययन होता रहता है।
- इस विधि में विकास प्रक्रियाओं का अनुमानात्मक ज्ञान प्राप्त न होकर शुद्ध ज्ञान प्राप्त होता है।
- विकास प्रक्रियाओं के संबंध का अध्ययन करना अपेक्षाकृत सरल होता है।
- बालक के व्यवहार विकास पर पड़ने वाले सामाजिक-सांस्कृतिक या वातावरण संबंधी परिवर्तनों के प्रभाव का अध्ययन इस प्रणाली द्वारा किया जा सकता है।
- किसी निश्चित अवधि में बालक के विकास के गुण तथा मात्रा आदि का ज्ञान भी इस प्रणाली द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

साक्षात्कार विधि *(Interview Method)*

मनोविज्ञान में साक्षात्कार विधि का उपयोग काफी समय से होता रहा है। आधुनिक युग में इस विधि का महत्त्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। इस विधि में साक्षात्कारकर्त्ता और सूचनादाता दोनों ही आमने-सामने बैठते हैं तथा साक्षात्कारकर्त्ता सूचनादाता से अध्ययन समस्या के संबंध में सूचना प्राप्त करने का प्रयास करता है। आइजनेक के अनुसार, "साक्षात्कार वह साधन है जिसके द्वारा मौखिक अथवा लिखित सूचना प्राप्त की जाती है।"

साक्षात्कार विधि के प्रकार

साक्षात्कार विधि के प्रकार निम्नलिखित हैं-

- **प्रामाणिक साक्षात्कार विधि:** साक्षात्कार की इस विधि द्वारा अध्ययन करते समय अध्ययन समस्या के संबंध में विभिन्न प्रकार के प्रश्न पहले से ही तैयार कर लिये जाते हैं। अध्ययन इकाइयों से पूर्व निश्चित क्रम के अनुसार ही प्रश्नों को उसी क्रम में पूछा जाता है।
- **अप्रामाणिक साक्षात्कार विधि:** अप्रामाणिक साक्षात्कार में अध्ययन करते समय अध्ययन समस्या के संबंध में प्रश्न पहले से ही तैयार नहीं किये जाते हैं और न ही प्रश्नों की संख्या निश्चित होती है। अध्ययनकर्त्ता अध्ययन समस्या के संबंध में कोई भी प्रश्न पूछने के लिये स्वतंत्र होता है। अप्रामाणिक साक्षात्कार विधि अधिक विश्वसनीय नहीं होती है, फिर भी इस विधि द्वारा प्रयोज्य को समझने का अधिक अवसर रहता है, क्योंकि इसमें प्रश्न किसी भी प्रकार के पूछ सकते हैं।

साक्षात्कार विधि का महत्त्व

साक्षात्कार विधि का महत्त्व निम्नलिखित है-

- ऐसी वस्तु जिन्हें हम देख नहीं सकते हैं उनका अध्ययन साक्षात्कार विधि द्वारा किया जा सकता है।
- बाल मनोविज्ञान की ऐसी घटनाएँ जिनका वैयक्तिक रूप से निरीक्षण नहीं कर सकते हैं, का अध्ययन इस विधि द्वारा किया जा सकता है।
- इस विधि में यदि अध्ययनकर्त्ता प्रशिक्षित होता है और उपयुक्त नियंत्रण के साथ दी हुई सामग्री एकत्र करता है, तो उससे विश्वसनीय परिणाम प्राप्त होते हैं।

प्रश्नावली विधि *(Questionnaire Method)*

मनोविज्ञान के क्षेत्र में जब अध्ययन इकाइयों का क्षेत्र विस्तृत होता है तथा सूचनादाताओं की संख्या अधिक होती है, तब इस विधि का प्रयोग किया जाता है।

- गुडे तथा हाट के अनुसार, "प्रश्नावली एक प्रकार का उत्तर प्राप्त करने का साधन है, जिसका स्वरूप ऐसा होता है कि उत्तरदाता उसकी पूर्ति स्वयं करता है।"

प्रश्नावली तैयार करते समय निम्नलिखित तथ्यों का ध्यान रखना चाहिये-

- प्रश्नावली का आकार या प्रश्नों की संख्या बहुत अधिक नहीं होनी चाहिये।
- प्रश्न लंबे और कठिन नहीं होने चाहिये।
- प्रश्न स्पष्ट होने चाहिये।
- प्रश्न, प्रश्नावली में पहले सरल फिर कठिन होने चाहिये।
- रुचिपूर्ण या ध्यान आकर्षित करने वाले प्रश्न होने चाहिये।

प्रश्नावली विधि के प्रकार

प्रश्नावली विधि के प्रकार निम्नलिखित हैं-

- **अप्रतिबंधित प्रश्नावली :** यह प्रश्नावली वह है जिसमें सूचनादाता पर कोई प्रतिबंध नहीं होता है और वह खुलकर उत्तर दे सकता है। उदाहरण के लिये आपके विद्यालय की क्या-क्या सीमाएँ हैं? आपके विद्यालय में किन-किन परिवर्तनों की तुरंत आवश्यकता है?
- **प्रतिबंधित प्रश्नावली :** ऐसी प्रश्नावली जिसमें सूचनादाता के किसी चीज़ के जवाब पर प्रतिबंध होता है। उसे केवल चुने हुए उत्तरों में से ही उत्तर देना होता है। उदाहरण के लिये शिक्षक से भय लगता है? हाँ/नहीं।
- **चित्र प्रश्नावली :** इस प्रकार की प्रश्नावली में प्रश्न चित्रों के रूप में होते हैं।

परीक्षण विधियाँ या मनोमिति विधियाँ *(Test Methods or Psychometric Methods)*

बैस्ट के अनुसार, "मनोवैज्ञानिक परीक्षण एक उपकरण है जिसे व्यवहार के किसी पक्ष के मापन एवं गणना के लिये तैयार किया जाता है।"

मनोवैज्ञानिक परीक्षण वह उपकरण है जिसे विशेषज्ञ वैज्ञानिक ढंग से तैयार करते हैं और जिसकी सहायता से व्यवहार के कुछ पहलुओं का मापन करते हैं। मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के द्वारा भी व्यक्तियों के व्यवहार के विभिन्न पहलुओं को मापा जाता है। वे परीक्षण मानकीकृत, वस्तुनिष्ठ, विश्वसनीय तथा वैध होते हैं।

वैयक्तिक इतिहास विधि *(Individual/Case History Method)*

- बीसेंज तथा बीसेंज के अनुसार, "वैयक्तिक इतिहास अध्ययन विधि एक प्रकार की गुणात्मक व्याख्या है, जिसमें एक व्यक्ति, एक परिस्थिति या एक संस्था का अति सावधानी से पूर्ण अध्ययन किया जाता है।"
- शॉ (Shaw) के अनुसार, "वैयक्तिक इतिहास विधि एक विधि, एक संस्था, एक समुदाय या समूह हो सकता है जिसे अध्ययन की इकाई माना जाता है।"
- यह विधि मानव व्यवहार का उसके संपूर्ण ढाँचे में अध्ययन तथा उपकल्पनाओं के निर्माण में सहायक वैयक्तिक परिस्थितियों के विश्लेषण एवं तुलना से संबंधित है।

वैयक्तिक इतिहास विधि के लाभ

इस विधि के लाभ निम्नलिखित हैं-

इस विधि द्वारा जब समस्या का अध्ययन किया जाता है, तो गहन अध्ययन के आधार पर सामान्यीकरण सरलता से किया जा सकता है।

इस विधि की सहायता से विचलित तथ्यों को ढूँढ़ा जा सकता है।

इस विधि द्वारा अध्ययन में समस्या के संबंध में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है।

समाजमिति विधि *(Sociometric Method)*

ब्रानफेनब्रेनर के अनुसार, "समूह में व्यक्तियों के मध्य सीमा और स्वीकृति एवं अस्वीकृति को मापकर सामाजिक स्थिति, ढाँचों के विकास को ज्ञात करने, वर्णन करने और मूल्यांकन करने की एक विधि है।"

इस विधि के द्वारा एक समूह के सदस्यों के बीच पाई जाने वाली स्वीकृति और अस्वीकृति, आकर्षण और विकर्षण को मापा जाता है। इस विधि का उपयोग समाज मनोविज्ञान में और बाल मनोविज्ञान में अत्यधिक किया जाता है।

प्रक्षेपण विधियाँ *(Projection Methods)*

प्रक्षेपण शब्द का उपयोग मनोविज्ञान में दो अर्थों में हुआ है। इस शब्द का प्रथम उपयोग मानसिक मनोरचनाओं के रूप में हुआ है तथा इसका द्वितीय उपयोग प्रक्षेपण विधियों के रूप में हुआ है। प्रक्षेपण शब्द का मानसिक मनोरचनाओं के रूप में उपयोग का श्रेय महान मनोवैज्ञानिक फ्रॉयड को है।

प्रक्षेपण विधि के उपयोग

प्रेक्षेपण विधि के उपयोग निम्नलिखित हैं-

- इन विधियों के द्वारा बच्चों में समझ तथा अचेतन की अभिप्रेरणाओं और व्यक्तित्व-संरचना का अध्ययन किया जा सकता है।
- इन अध्ययन विधियों के द्वारा व्यक्ति के संवेगों, अभिप्रेरणाओं, अनुभवों, विचारों और अभिवृत्तियों का अध्ययन विश्वसनीय ढंग से किया जा सकता है।
- इन विधियों की सहायता से अचेतन स्तर तथा आंतरिक विचारों, भावनाओं और ग्रंथियों का अध्ययन किया जा सकता है।
- इन विधियों का उपयोग सामान्य तथा असामान्य दोनों प्रकार के व्यक्तित्व पर किया जा सकता है।

अतिमहत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी तथ्य

- ❑ बाल मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जो प्राणी के विकास का अध्ययन जन्म से परिपक्वावस्था तक करती है।
- ❑ बाल विकास व्यवहारों का विज्ञान है जो बालक के व्यवहार का अध्ययन गर्भावस्था से लेकर मृत्युपर्यंत करता है।
- ❑ प्रत्येक शिक्षार्थी स्वयं में विशिष्ट है। इसका अर्थ है कि कोई भी दो शिक्षार्थी अपनी योग्यताओं, रुचियों और प्रतिभाओं में एकसमान नहीं होते।
- ❑ धैर्य और दृढ़ता को प्राथमिक स्तर पर एक शिक्षक में सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता माना जाता है।
- ❑ शिक्षक एवं विद्यार्थी के मध्य का संबंध स्नेह, विश्वास और सम्मान का होना चाहिये।
- ❑ एक अच्छा शिक्षक विद्यार्थियों के मध्य सहयोग की भावना को बढ़ावा देता है।
- ❑ बच्चों की जिज्ञासा तत्काल शांत की जानी चाहिये, जब विद्यार्थी द्वारा जिज्ञासा की गई है।

- ❑ विद्यार्थियों में श्रम की स्फूर्ति का विकास करने के लिये समय-समय पर विद्यार्थियों को श्रम करने का अवसर देना चाहिये।
- ❑ बाल विकास की परिभाषा का अध्ययन क्षेत्र है, जो किसी बच्चे के संज्ञानात्मक सामाजिक तथा दूसरे समर्थो के क्रमिक विकास के लिये उत्तरदायी होगा।
- ❑ मनोचित्रण का संदर्भ है- मन के कार्यों का अन्वेषण।
- ❑ बाल विकास के सिद्धांत के अनुसार विकास परिपक्वन तथा अनुभव के बीच अन्योन्यक्रिया की वजह से घटित होता है।
- ❑ प्राथमिक शिक्षक के लिये बाल मनोविज्ञान का ज्ञान आवश्यक है, क्योंकि यह बच्चों के व्यवहार को समझने में शिक्षक की सहायता करता है।
- ❑ बाल मनोविज्ञान का क्षेत्र गर्भावस्था से किशोरावस्था की विशेषताओं के अध्ययन तक है।

अभ्यास प्रश्न

1. मूल्यांकन पद्धतियों का लक्ष्य होना चाहिये–
   (a) विद्यार्थियों की ज़रूरतों एवं आवश्यकताओं की पहचान करना।
   (b) पुरस्कार-वितरण हेतु उच्च-अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की पहचान करना।
   (c) विद्यार्थियों को नामांकित करना।
   (d) योग्यता-आधारित समूहों में विद्यार्थियों को विभाजित करना।

   CTET, 2021

2. 'निकटस्थ विकास का क्षेत्र' क्या है?
   (a) वह प्रक्रिया जिसमें शुरू में विभिन्न समझ वाले दो व्यक्ति समान समझ पर पहुँचते हैं।
   (b) वह प्रक्रिया जिसमें बच्चे, समाज के वयस्क सदस्यों द्वारा निर्धारित विधि से कार्य करते हैं।
   (c) बच्चों के वर्तमान स्तर पर स्वतंत्र प्रदर्शन और वयस्क व अधिक कौशल वाले समकक्षियों की सहायता से बच्चे द्वारा उपार्जित किये जाने वाले प्रदर्शन के मध्य का क्षेत्र है।
   (d) विभिन्न प्रकार के कार्य जो कि अपनी आयु के अनुसार बच्चे को करने चाहिये परंतु वह नहीं कर सकता है।

   CTET, 2021

3. निम्नलिखित में से किस मनोवैज्ञानिक ने किशोरावस्था को परिभाषित किया कि "किशोरावस्था वह काल (अवधि) है, जिसमें बालक और बालिकाएँ मानसिक, संवेगात्मक, सामाजिक और शारीरिक रूप से बाल्यावस्था से प्रौढ़ावस्था की ओर जाते हैं?
   (a) ए.टी. जरशिल्ड (b) ई.वी. हरलॉक
   (c) आई.पी. डेविस (d) एच. सोरेनसन

   HTET, 2019

4. सूझ या अंतर्दृष्टि के सिद्धांत का प्रतिपादन किसने किया है?
   (a) थॉर्नडाइक (b) गेस्टाल्टवादी मनोवैज्ञानिक
   (c) हेगार्टी (d) स्किनर

   UPTET, 2017

5. तनाव को कम करने के अप्रत्यक्ष ढंग कहलाते हैं–
   (a) समस्या समाधान विधि (b) रक्षात्मक यांत्रिकता
   (c) व्यक्तिगत विधि (d) इनमें से कोई नहीं

   RTET, 2016

6. इनमें से कौन-सा बाल विकास का एक सिद्धांत है?
   (a) विकास परिपक्वन तथा अनुभव के बीच अन्योन्यक्रिया की वजह से घटित होता है
   (b) विकास प्रत्येक बच्चे की गति का सही ढंग से अनुमान लगा सकता है
   (c) अनुभव विकास का एकमात्र निर्धारक है
   (d) विकास प्रबलन तथा दंड के द्वारा सुनिश्चित किया जाता है

   CTET, 2015

7. निम्नलिखित में से कौन-सा बाल विकास का एक सिद्धांत नहीं है?
   (a) सभी विकास एक क्रम का पालन करते हैं
   (b) विकास के सभी क्षेत्र महत्त्वपूर्ण हैं
   (c) सभी विकास परिपक्वन तथा अनुभव की अंत:क्रिया का परिणाम होते हैं
   (d) सभी विकास तथा अधिगम एक समान गति से आगे बढ़ते हैं

   CTET, 2015

8. अपनी कक्षा के बच्चों को उनकी अपनी अवधारणाओं को बदलने में आप किस प्रकार सहायता करेंगे?
   (a) यदि बच्चों की अवधारणाएँ गलत हों तो उन्हें दंड देकर
   (b) तथ्यात्मक जानकारी देकर
   (c) अवधारणाओं के बारे में बच्चों को अपनी समझ को व्यक्त करने का अवसर देकर
   (d) बच्चों को सूचनाएँ लिखाकर उन्हें याद करने को कहकर

9. बाल मनोविज्ञान का क्षेत्र है–
   (a) केवल शैशवावस्था की विशेषताओं का अध्ययन
   (b) केवल गर्भावस्था की विशेषताओं का अध्ययन
   (c) केवल बाल्यावस्था की विशेषताओं का अध्ययन
   (d) गर्भावस्था से किशोरावस्था की विशेषताओं का अध्ययन

   UPTET, 2015

10. वह अवस्था जो कि माता के 21वें गुणसूत्र जोड़े के अलग न हो पाने के कारण होती है, कहलाती है–
    (a) डाउन्स सिंड्रोम (b) टर्नर सिंड्रोम
    (c) क्लीनफेल्टर सिंड्रोम (d) विल्सन सिंड्रोम

    UPTET, 2015

11. एक PT (Play) शिक्षक क्रिकेट के खेल में अपने शिक्षार्थियों के क्षेत्ररक्षण को सुधारना चाहता है। निम्नलिखित में से कौन-सी युक्ति शिक्षार्थियों को अपना लक्ष्य प्राप्त करने में सर्वाधिक सहायक है?
(a) शिक्षार्थियों को क्षेत्ररक्षण (Fielding) का अधिक अभ्यास करवाना
(b) शिक्षार्थियों को यह बताना कि क्षेत्ररक्षण सीखना उनके लिये किस प्रकार महत्त्वपूर्ण है
(c) बेहतर क्षेत्ररक्षण और सफलता की दर के पीछे के तर्क को स्पष्ट करना
(d) क्षेत्ररक्षण को प्रदर्शित करना और शिक्षार्थी अवलोकन करना **CTET, 2013**

12. प्राथमिक स्तर पर एक शिक्षक में निम्नलिखित में से किसे सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता मानना चाहिये?
(a) पढ़ाने की उत्सुकता
(b) धैर्य और दृढ़ता
(c) शिक्षण-पद्धतियों (Teaching Methods) और विषयों के ज्ञान में दक्षता
(d) अति मानक भाषा (Excess Standard Language) में पढ़ाने में दक्षता (Skill) **CTET, 2011**

13. प्रत्येक शिक्षार्थी स्वयं में विशिष्ट (Unique) है। इसका अर्थ है कि–
(a) शिक्षार्थियों में न तो कोई समान विशेषताएँ होती हैं और न ही उनके लक्ष्य समान होते हैं
(b) सभी शिक्षार्थियों के लिये एकसमान पाठ्यचर्चा संभव नहीं है
(c) एक विषमरूपी कक्षा (Heterogeneous Classroom) में शिक्षार्थियों की क्षमताओं को विकसित करना असंभव है
(d) कोई भी दो शिक्षार्थी अपनी योग्यताओं, रुचियों और प्रतिभाओं में एकसमान नहीं होते **CTET, 2011**

14. शिक्षक एवं विद्यार्थी के मध्य संबंध होना चाहिये-
(a) स्नेह का (b) विश्वास का
(c) सम्मान का (d) ये सभी **UTET, 2011**

15. एक अच्छा अध्यापक विद्यार्थियों के मध्य बढ़ावा देता है–
(a) प्रतियोगिता (Competition) की भावना को
(b) सहयोग (Co-operation) की भावना को
(c) प्रतिद्वंद्विता (Rivalry) की भावना को
(d) तटस्थता (Neutrality) की भावना को **UTET, 2011**

16. शिवानी द्वारा पूछे गए एक प्रश्न का उत्तर शिक्षक तत्काल नहीं दे सकता है। शिक्षक की प्रतिक्रिया क्या होनी चाहिये?
(a) शिक्षक द्वारा शिवानी को चुप करा देना चाहिये
(b) शिक्षक द्वारा शिवानी का ध्यान बँटा देना चाहिये
(c) शिक्षक को कहना चाहिये, मैं नहीं जानता हूँ
(d) शिक्षक द्वारा इस प्रश्न का सही उत्तर बाद में समझकर देना चाहिये

17. बच्चों की जिज्ञासा (Curiosity) शांत करनी चाहिये–
(a) जब शिक्षक फुर्सत में हो
(b) जब विद्यार्थी फुर्सत में हो
(c) कुछ समय के पश्चात्
(d) तत्काल, जब विद्यार्थी द्वारा जिज्ञासा की गई है **UTET, 2011**

18. शिक्षक को ज्ञान होना चाहिये?
(a) अध्यापन विषय (Teaching Subject) का
(b) बाल मनोविज्ञान (Child Psychology) का
(c) शिक्षा संहिता (Education Code) का
(d) अध्यापन विषय एवं बाल मनोविज्ञान का **UTET, 2011**

19. बालक का विकास परिणाम है–
(a) वंशानुक्रम का
(b) वातावरण का
(c) वंशानुक्रम तथा वातावरण की अंत: प्रक्रिया का
(d) आर्थिक कारकों का **CGTET, 2011**

20. विद्यालयों में श्रम की स्फूर्ति का विकास करने के लिये–
(a) शिक्षक अपने ही श्रम में प्रवृत्ति दिखाएगा
(b) शिक्षक श्रम के महत्त्व पर व्याख्यान करेगा
(c) समय-समय पर विद्यार्थियों को श्रम करने का अवसर देना पड़ेगा
(d) विद्यार्थियों को श्रम करने वाले लोगों का उदाहरण देना पड़ेगा **UPTET, 2011**

21. बाल विकास की परिभाषा का अध्ययन क्षेत्र है, जो
(a) मानवीय सामर्थ्यों (Human Abilities) में परिवर्तन का परीक्षण करता है
(b) जीवन अवधि के दौरान व्यवहार की व्याख्या ढूँढ़ेगा
(c) बच्चों की वयस्क तथा वरिष्ठ नागरिकों के साथ तुलना करेगा
(d) किसी बच्चे के संज्ञानात्मक सामाजिक तथा दूसरे सामर्थ्यों के क्रमिक विकास के लिये उत्तरदायी होगा **UPTET, 2011**

22. प्राथमिक शिक्षक के लिये बाल मनोविज्ञान का ज्ञान आवश्यक है, क्योंकि-
(a) यह बच्चों को अनुशासित बनाने में सहायता करता है
(b) परीक्षा के परिणाम में उन्नति होती है
(c) यह बच्चों को अभिप्रेरित करने के लिये सुविधाजनक तरीका बन जाता है
(d) यह बच्चों के व्यवहार को समझने में शिक्षक की सहायता करता है **UPTET, 2011**

उत्तरमाला

1. (a)	2. (c)	3. (a)	4. (b)	5. (b)	6. (a)	7. (d)	8. (c)	9. (d)	10. (a)
11. (a)	12. (b)	13. (d)	14. (d)	15. (b)	16. (d)	17. (d)	18. (d)	19. (c)	20. (c)
21. (d)	22. (d)								

4 आनुवंशिकता एवं वातावरण का प्रभाव (Influence of Heredity and Environment)

आनुवंशिकता का अर्थ (Meaning of Heredity)

माता-पिता से उनके बच्चों में शारीरिक गुणों तथा संगठनों के जींस द्वारा होने वाले संचरण का अध्ययन करने वाले विज्ञान को आनुवंशिकी की संज्ञा दी जाती है। इन्हीं जींस द्वारा व्यक्ति अपने माता-पिता से उनके गुणों एवं शारीरिक संगठनों को प्राप्त करता है। इसे ही आनुवंशिकता कहा जाता है। अन्य शब्दों में कहें तो आनुवंशिक या वंशानुगत गुणों का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानांतरण होने की प्रक्रिया को आनुवंशिकता कहा जाता है। आनुवंशिकता के माध्यम से बालकों में शारीरिक, मानसिक, सामाजिक गुणों का स्थानांतरण होता है। इस प्रकार आनुवंशिकता से तात्पर्य शारीरिक एवं मानसिक गुणों के संचरण से है जो माता-पिता से बच्चों में जींस के माध्यम से प्रवेश करते हैं।

आनुवंशिकता की परिभाषा (Definition of Heredity)

विश्व के विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा आनुवंशिकता को निम्नलिखित रूप से परिभाषित किया गया है-

- **रूथ वेंडीक्ट** के अनुसार, "वंशानुक्रम माता-पिता से संतान को प्राप्त होने वाले गुणों का नाम है।"
- **बी.एन. झा** के अनुसार, "वंशानुक्रम व्यक्ति की जन्मजात विशेषताओं का पूर्ण योग है।"
- **पी. जिस्बर्ट** के अनुसार, "प्रकृति में प्रत्येक पीढ़ी का कार्य माता-पिता द्वारा संतानों में जैवकीय या मनोवैज्ञानिक विशेषताओं का हस्तांतरण करना है। इस प्रकार हस्तांतरित विशेषताओं की मिली-जुली गठरी को वंशानुक्रम के नाम से पुकारा जाता है।"
- **वुडवर्थ** के अनुसार, "वंशानुक्रम में वे सभी बातें आ जाती हैं, जो जीवन का आरंभ करते समय, जन्म के समय नहीं वरन् गर्भाधान के समय, जन्म से लगभग नौ माह पूर्व, व्यक्ति में उपस्थित थीं।"
- **डगलस एवं हॉलैंड** के अनुसार, "एक व्यक्ति से वंशानुक्रम में वे सब शारीरिक बनावटें, शारीरिक विशेषताएँ, क्रियाएँ या क्षमताएँ सम्मिलित रहती हैं, जिनको वह अपने माता-पिता, अन्य पूर्वजों या प्रजाति से प्राप्त करता है।"
- **जेम्स ड्रेवर** के अनुसार, "माता-पिता की शारीरिक एवं मानसिक विशेषताओं का संतानों में हस्तांतरण होना वंशानुक्रम है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट होता है कि वंशक्रम की धारणा का स्वरूप अमूर्त होता है। इसकी अनुभूति व्यवहार तथा व्यक्ति की अन्य शारीरिक, मानसिक विशेषताओं द्वारा ही होती है।

आनुवंशिकता के सिद्धांत (Theories of Heredity)

आनुवंशिकता मनोवैज्ञानिकों तथा जीववैज्ञानिकों के लिये अत्यंत रोचक और रहस्यमय विषय रहा है। आनुवंशिकता किन नियमों और सिद्धांत पर आधारित है, यह अध्ययन के नए आयाम प्रस्तुत करता है। इस विषय को आधार बनाकर आनुवंशिकता के कुछ सिद्धांत प्रतिपादित किये गए जिनका विवरण निम्नलिखित है-

बीजकोष की निरंतरता का सिद्धांत

इस सिद्धांत का प्रतिपादन जर्मन जीवविज्ञानी और आनुवंशिकी विज्ञान के संस्थापकों में से एक ऑगस्ट फ्रेडरिक वीजमैन (1843-1914) ने किया था। उन्होंने अपने अनेक अध्ययनों के पश्चात् बताया कि शरीर का निर्माण करने वाला मूल जीवाणु कभी नष्ट नहीं होता। यह अण्डकोष और शुक्रकोष के द्वारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होता रहता है। इस प्रकार मूल जीवाणु में हस्तांतरित होने की विशेषता निहित होती है, इसीलिये एक व्यक्ति अपने पूर्वजों का प्रतिरूप होता है, उसमें कई पीढ़ियों तक पूर्वजों के गुण सन्निहित रहते हैं।

वीजमैन द्वारा प्रस्तुत इस सिद्धांत को स्वीकार नहीं किया गया। इसका मुख्य कारण यह है कि यह वंशक्रम की संपूर्ण प्रक्रिया की व्याख्या प्रस्तुत नहीं करता।

समानता का सिद्धांत

इस सिद्धांत के अर्थ को स्पस्ट करते हुए डेनिस चिकित्सक सोरेंसन ने लिखा है कि बुद्धिमान माता-पिता के बच्चे बुद्धिमान, साधारण माता-पिता के बच्चे साधारण और मंदबुद्धि माता-पिता के बच्चे मंदबुद्धि होते हैं। इसी प्रकार शारीरिक रचना की दृष्टि से भी बच्चे माता-पिता के समान होते हैं। अत: इस नियम के अनुसार जैसे माता-पिता होते हैं वैसी ही उनकी संतान होती है (Like Tends of Beget Like)।

इस सिद्धांत को भी पूर्णता प्राप्त नहीं है, क्योंकि प्राय: ऐसा देखा जाता है कि काले माता-पिता की संतान गोरी, मंदबुद्धि माता-पिता की संतान बुद्धिमान होती है।

प्रत्यागमन का सिद्धांत

इस सिद्धांत के अनुसार बालक में अपने माता-पिता के विपरीत गुण पाए जाते हैं। इसके संबंध में सोरेंसन ने लिखा है कि बहुत प्रतिभाशाली माता-पिता के बच्चों में कम प्रतिभा होने की प्रवृत्ति और बहुत निम्नकोटि के माता-पिता के बच्चों में कम निम्नकोटि होने की प्रवृत्ति ही प्रत्यागमन है। बुद्धिमान माता-पिता की बुद्धिमान संतान तथा कम बुद्धि वाले माता-पिता की मंदबुद्धि संतान होना एक स्वाभाविक बात है, लेकिन यदि इसके विपरीत क्रिया होती है तो यह प्रत्यागमन (Regression) की श्रेणी में

आता है। इस नियम के अनुसार बालक अपने माता-पिता के विशिष्ट गुणों का त्याग करके सामान्य गुणों को ग्रहण करते हैं।

जीव सांख्यिकी सिद्धांत

फ्राँसिस गाल्टन ने इस सिद्धांत का प्रतिपादन किया था। उन्होंने अपने अनेक अध्ययनों के पश्चात् उनके निष्कर्षों की सांख्यिकीय माध्यम से व्याख्या प्रस्तुत की। यही कारण है कि इसे जीव सांख्यिकी नियम कहा जाता है। गाल्टन महोदय का मानना है कि संतान अपने माता-पिता से ही सभी गुणों को नहीं प्राप्त करती, बल्कि पितामह और उससे भी कई पीढ़ियों के आगे की विशेषताओं को प्राप्त करती है। इतना ही नहीं, केवल पितृपक्ष से ही गुण उनमें नहीं आते हैं वरन् मातृपक्ष से भी गुणों का संक्रमण उसी अनुपात में होता है।

अर्जित गुणों के संक्रमण का सिद्धांत

इस सिद्धांत के अनुसार, माता-पिता के जीवन में अर्जित किये जाने वाले गुण उनकी संतानों को प्राप्त नहीं होते हैं। विकासवादी मनोवैज्ञानिक लैमार्क ने इस नियम को अस्वीकार करते हुए कहा कि मानव द्वारा अपने जीवनकाल में जो कुछ भी अर्जित किया जाता है वह उनके द्वारा उत्पन्न की जाने वाली संतानों में संक्रमित किया जाता है। इसका उदाहरण देते हुए लैमार्क ने कहा कि जिराफ की गर्दन पहले लंबी नहीं थी, परंतु परिस्थितिवश जीवननिर्वाह के लिये वह अपनी गर्दन ऊपर उठाता रहा, क्योंकि बिना गर्दन ऊपर किये वह पत्ती नहीं खा सकता था और इसी तरह अन्य पीढ़ी के जिराफ भी करते रहे, फलतः उस प्रजाति की गर्दन लंबी हो गई।

इस संदर्भ में डार्विन का विचार लैमार्क से कुछ भिन्न है। जहाँ लैमार्क का कहना है कि जीवन रक्षा के लिये प्राणी जो विशिष्ट गुण अर्जित करता है। उनका संक्रमण होता है। वहीं डार्विन का मत है कि प्राणी या व्यक्ति को जीवित रहने के लिये संघर्ष करना पड़ता है जिनमें संघर्ष की क्षमता होती है, वे जीवित रह जाते हैं जो कमज़ोर होता है, संघर्ष नहीं कर सकता है, वह नष्ट हो जाता है।

विभिन्नता का नियम

इस नियम के अनुसार बालक अपने माता-पिता के बिलकुल समान न होकर उनसे कुछ भिन्न होते हैं। इसी तरह एक ही माता-पिता के बालक एक-दूसरे से समान होते हुए भी बुद्धि, रंग और स्वभाव में एक-दूसरे से भिन्न होते हैं। कभी-कभी उनमें पर्याप्त शारीरिक और मानसिक विभिन्नताएँ पाई जाती हैं। इसका कारण बताते हुए सोरेंसन ने कहा है, "इस विभिन्नता के कारण माता-पिता के उत्पादक-कोषों की विशेषताएँ हैं। उत्पादक-कोषों के अनेक पित्रयेक होते हैं जो विभिन्न प्रकार से संयुक्त होकर एक-दूसरे से भिन्न बच्चों का निर्माण करते हैं।"

भिन्नता का नियम प्रतिपादित करने वालों में डार्विन और लैमार्क ने यह विचार प्रस्तुत किया कि उपयोग न करने वाले अवयव तथा विशेषताओं का लोप आगामी पीढ़ियों में हो जाता है। नवोत्पत्ति (Mutation) और प्राकृतिक चयन (Natural Selection) द्वारा वंशक्रमीय विशेषताओं का उन्नयन होता है।

मेंडल का नियम

इस नियम के अनुसार वर्णसंकर प्राणी या वस्तु में अपने मौलिक या सामान्य रूप की ओर अग्रसर होती है। इस नियम को चेकोस्लोवाकिया के मेंडल नामक पादरी ने प्रतिपादित किया।

- मेंडल का मटर पर प्रयोग- मेंडल ने अपना प्रयोग मटर के पौधे पर किया।
- जिसमें उन्होंने अपने बगीचे में छोटी व बड़ी मटर बराबर संख्या में मिलाकर बोई, तत्पश्चात् उगने वाली मटर में सब वर्णसंकर जाति की थीं। मेंडल ने इन वर्णसंकर मटरों को फिर बोया और इस प्रकार उन्होंने उगने वाली मटर को कई बार बोया, अंत में उन्हें ऐसी मटर मिली जो वर्णसंकर होने की बजाय शुद्ध थी।
- शुद्ध बड़ी मटर + शुद्ध छोटी मटर = वर्णसंकर मटर
- वर्णसंकर मटर = शुद्ध बड़ी मटर (25%), वर्णसंकर बड़ी मटर (50%), शुद्ध छोटी मटर (25%)
- मेंडल का चूहों पर प्रयोग- मटर की तरह मेंडल ने चूहों पर भी प्रयोग किया।
- इस प्रयोग में उन्होंने सफेद और काले चूहों को एक साथ रखा, जिसमें उन्होंने देखा कि उन्हें आगे आने वाली चूहों की इस पीढ़ी में काले प्रजाति के चूहे प्राप्त हुए।

  काला चूहा + सफेद चूहा = काला चूहा, काला चूहा
- एक बार फिर उन्होंने वर्णसंकर काले चूहों को एक साथ रखा जिसमें उन्होंने देखा कि आगे आने वाली चूहों को इस पीढ़ी में काले और सफेद दोनों प्रजाति के चूहे उत्पन्न हुए।
- काला वर्णसंकर चूहा + काला वर्णसंकर चूहा = काला चूहा, सफेद चूहा

अपने प्रयासों के आधार पर मेंडल ने सिद्धांत प्रतिपादित किया कि वर्णसंकर प्राणी या वस्तुएँ अपने मौलिक या सामान्य रूप की ओर अग्रसर होती हैं। यही सिद्धांत मेंडलवाद के नाम से प्रसिद्ध है। इसकी व्याख्या करते हुए बी.एन. झा ने लिखा, "जब वर्णसंकर अपने स्वयं के पितृ या मात्र उत्पादक कोषों का निर्माण करते हैं, तब वे प्रमुख गुणों से युक्त माता-पिता के समान शुद्ध प्रकारों को जन्म देते हैं।"

बच्चों पर आनुवंशिकता का प्रभाव
(Impact of Heredity on Children)

बच्चों के व्यक्तित्व के प्रत्येक पहलू पर आनुवंशिकता का प्रभाव पड़ता है। इन प्रभावों का वर्णन निम्नलिखित है-

- **आनुवंशिकता का मूल शक्तियों पर प्रभावः** थॉर्नडाइक ने बच्चों के जीवन और विकास में उनकी मूल शक्तियों में वंशानुक्रम के प्रभाव को वरीयता दी है। थॉर्नडाइक का मानना है कि बच्चों की मूल शक्तियों का मुख्य कारण उसका वंशानुक्रम है।
- **आनुवंशिकता का शारीरिक लक्षणों पर प्रभावः** वंशानुक्रम का प्रभाव मानव के शारीरिक लक्षणों पर भी पड़ता है। कार्ल पियर्सन ने वंशानुक्रम के शारीरिक लक्षणों के प्रभावों के संबंध में अपना मत दिया है कि माता-पिता की लंबाई का असर उनकी संतानों पर भी पड़ता है, जो कि एक प्रकार का शारीरिक लक्षण है।

- **आनुवंशिकता का प्रजाति की श्रेष्ठता पर प्रभाव:** आनुवंशिकता का प्रजातियों की श्रेष्ठता पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इसके संबंध में क्लिनबर्ग ने अपने विचार देते हुए कहा है, "बुद्धि की श्रेष्ठता का कारण प्रजाति है। यही कारण है कि अमेरिका की श्वेत प्रजाति नीग्रो प्रजाति से श्रेष्ठ है।" हालाँकि क्लिनबर्ग के इस विचार को लेकर बहुत से मनोवैज्ञानिकों में मतभेद भी रहा है।
- **आनुवंशिकता का व्यावसायिक योग्यता पर प्रभाव:** कैटल व्यावसायिक योग्यता का मुख्य कारण वंशानुक्रम को ही मानते हैं। कैटल ने व्यावसायिक योग्यता में वंशानुक्रम प्रभाव का पता करने के लिये अमेरिका के 885 वैज्ञानिकों के परिवारों की योग्यता का अध्ययन किया और बताया कि कुल 885 वैज्ञानिक परिवारों में से व्यवसायी वर्ग से संबंध रखने वाले परिवारों की संख्या कुल संख्या का 2/5 थी, इसी प्रकार उत्पादक वर्ग के 1/2 और कृषि वर्ग के केवल 1/4 परिवार थे।
- **आनुवंशिकता का सामाजिक स्थिति पर प्रभाव:** विनशिप ने आनुवंशिकता का सामाजिक स्थिति पर प्रभाव के संबंध में अपने विचार देते हुए कहा है, गुणवान और प्रतिष्ठित माता-पिता की संतान भी अपने जीवनकाल में प्रतिष्ठा प्राप्त करती है। विनशिप ने आनुवंशिकता के सामाजिक स्थिति पर प्रभाव में अपना मत देने से पहले एडवर्ड और उनकी पत्नी एलिज़ाबेथ के परिवार का अध्ययन किया जो कि (एडवर्ड और एलिज़ाबेथ) एक प्रतिष्ठित परिवार से संबंध रखते थे। जिनके वंशजों ने प्रतिष्ठित पदों पर कार्य किया और उनके वंशजों में से एक अमेरिका का उपराष्ट्रपति भी बना।
- **आनुवंशिकता का चरित्र पर प्रभाव:** डगडेल का आनुवंशिकता का चरित्र पर प्रभाव के संबंध में मानना है कि चरित्रहीन माता-पिता की संतान चरित्रहीन होती है। और इसी प्रकार अच्छे चरित्र वाले माता-पिता की संतानें भी अच्छे चरित्र वाली होती हैं। डगडेल ने आनुवंशिकता का चरित्र पर प्रभाव पर अपना विचार 1877 ई. में ज्यूकस के वंशजों का अध्ययन करके दिया।
- **आनुवंशिकता का महानता पर प्रभाव:** गाल्टन का आनुवंशिकता का महानता पर प्रभाव के बारे में सीधा मत है कि व्यक्ति की महानता का कारण उसका वंशानुक्रम है। व्यक्ति का कद, वर्ण, स्वास्थ्य, बुद्धि, मानसिक शक्ति आदि उसके वंशानुक्रम पर आधारित होता है। आनुवंशिकता का महानता पर प्रभाव में गाल्टन कहते हैं कि- "महान न्यायाधीशों, राजनीतिज्ञों, सैनिक पदाधिकारियों, साहित्यकारों, वैज्ञानिकों और खिलाड़ियों के जीवन चरित्रों का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि इनके परिवारों में इन्हीं क्षेत्रों में महान कार्य करने वाले अन्य व्यक्ति भी हुए हैं।"
- **आनुवंशिकता का वृद्धि पर प्रभाव:** गोडार्ड ने आनुवंशिकता का वृद्धि पर प्रभाव पर कहा है कि मंदबुद्धि माता-पिता की संतान मंदबुद्धि और तेज़ बुद्धि के माता-पिता की संतान तीव्र बुद्धि वाली होती है। वंशानुक्रम के वृद्धि पर प्रभाव पर कोलेसनिक ने कहा है कि- "जिस सीमा तक व्यक्ति की शारीरिक रचना को उसके पित्रैक निश्चित करते हैं, उस सीमा तक उसके मस्तिष्क एवं स्नायु संस्थान की रचना, उसके अन्य लक्षण, उसकी खेल-कूद संबंधी कुशलता और उसकी गणित संबंधी योग्यता- ये सभी बातें उसकी आनुवंशिकता पर निर्भर होती हैं, पर वे बातें उसके वातावरण पर कहीं अधिक निर्भर होती हैं।"

वातावरण का अर्थ (Meaning of Environment)

वातावरण से तात्पर्य उन सभी से (जींस छोड़कर) होता है जो व्यक्ति को उत्तेजित और प्रभावित करते हैं। अन्य शब्दों में कहा जा सकता है कि व्यक्ति का वातावरण से तात्पर्य उन सभी तरह की उत्तेजनाओं (Stimulations) से होता है जो गर्भधारण से मृत्यु तक उसे प्रभावित करती हैं। भौगोलिक वातावरण में अनेक चीज़ें या उद्दीपन (Stimuli) हो सकते हैं, परंतु व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक वातावरण में सभी चीज़ें सम्मिलित हों ही, आवश्यक नहीं। कोई भी उद्दीपन या घटना व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक वातावरण में तभी सम्मिलित मानी जाती हैं जब वह व्यक्ति को प्रभावित करती है।

सामान्य शब्दों में वातावरण का अर्थ पर्यावरण से लगाया जाता है। पर्यावरण दो शब्दों से मिलकर बना हुआ है- परि एवं आवरण। परि का अर्थ होता है- चारों ओर तथा आवरण का अर्थ होता है- ढकने वाला। इस प्रकार से पर्यावरण का अर्थ हुआ जो हमें चारों ओर से घेरे हुए है, उसे हम पर्यावरण कहते हैं। मनुष्य जलवायु, वनस्पति, पहाड़, पठार, नदी, वस्तु आदि से घिरा हुआ है, यही सब मिलकर पर्यावरण का निर्माण करते हैं।

इसे वातावरणीय पोषण के नाम से भी जाना जाता है। वातावरण मानव जीवन के विकास पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव डालता है। मानव विकास में जितना योगदान आनुवंशिकता का है उतना ही वातावरण का भी है। इसीलिये कुछ मनोवैज्ञानिक वातावरण को सामाजिक वंशानुक्रम भी कहते हैं।

वातावरण की परिभाषा (Definition of Environment)

- **एनास्टैसी के अनुसार,** "पर्यावरण वह हर चीज़ है, जो व्यक्ति के जीवन के अलावा उसे प्रभावित करती है।"
- **जिसबर्ट के अनुसार,** "जो किसी एक वस्तु को चारों ओर से घेरे हुए है तथा उस पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालता है, वह पर्यावरण होता है।"
- **हॉलैंड के अनुसार,** "जीव जगत के प्राणियों के विकास, परिपक्वता, प्रकृति, व्यवहार तथा जीवनशैली को प्रभावित करने वाली समस्त शक्तियों, परिस्थितियों तथा घटनाओं को पर्यावरण में सम्मिलित किया जाता है और उन्हीं की सहायता से पर्यावरण का वर्णन किया जाता है।"
- **रॉस के अनुसार,** "वातावरण वह बाहरी शक्ति है जो हमें प्रभावित करती है।"
- **मैकाइवर के अनुसार,** "स्वयं प्राणी तथा उसके जीवन का ढाँचा, बीता हुआ जीवन एवं अतीत पर्यावरण के फल हैं। पर्यावरण जीवन के प्रारंभ से, यहाँ तक कि उत्पादक कोषों में भी निहित होता है।"
- **बोरिंग, लैंगफील्ड व वेल्ड के अनुसार,** "आनुवंशिकी के अलावा व्यक्ति को प्रभावित करने वाली वस्तु वातावरण है।"
- **वुडवर्थ के अनुसार,** "वातावरण में वे सभी बाह्य तत्त्व आ जाते हैं जिन्होंने व्यक्ति को जीवन आरंभ करने के समय से प्रभावित किया है।"

- **डगलस व हॉलैंड के अनुसार,** "वातावरण शब्द का प्रयोग उन सभी शक्तियों के सामूहिक रूप का वर्णन करने के लिये किया जाता है जो जीवित प्राणियों के जीवन, स्वभाव, व्यवहार, बुद्धि विकास और परिपक्वता पर पड़ते हैं।

वातावरण–संबंधी कारक (Environmental Factors)

वातावरण संबंधी कारकों को निम्नलिखित रूप से वर्णित किया जा सकता है–

- **भौतिक कारक:** इसके अंतर्गत प्राकृतिक और भौगोलिक परिस्थितियाँ आती हैं। मनुष्य के विकास पर जलवायु का प्रभाव पड़ता है। जहाँ ज़्यादा ठंड पड़ती है या जहाँ ज़्यादा गर्मी पड़ती है वहाँ मानव विकास समान नहीं होता है। ठंडे प्रदेश वाला व्यक्ति सुंदर, गोरा, स्वस्थ और बुद्धिमान होता है। धैर्य भी उनमें अधिक होता है। जबकि गर्म प्रदेश के लोग काले, मोटी चमड़ी वाले और आक्रामक स्वभाव के होते हैं।
- **सामाजिक कारक:** विश्व प्रसिद्ध दार्शनिक अरस्तू ने कहा था मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, यही कारण है कि उस पर समाज का प्रभाव अधिक दिखाई देता है। सामाजिक व्यवस्था, रहन–सहन, परंपराएँ, धार्मिक कार्य, रीति–रिवाज़, पारस्परिक अंत: क्रिया जैसे अनेक तत्त्व हैं जो मनुष्य के शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक विकास को किसी न किसी रूप में प्रभावित करते हैं। व्यक्ति से समाज का निर्माण होता है। जन्म से मृत्यु तक व्यक्ति किसी समाज में रहता है। उस समाज के व्यक्तियों और परिस्थितियों का प्रभाव उस व्यक्ति पर पड़ता रहता है। व्यक्ति के माता-पिता, परिवार, पास-पड़ोस, इष्टमित्र, समूह, विद्यालय आदि का प्रभाव उसके व्यक्तित्व पर पड़ता रहता है। अच्छे सामाजिक वातावरण में व्यवस्थित व्यक्तित्व एवं बुरे सामाजिक वातावरण में विकृत व्यक्तित्व का निर्माण होता है। ऐसे वातावरण में व्यक्ति जो कुछ सीखता है उसका प्रभाव उसके व्यक्तित्व पर पड़ता है।
- **आर्थिक कारक:** अर्थ का मतलब धन से लगाया जाता है, जो कि व्यक्ति के जीवन का अनिवार्य हिस्सा है। धन से केवल विलासिता संबंधी सामग्री ही नहीं बल्कि विकास के लिये अति आवश्यक पौष्टिक चीज़ें भी खरीदी जा सकती हैं। इससे मानव का शारीरिक विकास सुनिश्चित होता है। इस प्रकार आर्थिक वातावरण मानव की बौद्धिक क्षमता को प्रभावित करता है। अत: आर्थिक कारक मानव विकास का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है।
- **सांस्कृतिक कारक:** चूँकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है अत: समाज के विभिन्न घटक उसके जीवन का हिस्सा बन जाते हैं। धर्म और संस्कृति समाज के साथ-साथ मनुष्य को गहरे स्तर तक प्रभावित करते हैं। मानव का खान-पान, रहन-सहन, पूजा-पाठ, संस्कार और आचार-विचार आदि हमारे धर्म तथा संस्कृति का अभिन्न हिस्सा हैं। ऐसा देखा गया है कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाले धर्म अधिक प्रगति करते हैं। ठीक इसके विपरीत, जिन धर्मों में अंधविश्वास और रूढ़िवादिता का समावेश होता है उन धर्मों तथा उनसे जुड़ी संस्कृति का विकास मंद पड़ जाता है। अत: सांस्कृतिक कारक भी मानव विकास को प्रभावित करने वाला एक महत्त्वपूर्ण कारक है।

वातावरण का प्रभाव *(Empact of Environment)*

विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने मानव के विकास पर पड़ने वाले वातावरण के प्रभावों को निम्नलिखित रूप से वर्णित किया है–

- **शारीरिक अंतर का प्रभाव:** जर्मन मूल के अमेरिकी मानवविज्ञानी और 'अमेरिकी मानव विज्ञान के पिता' फ्रेंज बोअस का मानना है कि व्यक्ति के शारीरिक लक्षण वैसे तो वंशानुगत होते हैं, किंतु इन पर वातावरण का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों का कद छोटा होता है जबकि मैदानी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों का शरीर लंबा एवं गठीला होता है। अनेक पीढ़ियों से निवास स्थल में परिवर्तन करने के बाद उपर्युक्त लोगों के कद एवं रंग में अंतर वातावरण के प्रभाव के कारण देखा गया है। जैसे- जो जापानी या यहूदी अमेरिका में अनेक पीढ़ियों से निवास कर रहे हैं उनकी लंबाई भौगोलिक वातावरण के कारण बढ़ गई।
- **प्रजाति की श्रेष्ठता पर प्रभाव:** अमेरिकी मनोवैज्ञानिक क्लार्क का मानना है कि कुछ प्रजातियों की बौद्धिक श्रेष्ठता का कारण वंशानुगत न होकर वातावरण होता है। वे लोग इसलिये अधिक विकास कर पाते हैं, क्योंकि उनके पास श्रेष्ठ शैक्षिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक वातावरण उपलब्ध होता है। यदि एक महान् व्यक्ति के पुत्र को ऐसी जगह पर छोड़ दिया जाए जहाँ शैक्षिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक वातावरण उपलब्ध न हो, तो उसका अपने पिता की तरह महान् बनना संभव नहीं हो सकता। क्लार्क ने इसे अमेरिकन नीग्रो प्रजाति का उदाहरण प्रस्तुत करके समझाने का प्रयास किया। उन्होंने बताया कि नीग्रो प्रजाति की बुद्धि का स्तर इसलिये निम्न है क्योंकि उनको श्वेत प्रजातियों के समान शैक्षिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक वातावरण उपलब्ध नहीं रहे।
- **व्यक्तित्व पर प्रभाव:** अमेरिकी मनोवैज्ञानिक कूले के अनुसार, व्यक्तित्व के निर्माण में वंशानुक्रम की अपेक्षा वातावरण का अधिक प्रभाव पड़ता है। व्यक्तित्व पर वातावरण का प्रभाव दूरगामी होता है। कोई भी व्यक्ति उपयुक्त वातावरण में रहकर अपने व्यक्तित्व का निर्माण करके महान् बन सकता है। ऐसे कई उदाहरण हमारे आस-पास देखने को मिलते हैं जिनमें निर्धन परिवारों में जन्मे व्यक्ति भी अपने परिश्रम एवं लगन से श्रेष्ठ सफलताएँ प्राप्त करने में सक्षम हो जाते हैं। न्यूमैन, फ्रीमैन और होलजिंगर जैसे मनोवैज्ञानिकों ने इस तथ्य को सिद्ध करने के लिये बीस जोड़े जुड़वाँ बच्चों पर प्रयोग किया और उन बच्चों को अलग-अलग वातावरण में रखकर उनका गहराई से अध्ययन किया। उन्होंने एक जोड़े के एक बच्चे को गाँव के फार्म पर और दूसरे को नगर में रखा। बड़े होने पर दोनों बच्चों में पर्याप्त अंतर देखा गया। फार्म में रखा गया बच्चा अशिष्ट, चिंताग्रस्त और कम बुद्धिमान था, जबकि नगर का बच्चा शिष्ट, चिंतामुक्त और अधिक बुद्धिमान था।
- **मानसिक विकास पर प्रभाव:** अमेरिकी मनोवैज्ञानिक थॉमस गोर्डन का मानना है कि उचित सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण न मिलने पर मानसिक विकास की गति धीमी हो जाती है। उसने नदियों के किनारे रहने वाले बच्चों पर अध्ययन किया तथा अपने अध्ययन से इस तथ्य को सिद्ध किया। नदी के किनारे रहने वाले बच्चों का

वातावरण गंदा और समाज के अच्छे प्रभावों से दूर था। गंदे एवं समाज के अच्छे प्रभावों से दूर रहने के कारण इन बच्चों के मानसिक विकास पर भी प्रतिकूल असर पड़ता था।

- **बच्चे पर बहुमुखी प्रभाव :** बच्चे के शारीरिक, मानसिक,सामाजिक, संवेगात्मक आदि सभी अंगों पर वातावरण अपना प्रभाव छोड़ता है। इसका सबसे अच्छा उदाहरण, "एवेरोन का जंगली बालक" है। इस बालक को जन्म के बाद एक भेड़िया जंगल उठा ले गया था और उसका पालन-पोषण जंगली पशुओं के बीच में हुआ था। कुछ शिकारियों की नज़र उस बालक पर 1799 ई. में पड़ी। उन्होंने उसे पकड़ लिया। उस समय उसकी आयु लगभग बारह वर्ष थी। उसकी आकृति पशुओं के जैसे हो गई थी। वह पशुओं के समान ही हाथों-पैरों से चलता था। वह बालक पशुओं के समान कच्चा माँस खाता था। उसने मनुष्य के समान बोलने और विचार करने की शक्ति खो दी थी। उसको मनुष्य के समान सभ्य और शिक्षित बनाने के सब प्रयास विफल हुए।
- **बुद्धि पर प्रभाव :** केंडोल के अनुसार, बुद्धि का विकास वंशानुक्रम की अपेक्षा वातावरण पर निर्भर करता है। उन्होंने फ्राँस, ब्रिटेन तथा जर्मनी के 552 विद्वानों का बौद्धिक अध्ययन करके पता लगाया कि उनमें से अधिकांश धनी वर्ग से संबंधित थे इसलिये उन्हें उचित शिक्षा की सुविधा मिली। इसी प्रकार स्टीफेंस ने भी बुद्धिलब्धि के संबंध में विचार प्रकट किया और कहा कि अगर बालक को अच्छा वातावरण मिले तो बुद्धिलब्धि बढ़ सकती है।

आनुवंशिकता एवं वातावरण का संबंध
(Relation Between Heredity and Environment)

- साधारणत: वंशानुक्रम और वातावरण शब्द का प्रयोग विकास की किसी अवस्था में बालक की शारीरिक, मानसिक और संवेगात्मक विशेषताओं की व्याख्या करने के लिये किया जाता है। बच्चे के निर्माण में वंशानुक्रम और वातावरण का योगदान अभूतपूर्व होता है। दोनों एक-दूसरे से गहरे स्तर तक जुड़े हुए होते हैं।
- प्राचीन समय में यह मत प्रचलित था कि वंशानुक्रम और वातावरण एक-दूसरे से अलग हैं तथा बच्चों के व्यक्तित्व और कार्यक्षमता को विभिन्न स्तरों पर प्रभावित करते हैं। परंतु आधुनिक समय में यह अवधारणा बदल चुकी है। वर्तमान में यह धारणा प्रबल होती जा रही है कि व्यक्ति- बालक, किशोर या प्रौढ़ के रूप में जो कुछ सोचता या अनुभव करता है, वह वंशानुक्रम के कारकों और वातावरण के प्रभावों के पारस्परिक संबंधों का परिणाम होता है।
- इस अवधारणा के प्रबल होने के मुख्य कारण हैं- वंशानुक्रम और वातावरण संबंधी परीक्षण। इन परीक्षणों ने यह साबित कर दिया है कि समान वंशानुक्रम और समान वातावरण होने पर भी बच्चों में विभिन्नता होती है। अत: बच्चों के विकास पर न केवल वंशानुक्रम का वरन् वातावरण का भी प्रभाव पड़ता है। इसकी पुष्टि करते हुए क्रो और क्रो ने लिखा है- व्यक्ति का निर्माण न केवल वंशानुक्रम और न केवल वातावरण से होता है, वास्तव में वह जैविक दाय और सामाजिक विरासत के एकीकरण की उपज है।
- इस संबंध में **लैंडिस महोदय** ने कहा है, "वंशानुक्रम हमें विकसित होने की क्षमताएँ प्रदान करता है। इन क्षमताओं के विकसित होने के अवसर हमें वातावरण से मिलते हैं, वंशानुक्रम हमें कार्यशील पूंजी देता है और परिस्थिति हमें इसको निवेश करने के अवसर प्रदान करती है।"
- **मैकाइवर** एवं **पेज के अनुसार,** "जीवन की प्रत्येक घटना दोनों का परिणाम होती है। इनमें से एक, परिणाम के लिये उतना ही आवश्यक है, जितना कि दूसरा कोई न तो कभी हटाया जा सकता है और न कभी पृथक् किया जा सकता है।"
- **वुडवर्थ** ने लिखा है, "यह पूछने का कोई मतलब नहीं निकलता है कि व्यक्ति के विकास के लिये वंशानुक्रम और वातावरण में से कौन अधिक महत्त्वपूर्ण है? दोनों में से प्रत्येक पूर्ण रूप से अनिवार्य है।"
- **मोर्स** एवं **विंगो** का मत है, "मानव-व्यवहार की प्रत्येक विशेषता वंशानुक्रम और वातावरण की अंत:क्रिया का फल है।"
- **वुडवर्थ** ने लिखा है, "व्यक्ति के जीवन और विकास पर प्रभाव डालने वाली प्रत्येक बात वंशानुक्रम और वातावरण के क्षेत्र में आ जाती है। पर ये बातें इतने पेचीदा ढंग से संयुक्त रहती हैं कि बहुधा वंशानुक्रम और वातावरण के प्रभावों में अंतर करना असंभव हो जाता है।"
- **गैरेट** का कथन है, "इससे अधिक निश्चित बात और कोई नहीं है कि वंशानुक्रम और वातावरण एक-दूसरे को सहयोग देने वाले प्रभाव हैं, और दोनों ही बच्चों की सफलता के लिये अनिवार्य हैं।"

शिक्षक के लिये वंशानुक्रम एवं वातावरण का महत्त्व

शिक्षक के लिये वंशानुक्रम और वातावरण का अत्यधिक महत्त्व है, वह उनके ज्ञान से अपना और अपने छात्रों का हित करता है। इस पर अलग-अलग शीर्षकों के अंतर्गत निम्नलिखित विचार प्रस्तुत किये जा सकते हैं-

वंशानुक्रम का महत्त्व

- यह सर्वविदित है कि वंशानुक्रम के कारण बच्चों में शारीरिक विभिन्नता पाई जाती है। इस ज्ञान से भिज्ञ होकर कोई भी शिक्षक बच्चों के शारीरिक विकास में योगदान दे सकता है।
- शिक्षक को अगर इस बात का ज्ञान होगा कि वंशानुक्रम के कारण बच्चों की जन्मजात क्षमताओं में अंतर होता है तो इस बात को ध्यान में रखकर वह कम प्रगतिशील बच्चों को अधिक प्रगतिशील बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकता है।
- वंशानुक्रम के कारण छात्रों और छात्राओं में लिंगीय भेद होता है, जिसके कारण विभिन्न विषयों में उनकी योग्यता कम या अधिक होती है। इस ज्ञान को प्राप्त कर शिक्षक उनके लिये उपयुक्त विषयों के अध्ययन की व्यवस्था कर सकता है।
- बच्चों में वंशानुक्रम के कारण अनेक प्रकार की विभिन्नताएँ होती हैं जो उनके विकास के साथ-साथ और अधिक स्पष्ट होती जाती हैं। बच्चों की इन विभिन्नताओं का अध्ययन करके शिक्षक इनके अनुरूप शिक्षा का आयोजन कर सकता है।

- बच्चों की सीखने की योग्यता में अंतर का एक बड़ा कारण वंशानुक्रम को माना जाता है। इस ज्ञान से अवगत होकर शिक्षक देर में सीखने वाले बच्चों के प्रति सहनशील और जल्दी सीखने वाले बच्चों को अधिक कार्य दे सकता है।
- बच्चों को वंशानुक्रम से कुछ प्रवृत्तियाँ प्राप्त होती हैं जो वांछनीय और अवांछनीय दोनों प्रकार की हो सकती हैं। शिक्षक इन प्रवृत्तियों का अध्ययन करके वांछनीय प्रवृत्तियों का विकास और अवांछनीय प्रवृत्तियों का दमन सफलतापूर्वक कर सकता है।
- वुडवर्थ का कहना है, "देहाती बच्चों की अपेक्षा शहरी बच्चों में मानसिक स्तर की श्रेष्ठता आंशिक रूप से वंशानुक्रम के कारण होती है।" शिक्षक इस ज्ञान से युक्त होकर अपने शिक्षण को उनके मानसिक स्तरों के अनुरूप बना सकता है।
- वंशानुक्रम के एक सिद्धांत के अनुसार योग्य माता-पिता के बच्चे अयोग्य और अयोग्य माता-पिता के बच्चे योग्य हो सकते हैं। इस नियम से अवगत कोई भी शिक्षक बच्चों के प्रति उचित प्रकार का व्यवहार कर सकता है।

वातावरण का महत्त्व

- बालक अपना पर्याप्त समय अपने परिवार, पड़ोस, मुहल्ले और खेल के मैदान में व्यतीत करता है जिस कारण वह इस प्रकार के वातावरण से प्रभावित होता है। शिक्षक इन स्थानों के वातावरण को ध्यान में रखकर बालक का उचित पथ-प्रदर्शन कर सकता है।
- सोरेंसन के मतानुसार, "शिक्षा का उत्तम वातावरण बच्चों की बुद्धि और ज्ञान की वृद्धि में प्रशंसनीय योगदान देता है।" इस बात की जानकारी रखने वाला शिक्षक अपने विद्यार्थियों के लिये उत्तम शैक्षणिक वातावरण प्रदान करने की कोशिश कर सकता है।
- रूथ बैंडिक्ट के मतानुसार, "व्यक्ति जन्म से ही एक निश्चित सांस्कृतिक वातावरण में रहता है और उसके आदर्शों के अनुरूप ही आचरण करता है।" इस बात को जानने वाला शिक्षक, शिष्य को अपना सांस्कृतिक विकास करने में मदद प्रदान कर सकता है।
- यह सर्वविदित है कि अनुकूल वातावरण में जीवन का विकास होता है और व्यक्ति प्रगति के पथ पर अग्रसर होता है। इस बात का ज्ञान रखने वाला शिक्षक अपने विद्यार्थियों की प्रवृत्तियों, रुचियों और क्षमताओं के अनुकूल वातावरण प्रदान करके उनको जीवन में आगे बढ़ने के लिये प्रेरित कर सकता है।
- यूनेस्को के विशेषज्ञों का मानना है, "वातावरण का बच्चों की भावनाओं पर व्यापक प्रभाव पड़ता है और उससे उनके चरित्र का निर्माण भी होता है।" इस ज्ञान से अवगत शिक्षक बच्चों के लिये ऐसे वातावरण का निर्माण कर सकता है जिससे न केवल उनकी भावनाओं का संतुलित विकास हो बल्कि उनके चरित्र का भी निर्माण हो।
- बच्चों के विकास की दिशा सुनिश्चित करने में वातावरण का अहम योगदान है। वातावरण ही सुनिश्चित करता है कि बालक बड़ा होकर चरित्रवान् या चरित्रहीन, संयमी या व्यभिचारी, व्यापारी या साहित्यकार, देशप्रेमी या देशद्रोही, अच्छा या बुरा बनेगा। इस बात की जानकारी रखने वाला शिक्षक अपने छात्रों के लिये ऐसे वातावरण का सृजन कर सकता है जिससे बालकों का विकास उचित दिशा में अग्रसर हो सके।
- प्रत्येक समाज का अपना एक विशिष्ट प्रकार का वातावरण होता है। बालक को इसी समाज के वातावरण से अपना सामंजस्य स्थापित करना पड़ता है। इस तथ्य से भिज्ञ शिक्षक, विद्यालय को लघु समाज का रूप प्रदान करके बालकों को अपने वृहद् समाज के वातावरण से अनुकूलन करने की शिक्षा प्रदान कर सकता है।
- वातावरण की उचित समझ रखने वाला शिक्षक विद्यालय में बालकों के लिये ऐसा वातावरण निर्मित कर सकता है, जिससे उनमें विचारों की उचित अभिव्यक्ति, शिष्ट सामाजिक व्यवहार, कर्त्तव्यों और अधिकारों का ज्ञान आदि गुणों का अधिकतम विकास हो।
- महान मनोवैज्ञानिक सोरेंसन के अनुसार, "शिक्षक के लिये मानव विकास पर वंशानुक्रम और वातावरण के सापेक्षिक प्रभाव और पारस्परिक संबंध का ज्ञान विशेष महत्त्व रखता है।" अतः यह स्पष्ट है कि शिक्षक के लिये वंशानुक्रम तथा वातावरण का ज्ञान होना अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। इस प्रकार के ज्ञान से संपन्न होकर ही शिक्षक अपने छात्रों का वांछित और संतुलित विकास कर सकता है।

अतिमहत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी तथ्य

- ❑ वंशानुगत गुणों का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानांतरण होने की प्रक्रिया को आनुवंशिकता कहते हैं।
- ❑ बी.एन. झा के अनुसार, "वंशानुक्रम व्यक्ति की जन्मजात विशेषताओं का पूर्ण योग है।"
- ❑ जीव सांख्यिकी सिद्धांत का प्रतिपादन फ्राँसिस गाल्टन नामक मनोवैज्ञानिक ने किया था।
- ❑ आनुवंशिकता एवं वातावरण दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं।
- ❑ विजकोष की निरंतरता के सिद्धांत का प्रतिपादन विजमैन ने किया था।
- ❑ माता-पिता की शारीरिक एवं मानसिक विशेषताओं का संतानों में हस्तांतरण होना आनुवंशिकता का विशेष लक्षण है।
- ❑ माता-पिता के चरित्र का प्रभाव उसके बच्चों पर भी पड़ता है।
- ❑ वातावरण व्यक्ति को जन्म से लेकर मृत्यु तक प्रभावित करता है।
- ❑ आनुवंशिकता एवं वातावरण का प्रभाव व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक एवं सामाजिक विकास पर पड़ता है।
- ❑ बालकों के विकास में उसके परिवेश अर्थात् परिवार, समाज एवं पास-पड़ोस की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।
- ❑ बालकों की बुद्धिमत्ता पारिवारिक परिवेश पर निर्भर करती है।

- रंगों को पहचानने की अंधता नामक बीमारी एक आनुवंशिक बीमारी है।
- बच्चों के आनुवंशिक गुण उनकी वृद्धि एवं विकास दोनों को प्रभावित करते हैं।
- आनुवंशिक गुणों के निर्धारण में गुणसूत्र की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।
- आनुवंशिकता को स्थिर सामाजिक संरचना माना जाता है।
- वंशानुक्रम, परिवार का वातावरण, परिवार की सामाजिक स्थिति मानसिक विकास को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक हैं।
- परिवेश का प्रभाव वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा-माता-पिता यह अनुमान लगाते हैं कि उनके बच्चे में सभी सकारात्मक गुण हैं, क्योंकि एक गुण सकारात्मक है।
- मानव-व्यक्तित्व आनुवंशिकता और वातावरण की अंत:क्रिया का परिणाम है।
- आँखों का रंग आनुवंशिकता संबंधी कारक है।
- बच्चे के विकास में आनुवंशिकता और वातावरण की भूमिका के बारे में यह कथन सत्य है कि समवयस्कों और पित्रेक का सापेक्ष योगदान योगात्मक नहीं होता है।
- मानवीय विकास में आनुवंशिकता एवं परिवेश की भूमिका के संदर्भ में यह कथन समुचित है कि विकास के विभिन्न क्षेत्रों में आनुवंशिकता एवं परिवेश का सापेक्षिक प्रभाव परिवर्तनशील होता है।
- मनुष्य की बुद्धि आगे की पीढ़ियों में संक्रमित होती है। वातावरण का कार्य इस जन्मजात योग्यता के विकास की लिये उपयुक्त परिस्थितियों का निर्माण करना है।
- 'प्रकृति-पालन-पोषण' वाद-विवाद के संदर्भ में यह कथन उपयुक्त प्रतीत होता है कि वंशानुक्रम तथा परिवेश अभिन्न रूप से एक-दूसरे से गुँथे हुए हैं और दोनों विकास को प्रभावित करते हैं।
- 'प्रकृति-पोषण' विवाद में 'प्रकृति' से अभिप्राय है- जैविकीय विशिष्टताएँ या वंशानुक्रम सूचनाएँ।
- वंशानुक्रम तथा पर्यावरण का विशिष्ट अन्योन्यक्रिया का परिणाम विकास के विविध मार्गों और निष्कर्षों के रूप में हो सकता है।
- व्यक्ति में उन मनोशारीरिक अवस्थाओं का गतिशील संगठन, जो उसके पर्यावरण के साथ अद्वितीय सामंजस्य निर्धारित करता है 'व्यक्तित्व' कहलाता है।
- सामान्य पुरुष में (XY) गुणसूत्र होते हैं, जबकि सामान्य महिला में (XX) गुणसूत्र होते हैं।
- रॉस ने कहा था, "वातावरण वह बाहरी शक्ति है जो हमें प्रभावित करती है।"
- वंशानुक्रम जन्मजात वैयक्तिक गुणों का योगफल है।
- वुडवर्थ के अनुसार, "बालक का विकास आनुवंशिकता तथा वातावारण का गुणनफल है।"
- सामान्य संयुक्त कोशिका में गुणसूत्रों के 24 जोड़े होते हैं।

(अभ्यास प्रश्न)

1. बच्चों के अधिगम में शारीरिक स्वास्थ्य और सांवेगिक अवस्था _____
   (a) का कोई आपसी संबंध नहीं है।
   (b) की भूमिका नगण्य है।
   (c) का कोई प्रभाव नहीं होता है।
   (d) की एक महत्त्वपूर्ण भूमिका है। **CTET, 2021**

2. कक्षा में प्रभावशाली अधिगम के लिये _____ वातावरण की रचना करनी चाहिये बजाए _____ वातावरण के
   (a) भयावह ; सुसाध्यक
   (b) प्रतिस्पर्द्धिक ; सुसाध्यक
   (c) सहयोगिक ; प्रतिस्पर्द्धिक
   (d) प्रतिस्पर्द्धिक ; सहयोगिक **CTET, 2021**

3. मानव विकास के संदर्भ में आनुवंशिकता तथा पर्यावरण की भूमिका के बारे में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा सही है?
   (a) वैयक्तिक विभिन्नताओं का एकमात्र कारण आनुवंशिकता है
   (b) परिवेशीय प्रभावपूर्ण रूप से एक व्यक्ति के विकास को निर्धारित करते हैं
   (c) मानव-विकास को न तो आनुवंशिकता और न ही पर्यावरण प्रभावित करता है
   (d) आनुवंशिकता एवं पर्यावरण दोनों एक जटिल पारस्परिक क्रिया के रूप में मानव विकास को प्रभावित करते हैं **CTET, 2019**

4. निम्नलिखित में से कौन-सा एक संरचनात्मक परिवेश के साथ अनुकूल नहीं हो सकता है?
   (a) विद्यार्थियों को जटिल, सार्थक एवं समस्या आधारित गतिविधियों में लगे रहने के लिये लगातार अवसर प्रदान किये जाते हैं
   (b) विद्यार्थी सहयोगात्मक तरीके से कार्य करते हैं तथा आपस में कार्य-केंद्रित वार्ता में लगे रहने के लिये सहयोग दिया जाता है
   (c) शिक्षक प्रमुख प्रकरणों के संबंध में विद्यार्थियों के विचारों एवं अनुभवों को प्राप्त करते हैं तथा उनके वर्तमान ज्ञान की पुनर्संरचना या विस्तृत करने के लिये शिक्षण अधिगम की योजना बनाते हैं
   (d) अध्यापक विशिष्ट सत्रावसान मूल्यांकन रणनीतियों को लागू करते हैं तथा प्रक्रियाओं की बजाय प्रदर्शन पर फीडबैक देते हैं **CTET, 2019**

5. एक बालक का आहार, उसकी लंबाई कितनी होगी, इसको प्रभावित करता है और यहाँ तक कि बालक कितने प्रभावी तरीके से चिंतन करेगा एवं समस्याओं का समाधान करेगा, इसे भी प्रभावित करता है। इस उदाहरण में विकास मुख्यत: प्रभावित होता है-
   (a) आनुवंशिकी द्वारा
   (b) वातावरण द्वारा
   (c) प्रारंभिक और बाद के अनुभवों द्वारा
   (d) सततता (निरंतरता) द्वारा **HTET, 2019**

6. आनुवंशिकता और पर्यावरण की भूमिका के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सत्य है?
   (a) विकास के कुछ पहलू आनुवंशिकता और कुछ अन्य पर्यावरण से अधिक प्रभावित होते हैं
   (b) सीखने और प्रदर्शन करने की एक बच्चे की क्षमता जीनों द्वारा पूरी तरह से निर्धारित की जाती है
   (c) अच्छी देखभाल और पौष्टिक आहार बच्चे के किसी भी जन्मजात विकार को दूर कर सकते हैं
   (d) पर्यावरण केवल बच्चे के भाषा-विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है **CTET, 2018**

7. अग्रिम व्यवस्थापक प्रतिमान किस परिवार से संबंधित है?
   (a) सामाजिक अंत:क्रिया (b) सूचना प्रक्रियाकरण
   (c) वैयक्तिक (d) व्यवहार परिमार्जन **UPTET, 2018**

8. छात्रों में सही व्यवहार के प्रशिक्षण हेतु क्या महत्त्वपूर्ण है?
   (a) प्रशंसा
   (b) दंड
   (c) पुरस्कार
   (d) सही व्यवहार का प्रस्तुतीकरण **UPTET, 2018**

9. सामान्य संयुक्त कोशिका में गुणसूत्रों के जोड़े होते हैं-
   (a) 22 (b) 23
   (c) 24 (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं **UPTET, 2017**

10. अल्बर्ट बंडूरा निम्नलिखित में से किससे संबंधित है?
   (a) सामाजिक अधिगम सिद्धांत
   (b) व्यवहारवादी सिद्धांत
   (c) संज्ञानात्मक विकास का सिद्धांत
   (d) मनोलैंगिक विकास **UPTET, 2017**

11. निम्नलिखित में से कौन-से पर्यावरणीय कारक व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं?
   (a) सामाजिक कारक (b) सांस्कृतिक कारक
   (c) आर्थिक कारक (d) सभी विकल्प सही हैं **HTET, 2017**

12. _____ के अनुसार, "बालक का विकास आनुवंशिकता तथा वातावरण का गुणनफल है।"
   (a) वुडवर्थ (b) गैरेट
   (c) हॉलैंड (d) थॉर्नडाइक **UPTET, 2016**

13. प्रत्ययों का बनते रहना एक _____ प्रक्रिया है।
   (a) विषम (b) अनियमित
   (c) सामाजिक (d) संचयी **UPTET, 2016**

14. _____ जन्मजात वैयक्तिक गुणों का योगफल है।
   (a) समानता (b) निरंतरता
   (c) वंशानुक्रम (d) युयुत्सा (Pugnacity) **UPTET, 2016**

15. "किसी व्यक्ति को आकार देने में वातावरण व घटकों की कोई भूमिका नहीं होती, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की वृद्धि उसकी आनुवंशिक संरचना से निर्धारित होती है।" यह कथन-
   (a) ठीक नहीं है, क्योंकि बहुत से शोध यह सिद्ध करते हैं कि विकास में वातावरण का बड़ा प्रभाव पड़ सकता है
   (b) ठीक है, क्योंकि किसी व्यक्ति की आनुवंशिक संरचना प्रबल होती है
   (c) ठीक है, क्योंकि बहुत से शोध यह सिद्ध करते हैं कि आनुवंशिक पदार्थ ही व्यक्ति के विकास की भविष्यवाणी करता है
   (d) ठीक नहीं है, क्योंकि वातावरण के घटक किसी व्यक्ति की वृद्धि और विकास में कम योगदान करते हैं **CTET, 2016**

16. "वातावरण वह बाहरी शक्ति है, जो हमें प्रभावित करती है।" किसने कहा था?
   (a) वुडवर्थ (b) रॉस
   (c) एनास्टसी (d) इनमें से कोई नहीं **RTET, 2016**

17. निम्नलिखित में से कौन-सा वंशानुक्रम का नियम नहीं है?
   (a) समानता (b) भिन्नता
   (c) प्रत्यागमन (d) अभिप्रेरणा **RTET, 2016**

18. सामान्य पुरुष में XY गुणसूत्र होते हैं जबकि सामान्य महिला में _____ होते हैं।
   (a) XX गुणसूत्र
   (b) XYY गुणसूत्र
   (c) XXX गुणसूत्र
   (d) X गुणसूत्र **UPTET, 2016**

19. बच्चे उसी वातावरण में सीख सकते हैं, जहाँ-
(a) उनके अनुभवों एवं भावनाओं को उचित स्थान मिले
(b) उन्हें खेलने का मौका मिले
(c) उन्हें मित्र बनाने का मौका मिले
(d) कड़ा अनुशासन हो **UTET, 2015**

20. संप्रत्यय निर्माण का प्रथम सोपान है-
(a) सामान्यीकरण (b) विभेदीकरण
(c) प्रत्यक्षीकरण (d) पृथक्करण
UPTET, 2015

21. निम्नलिखित में से कौन-सा एक सही क्रम है?
(a) अंडाणु-शुक्राणु, ब्लास्टोसिस्ट, युग्मनज
(b) ब्लास्टोसिस्ट, अंडाणु-शुक्राणु, युग्मनज
(c) ब्लास्टोसिस्ट, युग्मनज, अंडाणु-शुक्राणु
(d) अंडाणु-शुक्राणु, युग्मनज, ब्लास्टोसिस्ट
UPTET, 2015

22. व्यवहारवादी _____ ने कहा है, "मुझे नवजात शिशु दे दो। मैं उसे डॉक्टर, वकील, चोर या जो चाहूँ बना सकता हूँ।"
(a) फ्रीमैन (b) न्यूमैन
(c) वॉटसन (d) होलजिंगर
UPTET, 2015

23. अनुसंधान से पता चला है कि विद्यालय में अनेक स्तरों पर विभेदीकरण पाया जाता है। उच्च प्राथमिक स्तर पर इनमें से कौन-सा विभेदीकरण का उदाहरण नहीं है?
(a) बहुत से अध्यापक पढ़ाने के लिये केवल व्याख्यान विधि का प्रयोग करते हैं
(b) अध्यापकों की निम्न सामाजिक-आर्थिक परिवेश से आए बच्चों से बहुत कम अपेक्षाएँ होती हैं
(c) मध्याह्न भोजन के दौरान दलित बच्चों को अलग बैठाया जाता है
(d) लड़कियों को गणित तथा विज्ञान विषयों को लेने के लिये प्रोत्साहित नहीं किया जाता है **CTET, 2015**

24. 'प्राकृतिक पोषण' विवाद में 'प्रकृति' से क्या अभिप्राय है?
(a) हमारे आस-पास का वातावरण
(b) जैविकीय विशिष्टताएँ या वंशानुक्रम सूचनाएँ
(c) एक व्यक्ति की मूल वृत्ति
(d) भौतिक और सामाजिक संसार की जटिल शक्तियाँ
CTET, 2015

25. निम्नलिखित में कौन-सा कथन सत्य है?
(a) विद्यालयीकरण का बुद्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता
(b) आनुवंशिक बनावट व्यक्ति की, परिवेश की गुणवत्ता के प्रति, प्रत्युरात्मकता को प्रभावित करती है
(c) गोद लिये गए बच्चों का वही बुद्धि लब्धांक होता है, जो गोद लिये गए उनके सहोदर भाई-बहनों का होता है
(d) अनुभव मस्तिष्क के विकास को प्रभावित नहीं करता
CTET, 2014

26. प्रकृति पोषण विवाद निम्नलिखित में से किससे संबंधित है?
(a) आनुवंशिकी एवं वातावरण (b) व्यवहार एवं वातावरण
(c) वातावरण एवं जीव विज्ञान (d) वातावरण एवं पालन-पोषण
CTET, 2014

27. शिक्षार्थियों को सबसे कम प्रतिबंधित विद्यालय वातावरण में रखने के माध्यम से, विद्यालय-
(a) दूसरे बच्चों को संवेदनशील बनाता है कि वे अलाभान्वित बच्चों को दबाएँ नहीं और उन्हें नीचा न दिखाएँ
(b) लड़कियों और अलाभान्वित वर्गों के लिये शैक्षिक अवसरों को समान करता है
(c) वंचित वर्ग के बच्चों के जीवन को सामान्य करता है, जो इन बच्चों के समुदायों और अभिभावकों के साथ विद्यालय के संबंध को बढ़ा रहा है
(d) विज्ञान मेला और प्रश्नोत्तरी जैसी गतिविधियों में अलाभान्वित वर्ग के बच्चों को भागीदार बनाता है **CTET, 2014**

28. व्यक्तित्व एवं बुद्धि में वंशानुक्रम की-
(a) नाममात्र की भूमिका है
(b) महत्त्वपूर्ण भूमिका है
(c) अपूर्वानुमेय भूमिका है
(d) आकर्षक भूमिका है **UPTET, 2013**

29. बच्चे के विकास में आनुवंशिकता और वातावरण की भूमिका के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सत्य है?
(a) आनुवंशिकता और वातावरण दोनों एक बच्चे के विकास में 50-50% योगदान रखते हैं
(b) समवयस्कों और पित्रेक (Genes) का सापेक्ष योगदान योगात्मक नहीं होता
(c) आनुवंशिकता और वातावरण एक साथ परिचालित नहीं होते
(d) सहज रुझान (Propensity) वातावरण से संबंधित है जबकि वास्तविक विकास के लिये आनुवंशिकता ज़रूरी है।
CTET, 2013

30. प्राथमिक कक्षा में सकारात्मक वातावरण (Positive Environment) निर्मित करने के लिये एक शिक्षक को-
(a) समूह-गतिविधियों (Group Activities) के दौरान समाजमिति (Sociometry) के आधार पर उन्हें समूह बनाने की अनुमति देनी चाहिये
(b) सकारात्मक अंत (Positive Ending) वाली कहानियाँ सुनानी चाहिये
(c) सुबह प्रत्येक बच्चे को अभिवादन करना चाहिये
(d) विभेद (Discrimination) नहीं करना चाहिये और प्रत्येक बच्चे के लिये समान लक्ष्य सुनिश्चित करने चाहिये
CTET, 2012

31. निम्नलिखित में से कौन-सा मुख्य रूप से आनुवंशिकता संबंधी कारक है?
(a) आँखों का रंग
(b) सामाजिक गतिविधियों में भागीदारिता
(c) समकक्ष व्यक्तियों के समूह के प्रति अभिवृत्ति
(d) चिंतन पैटर्न

32. निम्नलिखित में से _____ के अतिरिक्त सभी वातावरणीय कारक विकास को आकार देते हैं।
(a) पौष्टिक की गुणवत्ता (b) संस्कृति
(c) शिक्षा की गुणात्मकता (d) शारीरिक गठन
CTET, 2012

33. एकल अभिभावक (Single Parent) वाले बच्चों को पढ़ाते समय शिक्षक को
(a) स्थिर और एकरूप वातावरण उपलब्ध कराना चाहिये
(b) इस तथ्य को अनदेखा करना चाहिये और ऐसे बच्चे के साथ अन्य बच्चों के समान व्यवहार करना चाहिये
(c) इस प्रकार के बच्चे के साथ भिन्न प्रकार से व्यवहार करना चाहिये
(d) ऐसे बच्चे को कम गृह-कार्य (Home-work) देना चाहिये
CTET, 2012

34. व्यक्ति एवं बुद्धि में वंशानुक्रम की-
(a) नाममात्र की भूमिका है
(b) महत्त्वपूर्ण भूमिका है
(c) अपूर्वानुमेय भूमिका है
(d) आकर्षक भूमिका है **RTET, 2011**

35. आनुवंशिकता को _____ सामाजिक संरचना माना जाता है।
(a) गौण (Secondary) (b) गत्यात्मक (Dynamic)
(c) स्थिर (Static) (d) प्राथमिक (Primary)
CTET, 2011

36. आपकी कक्षा में एक छात्र देर से आता है। आप-
(a) उसके अभिभावकों को सूचित करेंगे
(b) उसे दंड देंगे
(c) कारण जानने की चेष्टा करेंगे
(d) उस पर कोई ध्यान नहीं देंगे **UPTET, 2011**

37. विद्यार्थी में अवांछित व्यवहार (Undesirable Behaviour) को परिवर्तित करने में सबसे प्रभावी पद्धति है-
(a) विद्यार्थी को दंड देना
(b) अभिभावकों के ध्यान में इसे लाना
(c) अवांछित व्यवहार के कारणों को ढूँढ़ना एवं उपचार का प्रबंधन करना
(d) इसकी उपेक्षा करना **UPTET, 2011**

38. किसी विद्यार्थी की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता है-
(a) उत्तरादायित्व की अनुभूति (Sense of Responsibility)
(b) ईमानदारी (Honesty)
(c) सहभागिता (Co-operation)
(d) आज्ञाकारिता (Obedience) **UPTET, 2011**

39. माता-पिता से वंशजों में स्थानांतरित होनेवाले लक्षणों को कहा जाता है-
(a) पर्यावरण
(b) जीन
(c) आनुवंशिकता
(d) होम्योस्टैसिस (Homeostasis) **PTET, 2011**

40. वह प्रक्रिया जिसके द्वारा माता-पिता यह अनुमान लगाते हैं कि उनके बच्चे में सभी सकारात्मक गुण हैं, क्योंकि एक गुण सकारात्मक है, कहलाता है-
(a) परिवेश का प्रभाव (Halo Effect)
(b) हावथोर्न का प्रभाव (Hawthorne Effect)
(c) प्रभाव का नियम (Law of Effect)
(d) प्रतिलोम परिवेश का प्रभाव **PTET, 2011**

41. किसी भी बालक के मानसिक रूप से अस्वस्थ होने का कारण है-
(a) परिवार का वातावरण (b) कक्षा का वातावरण
(c) पास-पड़ोस का वातावरण (d) उपर्युक्त सभी
BTET, 2011

42. बालक में अपराधी प्रवृत्ति के विकसित होने का मुख्य कारण है-
(a) परिवार का वातावरण
(b) अनुशासनहीनता
(c) आर्थिक अभाव
(d) दोषपूर्ण पाठ्यक्रम **BTET, 2011**

उत्तरमाला

1. (d)	2. (c)	3. (d)	4. (d)	5. (b)	6. (a)	7. (b)	8. (d)	9. (b)	10. (a)
11. (d)	12. (a)	13. (d)	14. (c)	15. (a)	16. (b)	17. (d)	18. (a)	19. (a)	20. (c)
21. (d)	22. (c)	23. (a)	24. (b)	25. (b)	26. (c)	27. (a)	28. (a)	29. (b)	30. (d)
31. (a)	32. (d)	33. (b)	34. (a)	35. (b)	36. (c)	37. (c)	38. (d)	39. (c)	40. (a)
41. (d)	42. (a)								

5 समाजीकरण की प्रक्रियाएँ (Processes of Socialisation)

समाजीकरण (Socialisation)

- अन्य सभी जीवों की तरह मनुष्यों को भी समाज के प्यार और साथ की ज़रूरत होती है। समाज से अलग-थलग रहना मनुष्य के लिये न ही उचित है और न ही संभव। इन्हीं कारणों से मनुष्य को एक सामाजिक प्राणी की संज्ञा दी गई है।
- एक सामाजिक प्राणी होने के बावजूद मनुष्य जन्म से सामाजिक नहीं होता है, क्योंकि जन्म के समय शिशु पूर्ण रूप से निर्बल, असहाय एवं दूसरों पर आश्रित होता है। जन्म के समय शिशु समाज के प्रति उदासीन होता है अर्थात् वह ऐसी स्थिति में होता है जिसमें न तो वह सामाजिक होता है और न ही समाज विरोधी।
- हरलॉक के अनुसार, "कोई भी बच्चा जन्म से ही सामाजिक या असामाजिक नहीं होता है, अपने आसपास लोगों की उपस्थिति होते हुए भी वह अकेला ही होता है। वह समाज में दूसरों के संपर्क में आकर समायोजन की प्रक्रिया सीखता है।"
- जन्म के बाद शिशु अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये संपर्क में आने वाले समाज के व्यक्तियों के प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता है। यहीं से मनुष्यों के समाजीकरण की प्रक्रिया प्रारंभ होती है जो अनवरत रूप से जीवनपर्यंत चलती रहती है।
- समाजीकरण की इस प्रक्रिया में व्यक्ति अन्य व्यक्तियों से अंत:क्रिया करते हुए समाज में प्रचलित मूल्यों, आदतों, विश्वासों, रीति-रिवाजों तथा परंपराओं एवं अभिवृत्तियों को सीखता है, इन्हें अपनाता है और पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित करता है।
- किसी व्यक्ति में समाजीकरण का अध्ययन समाजमिति (Sociometry) के अंतर्गत किया जाता है। समाजमिति (Sociometry) एक समूह के सदस्यों के अंतर्संबंधों, उनके दृष्टिकोण, मूल्यों, एक-दूसरे के प्रति स्वीकृति और समूह में प्रत्येक व्यक्ति की भूमिका का अध्ययन करने वाला विज्ञान है।
- समाजीकरण का मापन समाजमिति तकनीक या सोशियो-मेट्रिक तकनीक (Socio-metric Technique) द्वारा किया जाता है जिसे सर्वप्रथम जे.एल. मोरेनो और हेलेन जेनिंग्स (J.L. Moreno and Hellen Jennings) द्वारा विकसित किया गया था।

समाजीकरण की परिभाषा (Definition of Socialisation)

- कई विद्वानों द्वारा समाजीकरण के बारे में अपने विचार व्यक्त किये गए हैं। कुछ महत्त्वपूर्ण परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं-

समाजीकरण की परिभाषा

- **ड्रेवर (Drever)** के अनुसार, "समाजीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने सामाजिक परिवेश से सामंजस्य स्थापित करता है एवं सामाजिक मान्यता प्राप्त करने के उपरांत वह समाज का मान्य, सहयोगी तथा कुशल सदस्य बन जाता है।"
- **रॉस (Ross)** के अनुसार, "समाजीकरण सहयोग करने वाले व्यक्तियों में सामूहिक भावना का विकास करता और उनके सामूहिक रूप से कार्य करने की इच्छा एवं क्षमता का संवर्द्धन करता है।"
- **चाइल्ड (Chield)** के अनुसार, "सामाजिक विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी व्यक्ति में उसके समूह/सामाजिक मानकों के अनुसार वास्तविक व्यवहार का विकास होता है।"
- **वॉटसन (Watson)** के अनुसार, "समाजीकरण एक सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है।"
- **सोरोकिन (Sorokin)** के अनुसार, "समाजीकरण सांस्कृतिक तथा वैचारिक कारकों के अंत:करण की प्रक्रिया है।"
- **सारे व टेलफोर्ड (Sare & Taleford)** के अनुसार, "शिशु में समाजीकरण की प्रक्रिया अन्य दूसरे व्यक्तियों के साथ प्रथम संपर्क से आरंभ होती है एवं यह प्रक्रिया आजीवन चलती रहती है।"
- **सोरेनसन (Sorenson)** के अनुसार, "सामाजिक अभिवृद्धि एवं विकास का अर्थ है अपनी और दूसरों की उन्नति के लिये योग्यता की वृद्धि।"

समाजीकरण के सिद्धांत (Theories of Socialisation)

- समाजीकरण एक सतत और अनंत प्रक्रिया है। यह एक बच्चे को सामाजिक दुनिया में शामिल करने की एक प्रक्रिया है। समाजशास्त्र और मनोविज्ञान के सबसे प्रसिद्ध सिद्धांतों में से अधिकांशत: मनोवैज्ञानिक एवं समाजशास्त्री इससे सहमत हैं कि बच्चे के विकास में 'स्व' (Self) प्राथमिक अवधारणा है और इसका विकास समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से होता है।
- समाजीकरण के कुछ महत्त्वपूर्ण सिद्धांत अमेरिकी समाजशास्त्री चार्ल्स हॉर्टन कूले (Charles Horton Cooley) एवं जॉर्ज हरबर्ट मीड (George Herbert Mead) और ऑस्ट्रियाई न्यूरोलॉजिस्ट सिग्मंड फ्रॉयड (Sigmund Freud) द्वारा प्रस्तुत किये गए।
- इनमें से कुछ महत्त्वपूर्ण सिद्धांतों का विवरण निम्नलिखित है-

चार्ल्स हॉर्टन कूले का समाजीकरण का सिद्धांत

- कूले ने अपनी पुस्तक सोशल ऑर्गनाइज़ेशन (Social Organisation) में लिखा है कि 'स्व' और समाज (Self and Society) के निर्माण

की प्रकृति जुड़वाँ होती है अर्थात् दोनों का जन्म एक साथ होता है। जैसे ही हम एक को जानते हैं तुरंत हम दूसरे को जान जाते हैं।

- किसी व्यक्ति के 'आत्म' या 'स्व' का विकास समाज के संपर्क में आने पर ही प्रारंभ होता है एवं बिना सामाजिक अंत:क्रिया के किसी व्यक्ति का सामाजिक विकास नहीं हो सकता है। व्यक्ति में सामाजिक अंत:क्रिया के उपरांत ही व्यक्ति में समाजीकरण के मूल तत्त्व 'स्व' अथवा 'आत्म' का विकास होता है।
- उनके द्वारा प्रस्तुत प्रमुख सिद्धांत 'स्व-दर्पण का सिद्धांत' (Looking Glass Self) के नाम से प्रसिद्ध है। कूले के 'स्व-दर्पण का सिद्धांत' के अनुसार समाज प्रत्येक व्यक्ति के संदर्भ में एक दर्पण की तरह कार्य करता है जिसमें व्यक्ति अपनी छवि देखते हुए यह निर्धारण करता है कि समाज के लोगों की उसके बारे में क्या धारणा है अर्थात् समाज के लोग उसके बारे में क्या सोचते हैं। समाज की सोच के आधार के संदर्भ में वह अपने बारे में एक धारणा बनाता है।
- इसी धारणा के मूल्यांकन के आधार पर व्यक्ति में श्रेष्ठता और हीनता की भावना का विकास होता है जो कि व्यक्ति के समाजीकरण की दिशा निर्धारित करती है।

इमाइल दुर्खीम का समाजीकरण का सिद्धांत

- इमाइल दुर्खीम एक प्रमुख फ्राँसीसी समाजशास्त्री थे। उनके द्वारा प्रस्तुत समाजीकरण का सिद्धांत 'सामूहिक प्रतिनिधान' (Collective Representation) की अवधारणा पर आधारित है जिसका विस्तृत विवरण उनकी पुस्तक 'सोशियोलॉजी एंड फिलॉसफी' (Sociology and Philosophy) में उपलब्ध है।
- दुर्खीम के अनुसार समाज के प्रत्येक व्यक्ति को समाज में प्रचलित विचारों, भावनाओं, मान्यताओं, आदर्शों, विश्वास एवं नियमों आदि का पालन करना अनिवार्य होता है। समाज के इन विधानों का सभी व्यक्तियों द्वारा पालन किये जाने से ये उस संपूर्ण समाज की अभिव्यक्ति के रूप में परिलक्षित होते हैं जिनका प्रतिनिधित्व पूरा समाज करता है। समाज में प्रचलित इन्हीं विचारों, भावनाओं, मान्यताओं, आदर्शों, विश्वास एवं नियमों को दुर्खीम द्वारा सामूहिक प्रतिनिधान की संज्ञा दी गई।
- सामूहिक प्रतिनिधानों के सामाजिक मूल्यों के रूप में मान्यता एवं सामाजिक स्वीकृति के कारण ये इतने शक्तिशाली होते हैं कि ये व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करने लगते हैं। किसी भी व्यक्ति के समाजीकरण का उद्देश्य वस्तुत: सामूहिक प्रतिनिधानों को उसके व्यवहार में शामिल करना होता है।
- दुर्खीम ने सामूहिक प्रतिनिधानों के अन्त:करण एवं आत्मसातीकरण की प्रक्रिया को समाजीकरण की संज्ञा दी और यह विचार प्रस्तुत किया कि जैसे-जैसे व्यक्ति सामूहिक प्रतिनिधानों को आत्मसात् करते हुए इनका अनुकरण करने लगता है वैसे-वैसे उसकी समाजीकरण की प्रक्रिया भी चलती रहती है।

मीड का समाजीकरण का सिद्धांत

- जॉर्ज हरबर्ट मीड एक प्रमुख अमेरिकी दार्शनिक एवं सामाजिक मनोविज्ञानी थे। इन्होंने व्यावहारिकता (Pragmatism) के विकास में काफी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। इन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'माइंड, सेल्फ एंड सोसायटी' (Mind, Self and Society) में समाजीकरण का सिद्धांत प्रस्तुत किया।
- मीड का सामाजिक सिद्धांत इस दृष्टिकोण पर आधारित है कि 'स्व' सामाजिक अंत:क्रियाओं से उत्पन्न होते हैं। इन्होंने यह तर्क प्रस्तुत किया कि शिशु अपने आरंभिक जीवनकाल में हर उस व्यक्ति का अनुकरण करना प्रारंभ करते हैं जिसके वे संपर्क में आते हैं।
- मीड ने अपने सामाजिक सिद्धांत में इस तथ्य पर बल दिया कि किसी बच्चे के 'स्व' के विकास में उस बच्चे की अपने संदर्भ में जागरूकता एवं अन्य लोगों की दृष्टि के संदर्भ में अपने मूल्यांकन की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। मीड के द्वारा इसे व्यक्त करने के लिये 'मैं' (I) तथा 'मुझे' (Me) की अवधारणा प्रस्तुत की गई है जिसमें उन्होंने 'मैं' को दूसरों के व्यवहार का प्रत्युत्तर एवं 'मुझे' को मेरे द्वारा किये गए व्यवहार के रूप में व्याख्या की है। आगे उन्होंने यह तर्क रखा कि 'मैं' और 'मुझे' एक ही विषयवस्तु है जिनका समाजीकरण होता है।
- मीड ने 'स्व' के विकास के लिये तीन गतिविधियों को महत्त्वपूर्ण माना जिनमें भाषा, अभिनय और खेल शामिल हैं।
  1. **भाषा:** व्यक्ति प्रतीकों, इशारों, शब्दों और ध्वनियों के माध्यम से एक-दूसरे के साथ अंत:क्रिया करने में सक्षम होता है जो कि 'स्व' का विकास करती है।
  2. **अभिनय:** व्यक्ति खेलने अलग-अलग भूमिकाएँ निभाने, नाटक खेलने और दूसरों की अपेक्षाओं के अनुसार अनुक्रियाओं के माध्यम से 'स्व' का विकास करता है। नाटक में किसी पात्र की भूमिका निभाने के माध्यम से व्यक्ति में आत्म-चेतना का विकास होता है।
  3. **खेल:** किसी व्यक्ति के द्वारा खेल या शारीरिक क्रियाकलापों में नियमों के पालन एवं खेलने की समझ विकसित होने से 'स्व' का विकास होता है। इसके अंतर्गत 'स्व' के विकास के माध्यम से बच्चा यह जानने में सक्षम हो जाता है कि ऐसे किन नियमों का पालन अनिवार्य होता है जिनके माध्यम से किसी खेल या किसी गतिविधि में सफलता को पाया जा सकता है।

फ्रॉयड का समाजीकरण का सिद्धांत

- ऑस्ट्रियाई न्यूरोलॉजिस्ट सिग्मंड फ्रॉयड को "आधुनिक मनोविज्ञान के पिता" के रूप में जाना जाता है। सिग्मंड फ्रॉयड के सिद्धांतों और कार्यों ने स्वप्न, बचपन, व्यक्तित्व, स्मृति और चिकित्सा इत्यादि के संदर्भ में नवीन अवधारणाओं के विकास को काफी बढ़ावा दिया।
- सिग्मंड फ्रॉयड ने मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत (Psychoanalytic Theory) के आधार पर समाजीकरण की अवधारणा प्रस्तुत की। उनके अनुसार, 'बुनियादी जैविक प्रवृत्ति व्यक्तित्व को आकार देने के लिये सामाजिक कारकों के साथ अंत:क्रिया करती है।' फ्रॉयड इस तथ्य पर बल देते हैं कि मानव व्यक्तित्व के अधिकांश भाग का निर्माण बचपन में हो जाता है और शेष जीवन के दौरान यह विस्तृत एवं परिष्कृत होता जाता है।

- सिग्मंड फ्रॉयड के अनुसार मानव मन के तीन मुख्य क्षेत्र होते हैं–
  (i) चेतन (Conscious)
  (ii) अर्द्धचेतन या अवचेतन (Semiconscious)
  (iii) अचेतन (Unconscious)
- फ्रॉयड का मानना था कि हमारे व्यक्तित्व की संरचना तीन एकीकृत और अंतर्संबंधित प्रणालियों के इर्द-गिर्द बनी है, जिसे उन्होंने आईडी (id), ईगो (ego) और सुपरईगो (superego) की संज्ञा दी।
- किसी वयस्क व्यक्ति का व्यक्तित्व इन्हीं तीनों निर्धारकों के संयोजन पर निर्भर होता है।

पियाजे का समाजीकरण का सिद्धांत

- जीन पियाजे एक स्विस मनोवैज्ञानिक थे जिन्होंने संज्ञानात्मक विकास के आधार पर अपने समाजीकरण के सिद्धांत को प्रस्तुत किया।
- जीन पियाजे ने यह स्थापित किया कि संज्ञानात्मक विकास चार चरणों के माध्यम से होता है एवं किसी व्यक्ति के समुचित विकास के लिये मानसिक परिपक्वता और समाजीकरण आवश्यक है। बच्चे 'स्व' और 'व्यक्तित्व' के विकास में यह भी सीख जाते हैं कि कैसे सोचना और तर्क करना है।

कोहलबर्ग एवं गिलिगन का समाजीकरण का सिद्धांत

- लॉरेंस कोहलबर्ग एक प्रसिद्ध अमेरिकी मनोवैज्ञानिक और शिक्षक थे जिन्हें मुख्य रूप से नैतिक विकास सिद्धांत के लिये जाना जाता हैं। कैरोल गिलिगन एक प्रसिद्ध अमेरिकी मनोवैज्ञानिक थीं जो लड़कियों और महिलाओं के नैतिक विकास में अपने शोध के लिये प्रसिद्ध हैं। कोहलबर्ग एवं गिलिगन के द्वारा नैतिक विकास के संदर्भ में समाजीकरण के सिद्धांतों को प्रस्तुत किया गया।
- बच्चों के तर्क के एक महत्त्वपूर्ण भाग में शामिल हैं– सही-गलत में अंतर करने की उनकी क्षमता है और यह तय करना है कि क्या करना नैतिक रूप से सही है। लॉरेंस कोहलबर्ग ने कहा कि बच्चों में कई चरणों में सोचने और नैतिक रूप से कार्य करने की क्षमता विकसित होती है। पूर्व-परंपरागत चरण (Pre-conventional Stage) में, छोटे बच्चे नैतिक रूप से जो सही है उसका अनुसरण करते हैं जो उन्हें दंड का पात्र बनने से रोकता है।
- पारंपरिक अवस्था (Conventional Stage) में, किशोरों को एहसास होता है कि उनके माता-पिता और समाज के नियमों का पालन इसलिये करना चाहिये क्योंकि ये नैतिक रूप से सही हैं, न कि केवल इसलिये कि उनकी अवज्ञा करने से सज़ा मिलती है। उत्तर-परंपरागत चरण (Post-conventional Stage) का प्रारंभ किशोरावस्था की अंतिम और प्रारंभिक वयस्कता की अवस्था में होता है। इस चरण में व्यक्तियों को यह एहसास होता है कि उनके अपने उच्च नैतिक मानक समाज के मानकों को पीछे छोड़ सकते हैं। यहाँ तक कि इन उच्च मानकों के नाम पर वे समाज के नियम, परंपरा, कानून आदि की अवहेलना का निर्णय भी ले सकते हैं।
- कैरल गिलिगन ने अपने शोध में यह पाया कि जहाँ लड़के सही या गलत का फैसला करने के लिये अमूर्त या सामान्य नियमों का प्रयोग करते हैं, वहीं लड़कियाँ व्यक्तिगत संबंधों को ध्यान में रखती हैं।
- यदि लोग किसी महत्त्वपूर्ण व्यक्तिगत आवश्यकता के कारण नियम तोड़ते हैं या किसी की मदद करने की कोशिश कर रहे हैं, तो हो सकता है कि उनका व्यवहार गलत न हो। पुरुष नैतिक निर्णय लेने के लिये अवैयक्तिक, सार्वभौमिक मानदंड का उपयोग करते हैं, जबकि महिलाएँ अधिक व्यक्तिगत, विशिष्ट मानदंड का उपयोग करती हैं।

एरिक्सन का समाजीकरण का सिद्धांत

- एरिक एरिक्सन एक जर्मन-अमेरिकी मनोवैज्ञानिक और मनोविश्लेषक थे। फ्रॉयड के विपरीत एरिक्सन का सिद्धांत मनोवैज्ञानिक विकास की बजाय मनोसामाजिक विकास पर केंद्रित था।
- एरिक्सन के अनुसार 'स्व' का विकास बाल्यावस्था तक ही सीमित नहीं है अपितु जीवनपर्यंत चलता रहता है। हालाँकि बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था समाजीकरण की प्रक्रिया की दृष्टि से सबसे महत्त्वपूर्ण अवधि है किंतु यह जीवनपर्यंत जारी रहता है।
- एरिक एरिक्सन ने विकास के आठ चरणों की व्याख्या की जिससे एक स्वस्थ विकासशील व्यक्ति गुज़रेगा। ये प्रक्रियाएँ निम्नलिखित हैं-
- **विश्वास बनाम अविश्वास :** यह अवस्था जन्म से लेकर 1 वर्ष तक होती है एवं इस अवस्था में बच्चा अपनी ज़रूरतों के लिये पूर्णत: बड़ों पर निर्भर होता है। जब शिशु की ज़रूरतें पूरी हो जाती हैं, तो उसमें दुनिया के प्रति विश्वास की भावना विकसित होगी। वहीं आवश्यकता की पूर्ति नहीं होने पर वह अविश्वास की भावना महसूस करेगा।
- **स्वायत्तता बनाम शर्म और संदेह :** यह अवस्था 1 वर्ष से लेकर 3 वर्ष तक होती है। इस अवस्था में बच्चों का शारीरिक विकास होता है तथा वे प्रकृति के बारे में जानना एवं निश्चित परिणामों के लिये अंत:क्रिया शुरू करते हैं। वे पर्यावरण के कुछ तत्त्वों, जैसे भोजन, खिलौने और कपड़ों के लिये स्पष्ट प्राथमिकताएँ दिखाने लगते हैं। इस समय बच्चे के अंदर की भावना होती है मैं यह कर सकता हूँ। इस अवस्था में यदि उन्हें उनके अनुसार कार्य करने की अनुमति दी जाए तो उनमें स्वतंत्रता की भावना विकसित होगी एवं उन्हें अपनी क्षमताओं पर भरोसा बढ़ेगा। ऐसा नहीं होने पर वे अपनी क्षमताओं पर संदेह करना शुरू देंगे जिससे उनमें कम आत्मसम्मान और शर्म की भावना पैदा हो सकती है।
  - **पहल बनाम अपराध :** इस चरण की शुरुआत 3-6 वर्ष की आयु में होती है और बच्चे विद्यालय जाना प्रारंभ करते हैं। वे सामाजिक अंत:क्रिया, खेल एवं अन्य गतिविधियों के माध्यम से अपनी दुनिया पर नियंत्रण करने में सक्षम होते हैं। महत्त्वाकांक्षा और ज़िम्मेदारी की भावना बच्चों में तब विकसित होती है जब माता-पिता बच्चों द्वारा की गई पहल को प्रोत्साहन और समर्थन दें। पहल में सफलता मिलने पर उनमें आत्मविश्वास का विकास होगा और उद्देश्य की भावना महसूस होगी। जो लोग इस स्तर पर असफल होते हैं या उनकी पहल को माता-पिता द्वारा गलत तरीके से नियंत्रित या दबाया जाता है तो उनमें अपराध-बोध की भावना विकसित हो सकती है।

- **उद्यमशीलता बनाम हीनता :** यह अवस्था 6-12 वर्ष की आयु तक चलती है एवं बच्चे इस अवस्था में नए कौशलों को सीखते हैं। बच्चे अपने विद्यालय के कार्य, खेलकूद, सामाजिक गतिविधियों एवं पारिवारिक जीवन में गर्व और उपलब्धि की प्राप्ति का प्रयास करते हैं तथा इन सब की तुलना अपने साथियों के संदर्भ में करने लगते हैं। यदि इस अवस्था में बच्चे घर पर या दूसरे बच्चों के साथ सकारात्मक रूप से मिल-जुलकर रहते हैं तो उनमें उद्यमशीलता की भावना विकसित होगी और यदि ऐसा नहीं होता है तो बच्चों में हीन भावना पैदा हो जाएगी।
- **पहचान बनाम भ्रम :** 12 से 18 वर्ष की आयु यानी किशोरावस्था में बच्चे पहचान बनाम भ्रम की समस्या से ग्रसित होते हैं। एरिक्सन के अनुसार, एक किशोर का मुख्य कार्य 'स्व' की भावना का विकास करना है। किशोरों के सामने इस अवस्था में कई प्रश्न होते हैं- जैसे कि 'मैं कौन हूँ'? और मैं अपने जीवन के साथ क्या करना चाहता हूँ? अधिकांश किशोर अपनी 'स्व' की खोज के लिये अलग-अलग तरीकों से, जैसे विभिन्न विचारों, लक्ष्यों एवं कई भूमिकाओं से यह पता लगाने की कोशिश करते हैं कि कौन-सा माध्यम उनके लिये उपयुक्त है। जो किशोर इस स्तर पर सफल होते हैं उनमें पहचान की प्रबल भावना होती है और वे समस्याओं एवं अन्य लोगों के दृष्टिकोण के सामने अपने विश्वासों और मूल्यों के प्रति अडिग रहने में सक्षम होते हैं। वहीं सफल नहीं होने वाले बच्चे भ्रम की भावना से ग्रसित होंगे।
- **आत्मीयता बनाम अलगाव :** 20 से 40 वर्ष की आयु यानी प्रारंभिक वयस्कता में लोग आत्मीयता बनाम अलगाव या अंतरंगता बनाम अलगाव की समस्या का सामना करते हैं। युवा वयस्कों को अन्य लोगों के साथ घनिष्ठ, प्रेमपूर्ण संबंध बनाने की ज़रूरत होती है। किशोरावस्था में 'स्व' की भावना विकसित करने के बाद इस अवस्था में व्यक्ति अपना जीवन दूसरों के साथ साझा करने के लिये तैयार होता है। इसमें सफलता मज़बूत रिश्तों की ओर ले जाती है, जबकि असफलता अकेलेपन और अलगाव की ओर ले जाती है। एरिक्सन ने कहा कि सफल आत्मीय संबंधों को विकसित करने से पहले हमारी 'स्व' की मज़बूत भावना विकसित होनी चाहिये।
- **उत्पादकता बनाम ठहराव :** व्यक्ति की 40 से 60 वर्ष की आयु को मध्य वयस्कता की अवस्था कहा जाता है। इस अवस्था में व्यक्ति अगली पीढ़ी एवं समाज में सकारात्मक योगदान देना शुरू करता है, जैसे बच्चे का जन्म एवं दूसरों की देखभाल; सार्थक और उत्पादक कार्य आदि। जो लोग इस चरण के दौरान सफल होंगे उन्हें लगेगा कि वे अपने घर और समुदाय में सक्रिय होकर दुनिया में योगदान दे रहे हैं। जो लोग इस कौशल को प्राप्त करने में विफल रहते हैं वे दुनिया में अनुत्पादक और असंबद्ध महसूस करेंगे।
- **अखंडता या अहं संपूर्णता बनाम निराशा :** अंतिम मनोसामाजिक चरण बुढ़ापे के दौरान होता है जिसमें व्यक्ति कई तरह की चुनौतियों का सामना करता है– जैसे गिरता हुआ शारीरिक स्वास्थ्य एवं शक्ति, स्मृति लोप, अपने निकट संबंधियों एवं मित्रों की मृत्यु, अल्प आय आदि। इस अवस्था में व्यक्ति भविष्य की बजाय अपने अतीत का ज़्यादा अवलोकन करते हुए यह निर्धारित करता है कि क्या वह अपने जीवन से खुश है या उसे अपने किये गए या नहीं किये गए कार्यों पर पछतावा है। जो लोग अपनी उपलब्धियों पर गर्व महसूस करते हैं वे ईमानदारी की भावना महसूस करते हैं, और जो लोग पछतावे के साथ अपने जीवन को देखते हैं वे कड़वाहट, अवसाद और निराशा की भावनाओं से ग्रसित हो जाते हैं।

समाजीकरण के विभिन्न सिद्धांत: एक नज़र में

सिद्धांत	प्रतिपादक
स्व-दर्पण का सिद्धांत (Looking-Glass Self)	चार्ल्स हॉर्टन कूले
दूसरे की भूमिका निभाना (Taking the role of the other)	जॉर्ज हरबर्ट मीड
मनोविश्लेषणात्मक (Psychoanalytic)	सिग्मंड फ्रॉयड
संज्ञानात्मक विकास (Cognitive Development)	जीन पियाजे
नैतिक विकास (Moral development)	लॉरेंस कोहलबर्ग और कैरल गिलिगन
पहचान का विकास (Identity Development)	एरिक एरिक्सन

सामाजिक विकास की विशेषताएँ (Characteristics of Social Development)

समाजीकरण की इस प्रक्रिया में विभिन्न आयु स्तरों पर सामाजिक विकास की कई विशेषताएँ देखने को मिलती हैं। इनमें से कुछ महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

- **आरंभिक सामाजिक प्रक्रिया :** शिशु अपने जन्म के समय न तो सामाजिक होता है और न ही असामाजिक। शिशु की अपनी आरंभिक अवस्था में प्रदर्शित की जाने वाली सामाजिक प्रतिक्रियाएँ ही सामाजिक विकास का प्रारंभिक चरण हैं जिसमें वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु अपने निकट व्यक्तियों के प्रति अनुक्रिया व्यक्त करता है।
- **बच्चों के साथ प्रतिक्रिया :** सामाजिक विकास की प्रक्रिया में बच्चों की अनुक्रिया एवं प्रतिक्रिया का महत्त्वपूर्ण स्थान है। बढ़ती आयु के साथ बच्चों का सामाजिक दायरा बढ़ता है एवं उनके मध्य विचारों के आदान-प्रदान के साथ-साथ सहयोग व मित्रता की भावना विकसित होने लगती है।
- **सामूहिक प्रतिक्रिया :** बच्चों में सामूहिकता की भावना का विकास तीसरे से चौथे वर्ष में विकसित होने लगता है। सामूहिक क्रियाकलापों,

जैसे खेल इत्यादि के माध्यम से बच्चों में कई गुणों का विकास होना प्रारंभ होने लगता है। उदाहरण के लिये मित्रता, आज्ञापालन, सहानुभूति, प्रतिस्पर्द्धा, त्याग, नेतृत्व इत्यादि।

- **सामाजिक प्रतिक्रिया :** चौथे से पाँचवे वर्ष में बच्चों का समाज के व्यक्तियों से संपर्क होना प्रारंभ हो जाता है। इस अवस्था से वे समाज के मान्य व्यवहारों को अपनाना एवं अमान्य व्यवहारों को त्यागना प्रारंभ कर देते हैं। सामाजिक प्रतिक्रियाओं के दौरान इस अवस्था में प्राय: बच्चों में उनके सामाजिक विकास को प्रभावित करने वाली कई अन्य विशेषताएँ दिखाई देती हैं, उदाहरण- झगड़ा, क्रोध, मारपीट, सहानुभूति एवं सहिष्णुता, निषेधात्मकता, प्रतिस्पर्द्धा, सहयोग आदि। संक्षिप्त में इन विशेषताओं का विवरण निम्नलिखित है-

1. **झगड़ा, क्रोध एवं मारपीट :** बच्चों में इन गुणों की अभिव्यक्ति बाल्यावस्था की अवधि यानी एक से डेढ़ वर्ष में दिखने लगती है। इस अवस्था में बच्चे अपनी प्रिय वस्तुओं की प्राप्ति या प्रिय व्यक्तियों के पास जाने के लिये रोने, गुस्साने एवं हाथ-पैर पटकने जैसी प्रतिक्रियाओं को व्यक्त करते हैं। बच्चों में पूर्व बाल्यावस्था में झगड़ने एवं मारपीट की प्रवृत्ति ज़्यादा होती है।
2. **निषेधात्मकता :** यदि किसी बच्चे को अपनी प्रिय वस्तुओं की इच्छापूर्ति में बाधा होती है तो सामाजिक प्रतिक्रिया के रूप में बच्चा 'निषेधात्मक व्यवहार' का प्रदर्शन करता है। 'निषेधात्मक व्यवहार' के तहत बच्चा अपने आत्मसम्मान की रक्षा के लिये नकारात्मक संवेगों का प्रदर्शन करता है। इसमें वह तर्क-वितर्क व बड़ों की अवज्ञा करने लगता है।
3. **सहानुभूति एवं सहिष्णुता :** बच्चों में सहानुभूति एवं सहिष्णुता का विकास एक स्वस्थ और सकारात्मक गुण के विकास का सूचक है। बालक अपने परिवार एवं मित्रों के माध्यम से सहानुभूति व सहिष्णुता को सीखता है। प्रारंभ में बच्चा अपने पारिवारिक सदस्यों के प्रति सहानुभूति व सहिष्णुता व्यक्त करता है। हालाँकि आगे चलकर वह समाज के अन्य लोगों के प्रति भी इन गुणों को प्रदर्शित करता है।
4. **प्रतिस्पर्द्धा :** सामाजिक विकास में प्रतिस्पर्द्धा एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है एवं इसका विकास बच्चों में अन्य सामाजिक गुणों के विकास के साथ होता है। प्रतिस्पर्द्धा एक बच्चे को दूसरे बच्चे से आगे निकलने को प्रेरित करती है, जिसके कारण बच्चे प्रगति की ओर अग्रसर होते हैं। प्रतिस्पर्द्धा के कारण ही बच्चे अध्ययन एवं खेलकूद में सक्रिय रूप से हिस्सा लेते हैं।
5. **सहयोग :** किसी भी व्यक्ति के समाज में समायोजन के लिये सहयोग को एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व माना जाता है। सहयोग की भावना लोगों में सामूहिकता को प्रेरित करती है जिसके माध्यम से कठिन एवं जटिल कार्यों को भी आसानी से संपादित किया जा सकता है। सहयोग एक ऐसा सकारात्मक गुण है जो नकारात्मक गुणों, जैसे- आपसी द्वेष, ईर्ष्या इत्यादि को कम करता है।

सामाजिक विकास के मूल्यांकन की कसौटियाँ *(Criteria for Evolution of Social Development)*

- **सामाजिक अनुरूपता :** सामाजिक विकास एवं सामाजिक अनुरूपता में धनात्मक सहसंबंध पाया जाता है। प्राय: ऐसा पाया गया है कि जो बच्चे समाज में प्रचलित मूल्यों, आदतों, विश्वासों, रीति-रिवाजों तथा परंपराओं एवं अभिवृत्तियों को जितनी तेज़ी से सीखते हैं उनमें सामाजिक विकास का उतना ही अधिक उच्च स्तर होता है।
- **सामाजिक समायोजन :** जो बच्चे नवीन वातावरण, विपरीत परिस्थितियों और चुनौतीपूर्ण परिवेश जैसी सामाजिक स्थितियों को समझने एवं सुलझाने में सक्षम होते हैं उनमें उच्च स्तर का सामाजिक समायोजन पाया जाता है। ऐसे बच्चों में सामाजिक विकास का स्तर भी काफी उच्च पाया जाता है।
- **सामाजिक अंत:क्रियाएँ :** किसी भी बच्चे में सामाजिक विकास के स्तर को उसकी सामाजिक अंत:क्रियाओं द्वारा भी मापा जा सकता है। जिस बच्चे में सामाजिक अंत:क्रियाओं का स्तर जितना ज़्यादा व्यापक एवं जटिल होगा उस बच्चे में उसी मात्रा में उसका सामाजिक विकास होगा।
- **सामाजिक सहभागिता :** जो बच्चा जितने सक्रिय एवं सहज भाव से सामाजिक क्रियाकलापों में आत्मविश्वासपूर्वक भाग लेता है उसमें सामाजिक विकास का उतना ही उच्च स्तर पाया जाता है।
- **सामाजिक परिपक्वता :** जो व्यक्ति समाज के अनुरूप प्रचलित मूल्यों, आदतों, विश्वासों, रीति-रिवाजों, परंपराओं एवं अभिवृत्तियों को लेकर सामाजिक परिपक्वता प्रदर्शित करते हैं, उनमें सामाजिक विकास का उच्च स्तर पाया जाता है।

समाजीकरण के प्रकार (Types of Socialisation)

समाजीकरण अलग-अलग चरण में संपादित होने वाली एक ऐसी प्रक्रिया है जो जन्म से लेकर मृत्यु तक चलती रहती है। सामान्यत: ये चरण विभिन्न आयु समूहों से संबंधित होते हैं जिनके आधार पर समाजीकरण को कई स्वरूपों में वर्गीकृत किया जाता है।

प्राथमिक समाजीकरण

समाजीकरण की प्रक्रिया में प्राथमिक समाजीकरण सबसे महत्त्वपूर्ण है। शैशवावस्था और बाल्यावस्था की अवधि में प्राथमिक समाजीकरण प्रक्रिया आकार लेती है। इस चरण में बच्चों को बुनियादी ज्ञान, भाषा और व्यवहार सिखाया जाता है। समाजीकरण का यह चरण सामान्यत: परिवार के भीतर संपादित होता है जिसमें शिशु बुनियादी ज्ञान, भाषा और व्यवहार सीखता है।

द्वितीयक समाजीकरण

शिशु की बाल्यावस्था की अवधि के समाप्त होने के उपरांत द्वितीयक समाजीकरण प्रारंभ होता है जो कि परिपक्वता तक निरंतर चलता रहता है। इस चरण में परिवार की तुलना में समाजीकरण के कुछ अन्य अभिकर्त्ता, जैसे विद्यालय और दोस्तों का समूह बच्चे के समाजीकरण में

अत्यधिक भूमिका निभाने लगते हैं। बच्चों का समाजीकरण के इन अभिकर्त्ताओं के माध्यम से विभिन्न प्रकार का सामाजिक संपर्क स्थापित होता है। ये संपर्क उन्हें समाज एवं संस्कृति के नैतिक मानकों, रीति-रिवाजों और सिद्धांतों को सीखने में मदद करते हैं।

जेंडर या लैंगिक समाजीकरण

लैंगिक समाजीकरण में समाजीकरण के विभिन्न कारक बच्चों के विचारों को आकार देते हुए उन्हें विभिन्न लैंगिक भूमिकाओं को सीखने में मदद करते हैं। समाजीकरण की इस प्रक्रिया में सबसे पहले बच्चे खुद के लिंग यानी पुरुष या स्त्री के बारे में जानना शुरू करते हैं। इसकी जानकारी उन्हें अपनी परवरिश, परिवार और समाज के वयस्कों के माध्यम से मिलती है- उदाहरण के लिये कपड़े, केश, विभिन्न कॉस्मेटिक, खिलौने आदि से उन्हें लैंगिक ज्ञान प्राप्त होता है। दो साल की उम्र के भीतर बच्चे अस्पष्ट रूप से समझने लगते हैं कि उनका लिंग क्या है।

प्रत्याशामूलक समाजीकरण

प्रत्याशामूलक समाजीकरण शब्द समाजशास्त्री रॉबर्ट के. मर्टन के द्वारा प्रस्तुत किया गया था। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा भविष्य के व्यवसायों, पदों और सामाजिक संबंधों के लिये किसी को सचेत रूप से सामाजिक बनाया जाता है। प्रत्याशामूलक समाजीकरण के माध्यम से लोगों का उन समूहों में समाजीकरण किया जाता है जिनमें वे शामिल होना या कार्य करना चाहते हैं ताकि समूह में प्रवेश करना बहुत मुश्किल न लगे।

पुनर्समाजीकरण *(Re-Socialisation)*

पुनर्समाजीकरण कुछ निश्चित व्यवहार पैटर्न और भूमिकाओं को छोड़ने की प्रक्रिया को संदर्भित करता है, जिससे जीवन में विकास के हिस्से के रूप में नए लोगों, नई भूमिकाओं एवं नए व्यवहार को अपनाया जा सके। पुनः समाजीकरण तब होता है जब किसी व्यक्ति की सामाजिक भूमिका में एक बड़ा परिवर्तन होता है।

प्रौढ़ समाजीकरण *(Adult Socialisation)*

- प्रौढ़ समाजीकरण वयस्क अवस्था में होता है जब व्यक्ति पति, पत्नी या कर्मचारी जैसी नई भूमिकाओं के अनुकूल हो जाता है। यह उनकी ज़रूरतों और इच्छाओं से जुड़ा है। लोग जीवन भर मूल्यों और व्यवहार के प्रतिमान सीखते रहते हैं।
- समाजीकरण की कोई निश्चित समयावधि नहीं होती है। यह जन्म से शुरू होता है और बुढ़ापे तक चलता रहता है। जिस प्रकार युवा पीढ़ी में वयस्कों के माध्यम से समाजीकरण की क्रिया चलती रहती है, उसी तरह पुरानी पीढ़ी में भी अपनी युवा पीढ़ी द्वारा विभिन्न अनुभवों के माध्यम से समाजीकरण की क्रिया चलती रहती है। परिवार के वयस्क के अलावा समाजीकरण के अन्य एजेंटों के माध्यम से समाजीकरण की प्रक्रिया जारी रहती है। उदाहरण के लिये- कार्यस्थल, सामाजिक समूह, वरिष्ठ नागरिक मंच, मनोरंजन क्लब और धार्मिक संस्थान आदि।

समाजीकरण की प्रक्रियाएँ (Process of Socialisation)

जन्म के समय शिशु समाज के प्रति उदासीन होता है। समाजीकरण की यह प्रक्रिया शिशु के जन्म के कुछ दिन उपरांत प्रारंभ हो जाती है। शिशु के समाजीकरण की प्रथम प्रक्रिया परिवार से प्रारंभ होती है। इसमें शिशु परिवार के सदस्य के रूप में परिवार के अन्य सदस्यों से अंतःक्रियात्मक संबंध स्थापित करते हुए उनके व्यवहारों का अनुकरण करने लगता है। जैसे-जैसे बच्चे की आयु बढ़ती है उसमें समाजीकरण के एक आवश्यक तत्त्व के रूप में 'स्वयं-बोध' की भावना का विकास होता है जिसमें वह स्वयं एवं अपने माता-पिता और भाई-बहन के मध्य के अंतर को समझते हुए स्वयं के बारे में जानता है।

बढ़ती उम्र के साथ बच्चे सामाजिक रीति रिवाज़ों और परंपराओं से भी अवगत होते हैं। इस प्रकार परिवार, सामाजिक संस्थाओं, सामाजिक रीति-रिवाज़ों और परंपराओं इत्यादि के सम्मिलित प्रभाव से मनुष्य का रूपांतरण एक सामाजिक प्राणी के रूप में हो जाता है। मनुष्यों का एक सामाजिक प्राणी के रूप में रूपांतरण की प्रक्रिया ही समाजीकरण कहलाती है।

बालक के समाजीकरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली पद्धतियों को सम्मिलित रूप से समाजीकरण की प्रक्रियाएँ कहा जाता है। समाज के प्राथमिक और द्वितीयक विभाजन के आधार पर ही समाजशास्त्रियों के द्वारा समाजीकरण की प्रक्रिया को मुख्य रूप से दो भागों में बाँटा जाता है-

1. **समाजीकरण की प्राथमिक प्रक्रियाएँ:** बच्चों में प्राथमिक समाजीकरण का प्रारंभ परिवार, पड़ोस एवं नातेदारी, मित्र-समूह और प्रारंभिक शिक्षा के माध्यम से होता है। इन सारी संस्थाओं में परिवार को एक सार्वभौमिक संस्था के रूप में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण दर्जा प्राप्त है क्योंकि इसमें सहयोग, सहायता, सहानुभूति, आदान-प्रदान आदि के गुणों का विकास होता है। परिवार के सदस्यों के मध्य प्रेम, बड़ों का स्नेह और नियंत्रण व्यक्ति के समाजीकरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
2. **समाजीकरण की द्वितीयक/गौण प्रक्रियाएँ:** मनुष्यों में समाजीकरण की द्वितीयक प्रक्रियाओं का विकास किशोरावस्था से प्रारंभ होता है। इस अवस्था में किशोर बचपन की तुलना में अत्यधिक औपचारिक वातावरण के अनुसार स्वयं को समायोजित करता है। किशोर का समाज के एक प्रकार्यात्मक सदस्य के रूप में रूपांतरण की प्रक्रिया में कई संस्थाएँ महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इन संस्थाओं में शैक्षणिक संस्थाएँ (कॉलेज-विश्वविद्यालय), राजनीतिक संस्थाएँ, आर्थिक संस्थाएँ (बाज़ार व दुकान), सांस्कृतिक संस्थाएँ, व्यवसाय-समूह (दफ्तर एवं फैक्ट्री) इत्यादि प्रमुख हैं।

- कुछ विद्वानों द्वारा मनुष्यों में समाजीकरण की संपूर्ण प्रक्रिया को तीन भागों में विभाजित किया जाता है, जिनका विवरण नीचे सारणी में प्रस्तुत है।

समाजीकरण की संपूर्ण प्रक्रिया के महत्त्वपूर्ण चरण		
समाज द्वारा बच्चों में मान्य व्यवहार का विकास करना	**समाज के मानक व्यवहारों के अनुरूप व्यवहार करना**	**बच्चों में सामाजिक अभिवृत्तियों का विकास करना**
हर समाज में वहाँ के रीति-रिवाज़, परंपरा, सांस्कृतिक एवं धार्मिक मान्यताओं के अनुसार कुछ स्वीकृत नियम होते हैं तथा समाज की यह अभिलाषा होती है कि सभी सदस्य इन मान्य व्यवहारों का पालन करें। इस प्रकार समाज द्वारा बच्चों में इन मान्य व्यवहारों का विकास किया जाता है।	हर समाज में सभी सदस्यों के कुछ न कुछ कर्त्तव्य निर्धारित होते हैं। उदाहरण के लिये माता-पिता, विद्यार्थी-शिक्षक इत्यादि। समाजीकरण की प्रक्रिया में इन सदस्यों से अपेक्षा होती है कि वे मान्य व्यवहारों का संपादन करें जिससे बच्चे समाजीकरण की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग ले सकें।	समाजीकरण की प्रक्रिया में सभी घटक मिलकर बच्चों में समाज की सकारात्मक अभिवृत्तियों का विकास करते हैं जिससे बच्चा समाज की संस्थाओं, सामाजिक कार्यक्रमों एवं समाज के अन्य सदस्यों के साथ सक्रिय रूप से संलग्न हो जाता है।

बाल्यकाल की विभिन्न अवस्थाओं में समाजीकरण की प्रक्रिया

बाल्यकाल की विभिन्न अवस्थाओं में बच्चों में सामाजिक विकास भिन्न-भिन्न तरीकों से संपादित होता है। बच्चों में सामाजिक विकास की इस प्रक्रिया को निम्नलिखित तरीकों से समझा जा सकता है-

शैशवावस्था में सामाजिक विकास

- शैशवावस्था सामाजिक विकास की प्रारंभिक अवस्था है। शिशु के जन्म से लेकर लगभग 18 से 24 माह की आयु तक के विकास की अवधि को शैशवावस्था कहते हैं। हालाँकि कुछ विद्वानों ने शिशु के जन्म से लेकर 5 से 6 वर्ष को शैशवावस्था का काल माना है।
- शैशवावस्था पूरी तरह से बड़ों पर निर्भरता का दौर होता है। यह अवस्था सचेतनता (Consciousness Stage) की अवस्था होती है, क्योंकि इस काल में शिशु उन व्यक्तियों के प्रति सचेतन होता है जो उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं।
- जन्म के उपरांत शिशु का व्यवहार सामाजिकता से काफी दूर होता है एवं उसकी प्रकृति काफी स्वार्थी होती है। इस समय वह सजीव एवं निर्जीव में भेद करने में असमर्थ होता है।
- शिशु में समाजीकरण का प्रथम चरण तब प्रारंभ होता है जब शिशु वस्तुओं और व्यक्तियों में भेद करना प्रारंभ करता है। इस प्रक्रिया में शिशु बड़े लोगों से मिलना प्रारंभ करता है।
- शैशवावस्था की अवधि अनेक प्रकार की मनोवैज्ञानिक गतिविधियों के प्रारंभ होने के दृष्टिकोण से काफी महत्त्वपूर्ण होती है। उदाहरण के लिये बोलने की क्षमता, इन्द्रियों के अनुभवों एवं शारीरिक क्रियाओं में तालमेल बिठाना, प्रतीकों का उपयोग करते हुए सोचना और दूसरों की नकल करके उनसे सीखना आदि।
- जन्मोपरांत की अन्य अवस्थाओं की तुलना में शैशवावस्था में सबसे तीव्र गति से वृद्धि और विकास होता है।
- शैशवावस्था के अर्थ के संबंध में विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा कई 'परिभाषाएँ दी गई हैं जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं-
  - सिग्मंड फ्रॉयड के अनुसार, "कोई व्यक्ति आगामी भविष्य में क्या बनने वाला है इसका निर्धारण 5-6 वर्ष तक की आयु में ही हो जाता है।"
  - थॉर्नडाइक के अनुसार, "शैशवावस्था सीखने का आदर्श काल है।"
  - वॉटसन के अनुसार, "शैशवावस्था में सीखने की गति और विकास की सीमा बाद की अन्य अवस्थाओं की तुलना में अधिक होती है।"
- हरलॉक ने अपनी पुस्तक 'बाल मनोविज्ञान' (Child Psychology) में शिशु में होने वाले सामाजिक विकास का वर्गीकरण किया है जिसे निम्नलिखित सारणी के द्वारा समझा जा सकता है-

शैशवावस्था में सामाजिक विकास		
क्रम संख्या	**बच्चों का आयु वर्ग**	**सामाजिक व्यवहार का रूप**
1.	पहला महीना	मानव समेत विभिन्न प्रकार की ध्वनियों में अंतर करना
2.	दूसरा महीना	मानव ध्वनि को पहचानना एवं उनका मुस्कराकर स्वागत करना
3.	तीसरा महीना	माता को पहचानना, माता के लिये प्रसन्नता व माता के अभाव में दु:ख प्रकट करना
4.	चौथा महीना	व्यक्तियों के चेहरे से परिवार के सदस्यों को पहचानना
5.	पाँचवा महीना	प्रसन्नता व क्रोध को समझना एवं अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करना
6.	छठा महीना	परिचितों से प्यार व अन्य लोगों से भयभीत होना
7.	सातवाँ महीना	परिवार के सदस्यों का अनुकरण कर हाव-भाव सीखना
8.	आठवाँ महीना	हाव-भाव के द्वारा विभिन्न संवेगों, जैसे प्रसन्नता, क्रोध और भय का प्रदर्शन करना
9.	दसवाँ एवं ग्यारहवाँ महीना	अपनी परछाई के साथ खेलना,
10.	दूसरे वर्ष की अवधि में	बड़ों के कार्यों में सहायता करना, सहयोग, सहानुभूति का विकास

बाल्यावस्था में सामाजिक विकास

- बच्चों के 2 वर्ष से 12 वर्ष के बीच की आयु की अवस्था को बाल्यावस्था कहा जाता है। बाल्यावस्था में शैशवावस्था की तुलना में कम तीव्रता से विकास होता है।
- बाल्यावस्था को बच्चों के निर्माणकारी काल के रूप में भी जाना जाता है एवं यह मानव विकास की दूसरी अवस्था के रूप में जानी जाती है।
- विद्वानों द्वारा बाल्यावस्था को प्रारंभिक बाल्यावस्था एवं मध्य बाल्यावस्था में विभाजित किया जाता है। प्रारंभिक बाल्यावस्था में 2 से 6 वर्ष यानी पाठशाला पूर्व की अवधि एवं मध्य बाल्यावस्था में 6 से 12 वर्ष पाठशाला की अवधि कहा जाता है।
- जिस प्रकार शैशवावस्था में शिशु का संसार परिवार होता है उसी प्रकार बाल्यावस्था में बालक का संसार परिवार के बाहर संगी-साथी व विद्यालय होता है।
- इस अवस्था में बच्चे शैशवावस्था के दौरान प्राप्त कुशलताओं में अपनी निपुणता को बढ़ाते हुए नए कौशल सीखते हैं। इस काल में शरीर के अंगों का समन्वय सुधरता है।
- बाल्यावस्था में बच्चों के सोचने की क्षमताएँ परिपक्व होती हैं एवं वे समाज के मान्य व्यवहार को अपनाने लगते हैं। इस काल में बालक काफी स्वावलंबी हो जाते हैं।
- बाल्यावस्था के अर्थ के संबंध में विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा कई परिभाषाएँ दी गई हैं जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं-
  - कॉल व ब्रुश के अनुसार, "बाल्यावस्था जीवन का अनोखा काल है। वास्तव में माता-पिता के लिये बाल विकास की इस अवस्था को समझ पाना बहुत कठिन है।"
  - फ्रॉयड के अनुसार, "इस अवस्था में बालक के अंदर तनाव की स्थिति का दमन हो जाता है, वह बाहर की दुनिया देखने और समझने लगता है परंतु वह परिपक्वता को प्राप्त नहीं करता है।"
  - रॉस के अनुसार- "बाल्यावस्था मिथ्या परिपक्वता या छद्म काल की अवस्था है।"
- इस अवस्था में बच्चों के सामाजिक विकास में निम्नलिखित तत्त्व देखे जाते हैं-
  - बच्चों में सामाजिक जागरूकता, चेतना व समाज के प्रति रुझान का विकास
  - समाज या समूह के आदर्शों का पालन करने की प्रवृत्ति का विकास
  - बालक एवं बालिकाओं में अलग समूह बनाने के प्रवृत्ति एवं समूह के नियमों का पालन
  - सहयोग की भावना का विकास
  - खेलकूद एवं प्रिय कार्यों से जुड़े क्रियाकलापों में रुचि लेना
  - मित्र बनाना एवं उनके साथ समय बिताना
  - आत्मनिर्भरता एवं आत्मसम्मान की प्रवृत्ति का विकास
  - अभिवृत्तियों, चारित्रिक एवं नागरिक गुणों का विकास
  - नेतृत्व की भावना का विकास एवं सामाजिक प्रशंसा व स्वीकृति की अभिलाषा

प्रारंभिक बाल्यावस्था एवं मध्य बाल्यावस्था में सामाजिक विकास में अंतर

प्रारंभिक बाल्यावस्था	मध्य बाल्यावस्था
❑ 2 से 6 वर्ष पाठशालापूर्व का समय	❑ 6 से 12 वर्ष पाठशाला का समय
❑ तीव्र भाषायी तथा कल्पनाशक्ति का विकास	❑ विचार शक्ति का विकास
❑ खेल को अकेले खेलना पसंद करते हैं	❑ समूह में खेलना पसंद करते हैं, समूह एवं खेल के नियमों का पालन भी करते हैं
	❑ ज़िम्मेदारी उठाने की तत्परता रखते हैं

किशोरावस्था में सामाजिक विकास

- 12 से 18 वर्ष के काल को किशोरावस्था कहते हैं। किशोरावस्था को बाल्यावस्था एवं प्रौढ़ावस्था के बीच की कड़ी माना जाता है।
- किशोरावस्था को शैशवावस्था एवं बाल्यावस्था की तुलना में जीवन की सबसे कठिन, जटिल, तनावयुक्त, संवेदनशील एवं उलझन वाली अवस्था माना गया है।
- युवा को किसी भी राष्ट्र की धरोहर के रूप में मान्यता दी जाती है। समाज का प्रत्येक वर्ग (जैसे- शिक्षक, माता-पिता, विद्यालय आदि) इस अवस्था के बालकों के सर्वांगीण विकास का सम्मिलित प्रयास करता है।
- इस अवस्था में किशोरों का दूसरों के प्रति और दूसरों का उनके प्रति दृष्टिकोण में बदलाव के साथ-साथ उनके अनुभवों एवं सामाजिक संबंधों में भी परिवर्तन होने लगते हैं।
- विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा किशोरावस्था को लेकर कई परिभाषा दी गई। कुछ महत्त्वपूर्ण परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं-
  - स्टैनलेहाल के अनुसार, "किशोरावस्था अत्यधिक बल एवं तनाव और तूफान एवं संघर्ष का काल है।"
  - किल पैट्रिक के अनुसार, "इस बात पर कोई मतभेद नहीं हो सकता कि किशोरावस्था जीवन का सबसे कठिन काल या कठिन सीढ़ी होती है।"
  - रास के अनुसार, "किशोरावस्था शैशवावस्था का पुनर्वर्तन काल है।"
- इस समय किशोरों के सामाजिक विकास में निम्नलिखित तत्त्व दृष्टिगोचर होते हैं-
  - किशोरावस्था में किशोर/किशोरी में आत्मप्रेम की भावना अत्यधिक तीव्र होती है जिससे वे अपनी वेशभूषा एवं स्वयं को अत्यधिक आकर्षक दिखाने हेतु अत्यधिक समय व्यतीत करते हैं।
  - बाल्यावस्था के समान इस अवस्था में भी लड़के और लड़कियों के पृथक समूह बनते हैं एवं इन समूहों का उद्देश्य विभिन्न प्रकार की मनोरंजन गतिविधियाँ, जैसे- नृत्य, संगीत, सिनेमा, पर्यटन आदि होते हैं।
  - इस अवस्था में किशोर एवं किशोरी में विषम लिंग के प्रति आकर्षण बढ़ने लगता है जिससे वे एक साथ समय बिताने के लिये अत्यधिक उत्सुक रहते हैं।

- किशोरावस्था में बच्चे अपने समूह के प्रति अत्यधिक सक्रिय एवं निष्ठावान होते हैं। वे न केवल समूह के प्रतिष्ठित सदस्य के रूप में अपनी भूमिका सुनिश्चित करते हैं बल्कि वे समूह के नियम, वेशभूषा सहित समूह के लिये कुछ भी करने को तैयार रहते हैं।
- इस अवस्था में बच्चों में आत्मसम्मान की भावना अत्यधिक प्रबल होती है। इस आयु में किशोर स्वयं को बच्चा न मानकर वयस्क मानते हैं जिस कारण उनका अभिभावकों समेत अन्य लोगों से मतभेद होता है।
- इस अवस्था में किशोर/किशोरी में संवेगों का स्तर काफी उच्च होता है जिस कारण वे अपनी इच्छाओं के अनुरूप समाज की मान्यताओं के विरुद्ध भी जाने को तैयार रहते हैं। इसलिये इस अवस्था में उनके सामाजिक समायोजन में अस्थिरता आ जाती है।
- किशोर/किशोरी में संवेगों का उच्च स्तर होने के कारण वे हमेशा किसी न किसी चिंता या समस्या से ग्रस्त रहते हैं। यह समस्या या चिंता उनकी सफलता-असफलता, शैक्षणिक प्रगति, पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन, व्यवसाय और प्रेम इत्यादि से संबंधित होती है।

समाजीकरण के अभिकर्त्ता (Agents of Socialisation)

- समाजीकरण कभी शून्य में नहीं हो सकता है। व्यक्ति, समूह और संस्थाएँ समाजीकरण के लिये सामाजिक संदर्भ का निर्माण करती हैं। इन अभिकर्त्ताओं के माध्यम से ही हम सीखते हैं और अपनी संस्कृति के मूल्यों एवं मानदंडों को अपनी मान्यताओं एवं व्यवहार में शामिल करते हैं। समाजीकरण की प्रक्रिया में हम जो आदतें, कौशल, विश्वास और निर्णय के मानक सीखते हैं, वे हमें समाज का एक कार्यात्मक सदस्य बनने में सक्षम बनाते हैं।
- समाजीकरण के विभिन्न अभिकर्त्ताओं में परिवार, साथी समूह, पड़ोस, विद्यालय, धर्म, सामाजिक वर्ग, वैश्विक समुदाय, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, सोशल नेटवर्किंग आदि को शामिल किया जाता है।
- समाजीकरण के विभिन्न अभिकर्त्ताओं को औपचारिक/अनौपचारिक, सक्रिय/निष्क्रिय या प्राथमिक/द्वितीयक के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। हालाँकि इनका कोई स्पष्ट सीमांकन नहीं है, क्योंकि ये सभी परस्पर एक-दुसरे से संबंधित हैं।
- समाजीकरण के औपचारिक अभिकर्त्ताओं में स्कूल, मनोरंजन केंद्र तथा पुस्तकालय आदि शामिल होते हैं। समाजीकरण के अनौपचारिक अभिकर्त्ताओं में परिवार, पड़ोस, समुदाय, धर्म, मित्र समूह आदि शामिल होते हैं।
- समाजीकरण के प्राथमिक अभिकर्त्ताओं में परिवार, साथी समूह और पड़ोस आदि को शामिल किया जाता है। समाजीकरण के द्वितीयक अभिकर्त्ताओं में विद्यालय, धर्म, सामाजिक वर्ग, वैश्विक समुदाय, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, सोशल नेटवर्किंग आदि को शामिल किया जाता है।
- समाजीकरण के सक्रिय अभिकर्त्ताओं में परिवार, साथी समूह, पड़ोस, विद्यालय, धर्म, सामाजिक वर्ग, वैश्विक समुदाय, सोशल नेटवर्किंग आदि को शामिल किया जाता है। समाजीकरण के निष्क्रिय अभिकर्त्ताओं में रेडियो, टेलीविज़न, प्रेस, थिएटर, पुस्तकालय आदि को शामिल किया जाता है।

समाजीकरण की प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले प्रमुख अभिकर्त्ताओं का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है-

- **परिवार :** परिवार समाजीकरण का पहला और सबसे महत्त्वपूर्ण स्थायी अभिकर्त्ता है। परिवार को 'सामाजिक सद्गुणों का पालना' (Cradle of Social Virtues) कहा जाता है क्योंकि यहीं पर सहयोग, सहिष्णुता, आत्म-बलिदान, प्रेम और स्नेह जैसे मूल मूल्यों के प्रति बच्चे का रुझान विकसित होता है। परिवार बच्चों में संस्कृति संचारित करने के लिये एक प्राथमिक माध्यम के रूप में कार्य करता है तथा एक युवा शिशु को मानव समुदाय के सदस्य के रूप में बदल देता है। परिवार काफी हद तक बच्चे की नस्ल, भाषा, धर्म, वर्ग और राजनीतिक संबद्धता को निर्धारित कर बच्चे में आत्म-अवधारणा का निर्माण करता है।
- **मित्र मंडली या साथी समूह :** समाजीकरण पर मित्र मंडली का व्यापक प्रभाव होता है। बच्चे खेल-खेल में अपनी मित्र मंडली के साथ प्रभुत्व, नेतृत्व, सहयोग, समझौता आदि विभिन्न कौशलों को विकसित करते हैं।
  - साथियों की स्वीकृति युवा किशोरों के लिये समाजीकरण का सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू है। किशोर मित्र मंडली के अनुरूप होने की इच्छा प्रदर्शित करते हैं और समूह के प्रति वफादारी की प्रबल भावना रखते हैं।
  - किशोरावस्था में मित्रों एवं मित्र मंडली का प्रभाव ऐसा होता है कि कुछ बच्चे माता-पिता और परिवार के प्रमुख की शक्ति को चुनौती देने लगते हैं।
  - किशोरावस्था के दौरान मित्रों एवं मित्र मंडली-उन्मुख गतिविधियाँ व्यक्ति के लिये अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती हैं। किशोरों के दैनिक जीवन की गतिविधियों, जैसे उनके कपड़ों की पसंद, उनके खाने की आदतें, केशविन्यास, शौक, विशेष प्रकार के संगीत के लिये वरीयता, खेल आदि पर मित्रों का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।
- **पड़ोस :** पड़ोस को एक स्थानीय सामाजिक इकाई कहा जा सकता है जहाँ एक-दूसरे के पास रहने वाले लोगों या एक ही इलाके के लोगों के बीच निरंतर संपर्क होता है। ऐसी स्थानिक इकाइयों में प्रत्यक्ष संवाद द्वारा अंत:क्रिया होती है। स्थानीय सामाजिक इकाइयों में बच्चे बड़े होते हैं एवं पड़ोस के लोगों के व्यवसाय कौशल, सदस्यों के गुणों, अनुशासन और व्यवस्थित व्यवहार को आत्मसात करते हैं।
- **विद्यालय :** शैशवावस्था से किशोरावस्था तक बच्चों का समाजीकरण बहुत तीव्र गति से होता है। शैशवावस्था एवं बाल्यावस्था के प्रारंभिक चरण में परिवार और साथियों का सबसे अधिक प्रभाव होता है। इसके बाद बच्चों के व्यवहार के मानदंडों को आकार देने वाली समाजीकरण की अग्रिम प्रक्रिया का संपादन विद्यालय द्वारा किया जाता है। विद्यालय औपचारिक शैक्षणिक संस्थानों की पूर्ण शृंखला को संदर्भित करता है।

- विद्यालय एक लघु समाज है जहाँ विभिन्न परिवारों, विभिन्न धर्मों, विभिन्न जातियों और आर्थिक स्थिति के बच्चे एक साथ आते हैं, सामूहिक गतिविधियों में भाग लेते हैं और समाज में समायोजन करना सीखते हैं। इसके साथ ही बच्चे ने अब तक परिवार, साथियों के समूह या समुदाय के माध्यम से जो कुछ भी सीखा है वह विद्यालय में स्थायी हो जाता है।

- **धर्म (Religion):** दुर्खीम ने धर्म को 'पवित्र वस्तुओं से संबंधित विश्वासों और प्रथाओं की एकीकृत प्रणाली के रूप में परिभाषित किया है।' जिन लोगों में समान सामान्य विश्वास और प्रथाएँ मौजूद हैं, वे धर्म के माध्यम से एक ही नैतिक समुदाय में एकजुट होते हैं। धर्म सामूहिक विश्वास को सामूहिक पहचान प्रदान करता है। धार्मिक अनुष्ठान, जैसे- विवाह, समाधि, जन्मदिवस समारोह और त्यौहार लोगों को एक साथ लाते हैं जिसमें वे अपने समूहों के साथ एकजुटता व्यक्त करते हैं।
  - धर्म व्यक्ति को अपने समुदाय और समाज के कल्याण के संदर्भ में सेवा करने के लिये प्रेरित करता है। चूँकि धर्म का आध्यात्मिक सूत्र व्यक्ति के जीवन पैटर्न के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है अत: व्यक्ति का अधिकांश व्यवहार उसके धर्म द्वारा नियंत्रित होता है। धर्म मनुष्य के बीच पवित्रता, सत्य, एकजुटता और सद्भाव के गुणों को रेखांकित करता है।
- **सामाजिक वर्ग :** समाजीकरण में सामाजिक वर्ग की भूमिका को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता है। समाजीकरण और सामाजिक वर्ग के बीच घनिष्ठ संबंध है। सामाजिक वर्ग न तो कानूनी रूप से परिभाषित है और न ही धार्मिक रूप से स्वीकृत। एक सामाजिक वर्ग को ऐसे लोगों के एक समूह द्वारा चिह्नित किया जाता है जो धन, आय, शिक्षा और व्यवसाय जैसे कारकों के संबंध में समान स्थिति साझा करते हैं। इन वर्गों में से प्रत्येक की अपनी मान्यताएँ, दृष्टिकोण, राय और विश्वदृष्टि होती है।
  - सामाजिक वर्ग प्रणाली किसी व्यक्ति की स्थिति एवं उसके जीवन के हर पहलू को प्रभावित करती है चाहे वह शिक्षा, राजनीतिक संबद्धता, नौकरी की प्राथमिकता या यौन व्यवहार हो। लक्ष्यों के निर्धारण के संदर्भ में भी सामाजिक वर्ग काफी प्रासंगिक होता है।
- **वैश्विक समुदाय :** हम आविष्कारों और नवाचारों के युग में रहते हैं। संचार एवं बढ़ती मानव गतिशीलता के कारण वैश्विक समुदाय अब वैश्विक गाँव की ओर रूपांतरित हो रहे हैं।
  - सूचना तक पहुँच में वृद्धि लोगों के सांस्कृतिक अवसरों में वृद्धि को जन्म देकर मानवता का संवर्द्धन कर रही है। ऐतिहासिक काल से, सांस्कृतिक अवसर यथोचित रूप से समृद्ध या संपन्न लोगों के लिये विशेषाधिकार होते थे, किंतु अब ये दुनिया भर में व्यापक रूप से सबके लिये स्वतंत्र रूप से एवं आसानी से उपलब्ध हैं। इससे समाजीकरण की प्रक्रिया के ज़्यादा व्यापक होने की संभावना बढ़ गई है।
- **मास मीडिया या जनसंचार (Mass Media):** मास मीडिया बड़े पैमाने पर सूचना के प्रसारण और अत्यधिक दर्शकों या बड़ी संख्या में लोगों तक पहुँचने का एक माध्यम है।
  - मास मीडिया में प्रिंट मीडिया, जैसे- किताबें, समाचार पत्र, पत्रिकाएँ आदि और गैर-प्रिंट मीडिया, जैसे- रेडियो, टेलीविज़न एवं फिल्में दोनों शामिल हैं।
  - पिछले कुछ दशकों में मास मीडिया द्वारा काफी तेज़ी से समाजीकरण की प्रक्रिया का संपादन किया गया है, उदाहरण के लिये टेलीविज़न द्वारा नाटकीय रूप से समाजीकरण की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया गया है।
- **इलेक्ट्रॉनिक मीडिया (Electronic Media):** वर्तमान में टेलीविज़न और कंप्यूटर समाजीकरण के बहुत महत्त्वपूर्ण अभिकरण बन गए हैं। इंटरनेट और सेलफोन तेज़ी से दुनिया भर के लोगों को आपस में जोड़ते हुए समानता की भावना को बढ़ा रहे हैं। अब बच्चे अपने घरों और समुदाय से परे एक वैश्विक दुनिया (वैश्विक समुदाय) के संपर्क में आ रहे हैं एवं उनका इस तरह से समाजीकरण किया जा रहा है कि वे इस नए वैश्विक दुनिया में समायोजित हो जाएँ।
- **सोशल नेटवर्किंग और वर्चुअल कम्युनिटीज़ (Social Networking and Virtual Communities):** सोशल नेटवर्किंग का अर्थ है अपने परिवार के सदस्यों, दोस्तों, सहपाठियों, ग्राहकों या उपभोक्ताओं के साथ संपर्क बनाने के लिये इंटरनेट आधारित सोशल मीडिया उपागमों का उपयोग। यह लोगों को उनके समान हितों, पसंद और नापसंद को साझा करने एवं सामाजिक संपर्क बनाने के लिये एक मंच प्रदान करता है। यह मल्टीमीडिया और नई इलेक्ट्रॉनिक संचार प्रौद्योगिकियों, जैसे ईमेल और इंटरनेट द्वारा सुगम बनाया गया है।
- वर्चुअल कम्युनिटी (आभासी समुदाय) ऑनलाइन कम्युनिटी है जहाँ दुनिया भर के लोगों को सोशल मीडिया के ज़रिये एक साथ लाया जा सकता है। वे समान विचारों, रुचियों आदि वाले लोगों के छोटे समूह हैं जो साइबर स्पेस साझा करते हैं कि नई संचार प्रौद्योगिकियाँ न केवल हमारे सामाजिक संबंधों को मज़बूत करती हैं बल्कि उन्हें भी गहरा करती हैं।

सामाजिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक (Factors Affecting Social Development)

बच्चों के सामाजिक विकास और वृद्धि को कई कारक प्रभावित करते हैं जिनमें कुछ व्यक्तिगत कारकों से संबंधित होते हैं जबकि कुछ वातावरण से संबंधित होते हैं। इनमें से कुछ महत्त्वपूर्ण कारक निम्नलिखित हैं-

- **परिवार का वातावरण :** बच्चों के समाजीकरण में परिवार सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है, क्योंकि समाजीकरण का प्रारंभिक पाठ परिवार में ही प्रारंभ होता है। यहाँ बच्चा माता-पिता तथा परिवार के अन्य सदस्यों से सामाजिकता सीखना प्रारंभ करता है। माता-पिता का बच्चों के समाजीकरण पर सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है। अनुकूल एवं सुखद पारिवारिक वातावरण वाले परिवार में सामाजिक रूप से सक्रिय एवं कुशल बच्चों का विकास होता है, तो वहीं प्रतिकूल एवं कटुतापूर्ण पारिवारिक संबंधों वाले वातावरण में पल रहे बच्चे अवांछित सामाजिक बुराइयों और दोष से घिर जाते हैं।

- **शारीरिक संरचना और स्वास्थ्य:** एक स्वस्थ और मज़बूत शारीरिक संरचना वाले बच्चे आत्मविश्वास एवं आत्मगौरव से युक्त होते हैं। ऐसे बच्चों में विपरीत परिस्थितियों और चुनौतीपूर्ण वातावरण में स्वयं को समायोजित करने की पूरी योग्यता व क्षमता विद्यमान होती है। ऐसे बच्चे सदैव आनंदित रहते हैं एवं ये काफी सहयोगी प्रवृत्ति के होते हैं। वहीं दूसरी ओर, शारीरिक दृष्टि से कमज़ोर, अस्वस्थ एवं शारीरिक दोषों से ग्रस्त बच्चों में हीन भावना उच्च स्तर पर पाई जाती है जिसके कारण इनका सामाजिक विकास एवं सामाजिक समायोजन काफी मुश्किल होता है।
- **बौद्धिक विकास:** नवीन वातावरण, विपरीत परिस्थितियों और चुनौतीपूर्ण परिवेश के अनुसार स्वयं का समायोजन करने की योग्यता और क्षमता को 'बुद्धि' कहते हैं। इस क्रम में सामाजिक विकास के दृष्टिकोण से बौद्धिक विकास काफी महत्त्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि जो बच्चा जितना ज़्यादा बुद्धिमान होगा वह उतनी ही कुशलता से सामाजिक परिवेश में स्वयं को समायोजित कर सकेगा।
- **वंशानुक्रम:** बाल-मनोवैज्ञानिक विद्वानों द्वारा इस तथ्य को रेखांकित किया गया है कि बच्चों के सामाजिक विकास पर कुछ सीमा तक वंशानुक्रम का प्रभाव पडता है। क्रो एवं क्रो के अनुसार, "शिशु की पहली मुस्कान या उनका कोई विशिष्ट व्यवहार वंशानुक्रम से उत्पन्न होने वाला हो सकता है।"
- **संवेगात्मक विकास:** बच्चों के संवेगात्मक और सामाजिक विकास में सकारात्मक संबंध पाया जाता है। जो बच्चे तात्कालिक परिवेश के अनुसार अपने संवेगों के कुशल प्रबंधन की क्षमता रखते हैं वे सामाजिक रूप से काफी सक्रिय एवं व्यवहार-कुशल होते हैं। वहीं दूसरी ओर संवेगात्मक रूप से जिन व्यक्तियों का समायोजन उचित नहीं होता वे सामाजिक बुराइयों और दोषों से ग्रस्त रहते हैं।
- **बच्चे का व्यक्तित्व:** प्रत्येक बच्चे का व्यक्तित्व एकसमान नहीं होता है। कुछ बच्चे अंतर्मुखी स्वभाव के होते हैं जबकि कुछ बहिर्मुखी स्वभाव के। प्राय: यह पाया गया है कि अंतर्मुखी स्वभाव वाले बच्चों की तुलना में बहिर्मुखी स्वभाव वाले बच्चों की लोकप्रियता अधिक होती है। ऐसा इसलिये होता है क्योंकि बहिर्मुखी स्वभाव वाले बच्चों में कई सकारात्मक गुण होते हैं, जैसे- आत्मविश्वास, नेतृत्व की भावना, विस्तृत सामाजिक दायरा, प्रसन्नचित्त व मिलनसार होना आदि।
- **विद्यालय:** स्वस्थ सामाजिक और प्रजातांत्रिक मूल्यों से युक्त शिक्षण पद्धति बच्चों के सामाजिक विकास की प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ऐसे मूल्यों को पोषित करने वाले विद्यालय बच्चों में सामाजिक विकास की प्रक्रिया को काफी तीव्र कर देते हैं। वहीं दूसरी ओर ऐसे विद्यालय जो स्वस्थ सामाजिक और प्रजातांत्रिक मूल्यों से विमुख रहते हैं वे विद्यार्थियों को पथभ्रष्ट कर देते हैं।
- **मित्र-समूह का प्रभाव:** बच्चों में सामाजिकता विकसित करने के क्रम में मित्र-मंडली की भूमिका का काफी महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। बच्चों पर मित्र-मंडली की संगत का असर काफी तीव्रता से पड़ता है जो उनमें विभिन्न प्रकार के सामाजिक सद्गुणों या फिर दुर्गुणों को भर सकती है।
- **पड़ोस और समुदाय:** बच्चों के सामाजिक जीवन पर उनके पड़ोसियों की अभिवृत्तियों, पसंद, आदतों, गुणों तथा अवगुणों आदि का व्यापक प्रभाव पड़ता है। इसी के साथ समाज की धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं के प्रचलित मान्य व्यवहारों, जैसे- रहन-सहन, भाषा, खान-पान का बच्चा अनुकरण करता है। इसके अलावा, धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं के आदर्श, परंपराएँ और मान्यताएँ बच्चों में सामाजिक विकास को अनुकूल दिशा प्रदान करती हैं।
- **मनोरंजन और सूचना के साधन:** किसी भी समाज में जीवन के मूल्यों, आदर्शों, संस्कृति एवं मान्य सामाजिक व्यवहार का प्रचार-प्रसार करने में पत्र एवं पत्रिकाओं, पुस्तकों, रेडियो, सिनेमा, टेलीविज़न आदि काफी महत्त्वपूर्ण होते हैं। ऐसे साधन समाजीकरण की प्रक्रिया को व्यापक और समावेशी बनाते हैं।
- **परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति:** समाज में जिस परिवार या वर्ग का सामाजिक-आर्थिक स्तर उच्च होता है वहाँ बच्चों का उच्चतम सामाजिक विकास होता है। अच्छी सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के कारण ऐसे परिवार के बच्चों में आत्मविश्वास ज़्यादा होता है एवं वे आसानी से समाज के दूसरे सदस्यों से संबंध बना लेते हैं।
- **लिंगभेद:** समाज में प्रचलित लिंगभेद का स्तर भी बच्चों के सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करता है। पितृसत्तात्मक समाज में प्राय: बालिकाओं में अत्यधिक मात्रा में सहनशक्ति, सहिष्णुता,सहानुभूति और त्याग की भावना पाई जाती है। वहीं पितृसत्तात्मक समाज के बालक कम सहनशील तथा कठोर प्रवृत्ति के गुणों से युक्त होते हैं।

समाजीकरण में विद्यालय एवं शिक्षक का योगदान
(Contribution of School and Teacher in Socialisation)

बच्चों में समाजीकरण की प्रक्रिया में सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका परिवार की होती है। परिवार के बाद क्रमश: विद्यालय और शिक्षक आते हैं। विद्यालय में समाजीकरण की प्रक्रिया का संपादन शिक्षक एवं उसके सहयोगियों द्वारा किया जाता है। बच्चों में समाजीकरण की प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने के कारण शिक्षकों से अपेक्षा होती है कि वे बच्चों के सर्वांगीण विकास में अपनी सक्रिय भूमिका निभाएँ। संक्षेप में शिक्षक निम्नलिखित तरीकों से बच्चों में समाजीकरण की प्रक्रिया को आगे बढ़ाता है-

- **व्यक्तित्व का विकास:** बच्चों में सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया विद्यालय में प्रवेश से प्रारंभ होती है। विद्यालय में बच्चा परिवार की तुलना में अत्यधिक लोगों के संपर्क मे आता है। यहाँ पर बच्चा शिक्षकों, मित्रों तथा पुस्तकों से काफी कुछ सीखता है जो उसके व्यक्तित्व के विकास के साथ उसके समाजीकरण की प्रक्रिया को आगे बढ़ाती हैं।
- **अधिकारों तथा कर्त्तव्यों का ज्ञान:** शिक्षक के द्वारा अध्यापन के क्रम में बच्चों को उनके अधिकारों, कर्त्तव्य एवं दायित्वों को बतलाया जाता है। अपने अधिकारों, कर्त्तव्य एवं दायित्वों को जानने के उपरांत बच्चा इनका अनुकरण एवं अपने व्यवहार में शामिल करना प्रारंभ कर देता है।

- **संस्कृति का ज्ञान :** शिक्षक द्वारा बच्चों को अपनी संस्कृति, सभी प्रचलित धर्मों, सामाजिक मान्यताओं आदि को विस्तृत रूप से समझाया जाता है। अपनी समृद्ध संस्कृति और विरासत का ज्ञान बच्चों में समाजीकरण को बढ़ावा देता है।
- **अनुशासन :** विद्यालय में अध्ययन करने वाले सभी छात्रों को विद्यालय के नियमों का पालन करना पड़ता है। नियमों के पालन से छात्रों में अनुशासन की भावना का विकास होता है जो बच्चों में समाजीकरण की प्रक्रिया को आगे बढ़ाता है।
- **सामाजिक संपर्क का विस्तार :** विद्यालय में विद्यार्थी विभिन्न पृष्ठभूमियों से संबंधित लोगों के संपर्क में आता है। यह बच्चों के सामाजिक संपर्क के दायरे का विस्तार करता है जो कि समाजीकरण का एक प्रमुख तत्त्व है।
- **समायोजन :** किसी व्यक्ति के समाजीकरण के मापन का एक प्रमुख तत्त्व समायोजन होता है। विद्यालय में अध्ययन के दौरान बच्चा विभिन्न पृष्ठभूमियों से संबंधित लोगों एवं बच्चों के साथ अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हुए समायोजन को सीखता है।

विभिन्न अवस्थाओं में बच्चों के समाजीकरण की विशिष्ट क्रियाएँ

शैशवावस्था की विशिष्ट सामाजिक क्रियाएँ

व्यवहार/क्रियाएँ	आयु
ध्यानाकर्षण : दूसरों का ध्यान अपनी ओर खींचने के लिये रोना-चिल्लाना, पैर पटकना आदि	जन्म से 1 वर्ष
अनुकरण : बच्चों द्वारा मुखाकृतियों, हाव-भाव, भाषा एवं गति और संपूर्ण व्यवहार की नकल करना	एक से डेढ़ वर्ष में
आश्रितता : अपनी सभी आवश्यकताओं के लिये दूसरों पर आश्रित होना	जन्म से 2 वर्ष में
शर्मीलापन : अपरिचित व्यक्तियों को देखकर शर्माना	1 वर्ष में
ईर्ष्या : अपनी माँ की गोद में दूसरे बालक एवं अपने खिलौनों को दूसरों के हाथ में होने पर शिशु में ईर्ष्या	1 वर्ष में
निषेधात्मक व्यवहार : आज्ञा के विपरीत कार्य करने की प्रवृत्ति एवं आज्ञा का उल्लंघन कर खुश होना	1 वर्ष में
सहयोग : ईर्ष्या एवं लड़ाई-झगड़े की प्रवृत्ति के विपरीत लोगों के साथ सहयोग करना	2 वर्ष में
स्वप्रेमी : माता, घर की वस्तुओं पर अधिकार जताना एवं दूसरों का ध्यान अपनी और आकर्षित करना	1 वर्ष

पूर्व बाल्यावस्था (2 से 6 वर्ष) की विशिष्ट सामाजिक क्रियाएँ

व्यवहार/क्रियाएँ	आयु
अनुकरण : मुखाकृतियों, हाव-भाव, भाषा एवं गतिविधियों के अनुकरण को सीख जाना	3 से 4 वर्ष
खेल : पूर्व बाल्यावस्था में खेल की भावना का तीव्र विकास	
निषेधात्मकता : हस्तक्षेप व इच्छापूर्ति न होने, आज्ञा के विपरीत कार्य की चरम सीमा	बाल्यावस्था से, 5 वर्ष में चरम पर
आक्रामकता : असमान व्यवहार, ध्यानाकर्षण, प्रभुत्व की भावना से व्यवहार में आक्रामकता	
झगड़ा तथा मारपीट : अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिये खेलों में झगड़ा व मारपीट	3 से 6 वर्ष में
सहयोग व सहानुभूति : परिवार एवं समूह व साथियों के साथ सहयोग व सहानुभूति	3 से 4 वर्ष में
चिढ़ाना व तंग करना : दूसरे बालक को क्रोधित कर एवं रुलाकर आनंदित होना	5 वर्ष में स्थायी
ईर्ष्या : प्रतियोगिता व प्रतिस्पर्द्धा के कारण ईर्ष्या का विकास	
प्रतियोगिता : दूसरों से श्रेष्ठ व अच्छा बनने के क्रम में प्रतियोगिता की भावना का विकास	
मित्रता : मित्रता का भाव स्थायी होना एवं बालक के द्वारा अपने मित्रों का चुनाव	

उत्तर बाल्यावस्था (6 से 12 वर्ष) की विशिष्ट सामाजिक क्रियाएँ

व्यवहार/क्रियाएँ	
सामुदायिकता	सामाजिक समायोजन, सामुदायिक भावना का विकास एवं सामाजिक दायरे का विस्तार
समूह भक्ति	सामाजिक दायरा बढ़ने एवं मित्रों के साथ समायोजन, मित्रों के विचारों को अधिक महत्त्व
मित्रता	इस अवस्था में बालक में मित्रता एवं सहयोग की भावना अधिक तथा द्वेष की भावना कम
यौन विरोध	विपरीत लिंग के प्रति कम आकर्षण, समान लिंग के साथ ज़्यादा मेल-मिलाप, विपरीत लिंग के बच्चों के हस्तक्षेप का विरोध
नेतृत्व	बहिर्मुखी प्रतिभा, बुद्धि व आत्मसंयम के गुणों से युक्त बच्चों का दूसरों पर नेतृत्व स्थापित करना
सहयोग	खेलों के माध्यम से बच्चों में सहयोग तथा सुरक्षा की भावना का विकास
सहानुभूति	सामूहिकता के कारण बालक में परिवार से इतर दूसरों के लिये दया, प्रेम, त्याग व सहानुभूति का भाव उत्पन्न होना
प्रतिस्पर्द्धा खेल की भावना	बालक का अपने लक्ष्यों के प्रति सजग होना एवं प्रतियोगिता कर अपने साथियों से आगे बढ़ने का प्रयास, सामूहिक खेलों में प्रवृत्ति बढ़ने से लड़के घर के बाहर व लड़कियाँ घर के अंदर के खेलों में रुचि

किशोरावस्था में विशिष्ट सामाजिक विकास	
व्यवहार/क्रियाएँ	
समूह का सदस्य होना	संगठित समूह बनाकर पूरी निष्ठा व लगन से सामूहिक क्रियाओं में भाग लेना
सामाजिक संबंध बनाना	सामाजिक व सामूहिक क्रियाओं में रुचि एवं स्वेच्छापूर्वक सहभागिता
सामाजिक रुचियों का विकास	सामाजिक संगठनों के सदस्य बनकर संगठन के कार्यों को रुचिपूर्वक करना
सामाजिक चेतना का विकास	अस्तित्व, वर्ग, समानता, भिन्नता, अपेक्षा, नियम व कानून के संदर्भ में सामाजिक चेतना का जाग्रत होना
पारिवारिक संबंध	गलत व सही में पहचान होने के कारण माता-पिता का नियंत्रण कम होना, परिवार के सदस्यों से ज़्यादा लगाव
स्पर्द्धा एवं प्रतियोगिता	जीवन में उत्तम स्थान प्राप्ति की इच्छा से स्पर्द्धा एवं प्रतियोगिता की भावना जाग्रत होना
नेतृत्व की भावना	परिपक्वता, प्रतिभावान, बहिर्मुखी, सम्मानित और शारीरिक रूप से बलशाली किशोरों द्वारा नेतृत्व की ओर आगे बढ़ना
मित्रता	समान रुचि तथा सोच-विचार वाले किशोरों में प्रगाढ़ मित्रता (समान लिंग तथा विपरीत लिंग दोनों में)
सामाजिक परिपक्वता	सामाजिक बोध विकसित होने के कारण "विकसित सामाजिकता की अवस्था" की प्राप्ति

अतिमहत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी तथ्य

- समाजीकरण समाज के मानदंडों के साथ अनुकूलन की प्रक्रिया है जिसमें समाज के मूल्यों, विश्वासों तथा अपेक्षाओं को अर्जित किया जाता है। शिक्षा के संदर्भ में, समाजीकरण से तात्पर्य है- सामाजिक वातावरण में अनुकूलन और समायोजन।
- बच्चों में प्राथमिक समाजीकरण का विकास परिवार, पड़ोस एवं नातेदारी, मित्र-समूह और प्रारंभिक शिक्षा के माध्यम से प्रारंभ होता है। परिवार, पड़ोस एवं नातेदारी, मित्र-समूह आदि समाजीकरण के प्राथमिक अभिकर्त्ता कहे जाते हैं।
- बच्चों में द्वितीयक समाजीकरण की प्रक्रियाओं में शैक्षणिक संस्थाएँ (कॉलेज-विश्वविद्यालय), राजनीतिक संस्थाएँ, आर्थिक संस्थाएँ (बाज़ार व दुकान), सांस्कृतिक संस्थाएँ, व्यवसाय-समूह(दफ्तर एवं फैक्ट्री) आदि प्रमुख भूमिका निभाते हैं।
- किशोरों में द्वितीयक समाजीकरण की प्रक्रिया को प्रतियोगिता (Competition), सहयोग (Co-operation), संघर्ष (Conflict), तादात्मीकरण (Identification) द्वारा गति प्रदान की जाती है।
- जन्मोपरांत की अन्य अवस्थाओं की तुलना में शैशवावस्था की अवस्था में सबसे तीव्र गति से वृद्धि और विकास होता है।
- बालक के 2 वर्ष से 12 वर्ष के बीच की आयु की अवस्था को बाल्यावस्था कहा जाता है। बाल्यावस्था में शैशवावस्था की तुलना में कम तीव्रता से विकास होता है।
- किशोरावस्था को शैशवावस्था एवं बाल्यावस्था की तुलना में जीवन की सबसे कठिन, जटिल, तनावयुक्त, संवेदनशील एवं उलझन वाली अवस्था माना गया है।
- समाजमिति (Sociometry) एक समूह के सदस्यों के अंतर्संबंधों, उनके दृष्टिकोण, मूल्यों, एक-दूसरे के प्रति स्वीकृति और समूह में प्रत्येक व्यक्ति की भूमिका का अध्ययन करने वाला विज्ञान है। किसी व्यक्ति में समाजीकरण का अध्ययन समाजमिति (Sociometry) के अंतर्गत किया जाता है।
- समाजीकरण का मापन समाजमिति तकनीक या सोशियो-मेट्रिक तकनीक (Socio-metric Technique) के द्वारा किया जाता है, जिसका विकास सर्वप्रथम जे.एल. मोरेनो और हेलेन जेनिंग्स (J.L. Moreno and Hellen Jennings) द्वारा किया गया था।
- एक शिक्षक कक्षा में आदर्श रूप से बर्ताव कर विद्यार्थियों में सामाजिक मूल्यों को विकसित कर सकता है।
- बच्चों के सामाजिक विकास में खेल का विशेष महत्त्व है। शिक्षकों को अपने विद्यार्थियों को सामूहिक गतिविधियों में शामिल करना चाहिये, क्योंकि खेल सीखने को सुगम बनाने के अतिरिक्त समाजीकरण में भी सहायता करता है।
- समाजीकरण के औपचारिक अभिकर्त्ताओं में विद्यालय, व्यवस्थित मनोरंजन केंद्र तथा पुस्तकालय आदि शामिल होते हैं। समाजीकरण के अनौपचारिक अभिकर्त्ताओं में परिवार, पड़ोस, समुदाय, धर्म, मित्र समूह आदि शामिल होते हैं।
- समाजीकरण के प्राथमिक अभिकर्त्ताओं में परिवार, साथी समूह और पड़ोस आदि को शामिल किया जाता है। समाजीकरण के द्वितीयक अभिकर्त्ताओं में विद्यालय, धर्म, सामाजिक वर्ग, वैश्विक समुदाय, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, सोशल नेटवर्किंग आदि को शामिल किया जाता है।
- समाजीकरण के सक्रिय अभिकर्त्ताओं में परिवार, साथी-समूह, पड़ोस, विद्यालय, धर्म, सामाजिक वर्ग, वैश्विक समुदाय, सोशल नेटवर्किंग आदि को शामिल किया जाता है। समाजीकरण के निष्क्रिय अभिकर्त्ताओं में रेडियो, टेलीविज़न, प्रेस, थिएटर, पुस्तकालय आदि को शामिल किया जाता है।
- शैशवावस्था और बाल्यावस्था के मध्य प्राथमिक समाजीकरण चरण परिवार के भीतर संपादित होता है जिसमें शिशु बुनियादी ज्ञान और भाषा या व्यवहार सीखते हैं।

- बाल्यावस्था की समाप्ति से परिपक्वता तक द्वितीयक समाजीकरण प्रारंभ होता है जिसमें परिवार की तुलना में समाजीकरण के कुछ अन्य अभिकर्त्ता, जैसे विद्यालय और दोस्तों का समूह बच्चे के समाजीकरण में अत्यधिक भूमिका निभाने लगते हैं।
- भविष्य के कॅरियर या सामाजिक भूमिकाओं के संदर्भ में माता-पिता प्रत्याशामूलक समाजीकरण के प्राथमिक स्रोत होते हैं।
- पुनः समाजीकरण कुछ निश्चित व्यवहार पैटर्न और भूमिकाओं को छोड़ने की प्रक्रिया को संदर्भित करता है जिससे जीवन में विकास के हिस्से के रूप में नए लोगों, नई भूमिकाओं एवं नए व्यवहार को अपनाया जा सके।
- प्रौढ़ समाजीकरण वयस्क अवस्था में होता है जब व्यक्ति पति, पत्नी या कर्मचारी जैसी नई भूमिकाओं के अनुकूल हो जाता है।
- चार्ल्स हॉर्टन कूले का समाजीकरण का सिद्धांत 'स्व-दर्पण का सिद्धांत' (Looking Glass Self) के नाम से प्रसिद्ध है।
- फ्राँसीसी समाजशास्त्री इमाइल दुर्खीम द्वारा प्रस्तुत समाजीकरण का सिद्धांत 'सामूहिक प्रतिनिधान' (Collective Representation) की अवधारणा पर आधारित है।
- जॉर्ज हरबर्ट मीड का समाजीकरण का सिद्धांत 'स्व' के निर्माण के सिद्धांत पर आधारित है।
- जीन पियाजे एक स्विस मनोवैज्ञानिक थे जिन्होंने संज्ञानात्मक विकास के आधार पर अपने समाजीकरण के सिद्धांत को प्रस्तुत किया।
- अमेरिकी मनोवैज्ञानिक कोहलबर्ग एवं गिलिगन ने नैतिक विकास के संदर्भ में समाजीकरण के सिद्धांतों को प्रस्तुत किया।
- एरिक एरिक्सन एक जर्मन-अमेरिकी मनोवैज्ञानिक और मनोविश्लेषक थे। फ्रॉयड के विपरीत, एरिक्सन का सिद्धांत मनोवैज्ञानिक विकास की बजाय मनोसामाजिक विकास पर केंद्रित था।
- सिग्मंड फ्रॉयड ने मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत (Psychoanalytic Theory) के आधार पर समाजीकरण की अवधारणा प्रस्तुत की। सिग्मंड फ्रॉयड के अनुसार मानव मन के तीन मुख्य क्षेत्र होते हैं: चेतन, अर्द्धचेतन या अवचेतन और अचेतन।
- फ्रॉयड का मानना था कि हमारे व्यक्तित्व की संरचना तीन एकीकृत और अंतर-संबंधित प्रणालियों के इर्द-गिर्द बनी है, जिसे उन्होंने इड (Id), ईगो (Ego) और सुपरईगो (Superego) की संज्ञा दी।

अभ्यास प्रश्न

1. बच्चों के समाजीकरण में विद्यालय.....
   (a) प्राथमिक कारक है।
   (b) द्वितीयक कारक है।
   (c) की कोई भूमिका नहीं है।
   (d) की बहुत कम भूमिका है। **CTET, 2021**

2. निम्नलिखित में से कौन-सा द्वितीयक समाजीकरण एजेंसी का उदाहरण है?
   (a) विद्यालय एवं मीडिया
   (b) मीडिया एवं पास-पड़ोस
   (c) परिवार एवं पास-पड़ोस
   (d) परिवार एवं मीडिया **CTET, 2019**

3. निम्नलिखित अवधि में से किसमें शारीरिक वृद्धि एवं विकास तीव्र गति से घटित होता है?
   (a) मध्य-बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था
   (b) किशोरावस्था एवं वयस्कता
   (c) शैशवावस्था एवं प्रारंभिक बाल्यावस्था
   (d) प्रारंभिक बाल्यावस्था एवं मध्य-बाल्यावस्था
   CTET, 2019

4. परिवार एवं पास-पड़ोस, बच्चों के समाजीकरण की-
   (a) द्वितीयक एजेंसियाँ हैं (b) मनोवैज्ञानिक एजेंसियाँ हैं
   (c) प्राथमिक एजेंसियाँ हैं (d) मध्य एजेंसियाँ हैं
   CTET, 2019

5. वह प्रक्रिया जिसके द्वारा बच्चे आदतों, कौशलों, मूल्यों तथा अभिप्रेरणा का विकास करते हैं और जो उन्हें समाज का ज़िम्मेदार एवं क्रियाशील सदस्य बनाती है, को क्या कहा जाता है?
   (a) समाजीकरण (b) समावेशन
   (c) मुख्य धारा से जुड़ना (d) विभेदीकरण
   CTET, 2019

6. निम्नलिखित में से कौन-से कारक बच्चे के समाजीकरण में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं?
   1. मीडिया 2. विद्यालय
   3. परिवार 4. पास-पड़ोस
   कूट:
   (a) 1, 2, 3 और 4 (b) 3 और 1
   (c) 2 और 3 (d) 1, 3 और 4
   CTET, 2019

7. निम्नलिखित में कौन प्राथमिक समाजीकरण का माध्यम है?
   (a) परिवार (b) विद्यालय
   (c) सरकार (d) मीडिया
   CTET, 2019

8. स्कूल बच्चों के समाजीकरण की एक संस्था है, जहाँ-
   (a) प्रमुख स्थान स्कूल की दिनचर्या का होता है
   (b) प्रमुख स्थान स्कूल की गतिविधियों का होता है
   (c) प्रमुख स्थान स्कूल के शिक्षकों का होता है
   (d) प्रमुख स्थान स्कूली बच्चों का होता है
   CTET, 2018

9. जब आप एक शिक्षक समूह से जुड़ जाते हैं और अपने समूह के अन्य लोगों की ही तरह पोशाक धारण करने लगते हैं, तो आप प्रदर्शन कर रहे होते हैं–
(a) समूह निर्देश-अनुपालन का (b) समूह की अनुरूपता का
(c) समूह की पहचान का (d) समूह आज्ञाकारिता का
CTET, 2018

10. निम्नलिखित में से सामाजिक मूल्य कौन-सा है?
(a) प्राथमिक लक्ष्य
(b) मूल प्रवृत्ति
(c) सहायतापरक व्यवहार
(d) आक्रामकता की आवश्यकता **UPTET, 2018**

11. वह अवस्था जब बालक अपने अभिभावकों के साथ कम आनंदित होता है, संबंधित है उसके _____
(a) शारीरिक विकास से (b) मानसिक विकास से
(c) भाषा विकास से (d) सामाजिक विकास से
HTET, 2017

12. निम्नलिखित में से कौन-सा उत्तर-बाल्यावस्था का लक्षण है?
(a) हठी (b) समय की संकल्पना
(c) सामाजिक संकल्पना (d) वीरपूजा
HTET, 2017

13. बच्चों के सामाजिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक हैं–
(a) आर्थिक जन्य (b) सामाजिक परिवेशजन्य तत्त्व
(c) शारीरिक तत्त्व (d) वंशानुगत तत्त्व
UPTET, 2017

14. बच्चे के समाजीकरण में परिवार ..... भूमिका निभाता है।
(a) कम महत्त्वपूर्ण (b) रोमांचकारी
(c) मुख्य (d) गौण
CTET, 2016

15. _____ एक प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से मानव शिशु समाज के सक्रिय सदस्य के रूप में निष्पादन करने के लिये आवश्यक कौशलों का अर्जन करना प्रारंभ करता है।
(a) सीखना (b) परिपक्वता
(c) विकास (d) समाजीकरण
CTET, 2016

16. निम्नलिखित में कौन-से समाजीकरण का गौण वाहक नहीं हो सकता है?
(a) विद्यालय और पास-पड़ोस
(b) अंतर्राष्ट्रीय संबंध
(c) परिवार और रिश्तेदार
(d) परिवार और पास-पड़ोस

17. विद्यालय और समाजीकरण के बारे में निम्नलिखित में से क्या सत्य है?
(a) समाजीकरण में विद्यालय की कोई भूमिका नहीं होती
(b) विद्यालय समाजीकरण का एक महत्त्वपूर्ण कारक है
(c) समाजीकरण में विद्यालय की बहुत थोड़ी भूमिका होती है
(d) विद्यालय समाजीकरण का पहला मुख्य कारक है
CTET, 2016

18. फ्रॉयड के अनुसार हमारे मूल्यों का आंतरिकीकरण में होता है–
(a) इदम् (b) अहम्
(c) पराअहम् (d) परिस्थितियाँ
UPTET, 2016

19. फ्रॉयड के अनुसार–
(a) "ग्रहण किये या सीखे हुए तथ्यों को धारण करने या पुनः स्मरण करने की असफलता को विस्मरण कहते हैं"
(b) "विस्मरण का अर्थ है किसी समय प्रयत्न करने पर भी किसी पूर्व अनुभव का स्मरण करने या पहले की सीखी हुई किसी क्रिया को करने की असफलता"
(c) "विस्मरण वह प्रवृत्ति है, जिसके द्वारा दुखद अनुभवों को स्मृति से अलग कर दिया जाता है"
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं **UPTET, 2016**

20. विकास के मनोसामाजिक सिद्धांत का प्रतिपादन _____ ने किया था।
(a) एरिक्सन (b) फ्रॉयड
(c) कोहलर (d) वॉटसन
UPTET, 2016

21. _____ के अनुसार इदम्, अहम् तथा पराअहम् व्यक्तित्व के तीन घटक हैं।
(a) बंडूरा (b) युग
(c) एडलर (d) फ्रॉयड
UPTET, 2016

22. शिक्षा के संदर्भ में, समाजीकरण से तात्पर्य है–
(a) सामाजिक वातावरण में अनुकूलन और समायोजन
(b) सामाजिक मानदंडों का सदैव अनुपालन करना
(c) अपने सामाजिक मानदंड बनाना
(d) समाज में बड़ों का सम्मान करना
UPTET, 2016

23. निम्नलिखित में कौन-से समाजीकरण के गौण वाहक हो सकते हैं?
(a) विद्यालय एवं पास-पड़ोस
(b) विद्यालय एवं निकटतम परिवार के सदस्य
(c) परिवार और रिश्तेदार
(d) परिवार और पास-पड़ोस **UPTET, 2016**

24. शिक्षा का उद्देश्य है–
(a) अच्छा नागरिक बनाना
(b) ऐसे व्यक्तियों का निर्माण जो समाज के लिये उपयोगी हों
(c) व्यावहारिकता का निर्माण करना
(d) उपर्युक्त सभी **HTET, 2015**

25. निम्नलिखित में से कौन-सा बच्चों के समाजीकरण के प्रगतिशील मॉडल के संदर्भ में सही नहीं है?
(a) समूह कार्य में सक्रिय सहभागिता तथा सामाजिक कौशलों को सीखना
(b) बच्चे विद्यालय में बताई गई बातों को स्वीकार करते हैं, चाहे उनकी सामाजिक पृष्ठभूमि कुछ भी हो
(c) कक्षा में प्रजातंत्र के लिये स्थान होना चाहिये
(d) समाजीकरण सामाजिक नियमों का अधिग्रहण है
CTET, 2015

26. समाजीकरण एक प्रक्रिया है–
(a) मूल्यों, विश्वासों तथा अपेक्षाओं को अर्जित करने की
(b) मित्रों के साथ सामाजिक बनने की
(c) घुलने-मिलने तथा समायोजन की
(d) एक समाज की संस्कृति की आलोचना करना सीखने की
CTET, 2015

27. निम्नलिखित में से कौन-सा समाजीकरण का एक प्रमुख प्रकार है?
(a) कंप्यूटर (b) आनुवंशिकता
(c) राजनीतिक दल (d) परिवार
CTET, 2015

28. "जन-संचार माध्यम समाजीकरण का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम बनता जा रहा है।" निम्नलिखित में से कौन-सा सबसे उपयुक्त कथन है?
(a) समाजीकरण केवल माता-पिता और परिवार के द्वारा किया जाता है
(b) जन-संचार माध्यमों की पहुँच बढ़ रही है और जन-संचार माध्यम अभिवृत्तियों, मूल्यों एवं विश्वासों को प्रभावित करता है
(c) बच्चे संचार माध्यमों के साथ प्रत्यक्ष रूप से अन्त: क्रिया नहीं कर सकते हैं
(d) संचार माध्यम पदार्थों के विज्ञापन और विक्रय के लिये एक अच्छा माध्यम है **CTET, 2015**

29. समाजीकरण की प्रक्रिया में शामिल नहीं है–
(a) मूल्यों और विश्वासों का अर्जन
(b) आनुवंशिक संचरण
(c) एक संस्कृति की रीतियों और मानदंडों को सीखना
(d) कौशलों का अर्जन **CTET, 2015**

30. समाजीकरण के संदर्भ में विद्यालयों के पास प्राय: एक प्रच्छन्न पाठ्यचर्या विद्यमान रहती है, जिसमें निहित है–
(a) परिवारों के माध्यम से विद्यार्थियों का समझौतापूर्ण (Negotiating) व प्रतिरोधात्मक समाजीकरण
(b) मूल्यों व अभिवृत्तियों का शिक्षण एवं आकलन
(c) बलात्मक अधिगम, चिंतन व समकक्षीय साथी एवं अध्यापक की अनुकृति द्वारा विशेष रूप से अपनाया जाने वाला व्यवहार
(d) अन्त:क्रिया व सामग्री द्वारा विद्यालयों में प्रस्तुत किये जाने वाली सामाजिक भूमिकाओं से संबद्ध अनौपचारिक संकेत
CTET, 2014

31. निम्नलिखित में से कौन-सी समाजीकरण की निष्क्रिय एजेंसी है?
(a) स्वास्थ्य क्लब (b) परिवार
(c) इको क्लब (d) सार्वजनिक पुस्तकालय
CTET, 2014

32. मनोसामाजिक सिद्धांत निम्नलिखित में से किस पर बल देता है?
(a) उद्दीपन व प्रतिक्रिया
(b) लिंगीय व प्रसूति स्तर
(c) उद्यम के मुकाबले में हीनता स्तर
(d) क्रियाप्रसूत (सक्रिय) अनुबंधन
CTET, 2014

33. "सामाजिक प्रत्याशाओं के अनुरूप व्यवहार की योग्यता का अधिगम सामाजिक विकास कहा जाता है।" उक्त कथन है–
(a) हरलॉक का (b) टी.पी. नन का
(c) मैक्डूगल का (d) रॉस का
UPTET, 2014

34. समाजीकरण है-
(a) सामाजिक मानदंडों में परिवर्तन
(b) शिक्षक एवं पढ़ाए गए के बीच संबंध
(c) समाज के आधुनिकीकरण की प्रक्रिया
(d) समाज के मानदंडों के साथ अनुकूलन
CTET, 2013

35. निम्नलिखित में से किसका मिलान उचित है?
(a) शारीरिक विकास : वातावरण
(b) संज्ञानात्मक विकास : परिपक्वता
(c) सामाजिक विकास : वातावरण
(d) संवेगात्मक विकास : परिपक्वता
CTET, 2013

36. समाजीकरण में सम्मिलित हैं- सांस्कृतिक संचरण और _____।
(a) विद्रोहियों को निरुत्साहित करना
(b) वैयक्तिक व्यक्तित्व विकास
(c) बच्चों को लेबलों में समायोजित करना
(d) संवेगात्मक समर्थन उपलब्ध करना **CTET, 2013**

37. "जब कभी दो या अधिक व्यक्ति एक साथ मिलते हैं और एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं तो वे एक सामाजिक समूह का निर्माण करते हैं" यह कथन-
(a) आंशिक रूप से सत्य है (b) सत्य है
(c) कदाचित सत्य है (d) असत्य है
UPTET, 2013

38. चेस तथा कार्ड को निम्नलिखित में किसमें वर्गीकृत किया जा सकता है?
(a) लड़ाई वाले खेल (b) बौद्धिक खेल
(c) प्रायोगिक खेल (d) गतिमान खेल
UPTET, 2013

39. बच्चों में अच्छे चरित्र के निर्माण के लिये–
(a) पाठ्यपुस्तकों में चरित्र निर्माण संबंधी पाठ होने चाहिये
(b) चरित्र निर्माण के लिये व्याख्यान दिये जाने चाहिये
(c) कक्षा-कक्ष गतिविधि इस प्रकार से हो कि बच्चों को चरित्र निर्माण में सहायता मिल सके
(d) महापुरुषों की जीवनी बच्चों को पढ़ाई जानी चाहिये
UTET, 2013

40. शिक्षा के संदर्भ में समाजीकरण से तात्पर्य है–
(a) सामाजिक मानदंडों का सदैव अनुपालन करना
(b) अपने सामाजिक मानदंड बनाना
(c) समाज में बड़ों का सम्मान करना
(d) सामाजिक वातावरण में अनुकूलन और समायोजन
CTET, 2012

41. शिक्षकों को यह सलाह दी जाती है कि वे अपने विद्यार्थियों को सामूहिक गतिविधियों में शामिल करें, क्योंकि सीखने को सुगम बनाने के अतिरिक्त ये ..... में भी सहायता करती हैं।
(a) दुश्चिन्ता (b) समाजीकरण
(c) मूल्य द्वंद्व (d) आक्रामकता
CTET, 2012

42. सबसे अधिक गहन और जटिल समाजीकरण होता है–
(a) किशोरावस्था के दौरान (b) पूर्व बाल्यावस्था के दौरान
(c) प्रौढ़ावस्था के दौरान (d) व्यक्ति के पूरे जीवन में
CTET, 2011

43. अल्पवयस्क बच्चों के अधिगम में अभिभावकों की भूमिका होनी चाहिये-
(a) निषेधात्मक (b) अग्र-सक्रिय
(c) संवेदनात्मक (d) उदासीन
UPTET, 2011

44. विद्यार्थियों को विद्यालय में खेलना क्यों उचित है?
(a) यह उन्हें शारीरिक रूप से सशक्त बनाएगा
(b) यह शिक्षकों के लिये काम आसान करेगा
(c) यह समय बिताने में सहायक होगा
(d) यह सहयोग एवं संतुलन का विकास करेगा
UPTET, 2011

45. परिवार एक साधन है-
(a) अनौपचारिक शिक्षा का (b) औपचारिक शिक्षा का
(c) गैर-औपचारिक शिक्षा का (d) दूरस्थ शिक्षा का
UPTET, 2011

46. एक शिक्षक विद्यार्थियों में सामाजिक मूल्यों को विकसित कर सकता है-
(a) महान व्यक्तियों के बारे में बोलकर
(b) अनुशासन की अनुभूति को विकसित कर
(c) आदर्श रूप से बर्ताव कर
(d) उन्हें अच्छी कहानियाँ सुनाकर **UPTET, 2011**

47. किसी विद्यार्थी की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता है-
(a) उत्तरदायित्व की अनुभूति (b) ईमानदारी
(c) सहभागिता (d) आज्ञाकारिता
UPTET, 2011

48. कौन-सा सिद्धांत व्यक्त करता है कि मानव मस्तिष्क एक बर्फ की बड़ी चट्टान के समान है, जो कि अधिकांशतः छिपी रहती है एवं उसमें चेतन के तीन स्तर हैं?
(a) गुण सिद्धांत (b) प्रकार सिद्धांत
(c) मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत (d) व्यवहारवाद सिद्धांत
RTET, 2011

49. निम्नलिखित में से कौन-सी संस्था सामाजिक परंपराओं के हस्तांतरण में सबसे अधिक योगदान करती है?
(a) परिवार (b) विद्यालय
(c) पड़ोस (d) इनमें से कोई नहीं
BTET, 2011

50. सामाजिक अधिगम आरंभ होता है–
(a) अलगाव से (b) भीड़ से
(c) संपर्क से (d) दृश्य-श्रव्य सामग्री से
CGTET, 2011

51. समाजीकरण वह प्रक्रिया है, जिसे बच्चे व वयस्क सीखते हैं–
(a) परिवार से (b) विद्यालय से
(c) श्रेष्ठ जनों से (d) इन सभी से
PTET, 2011

52. विद्यार्थियों के साथ संप्रेषण का अर्थ होता है–
(a) उनसे प्रश्न करने को कहना
(b) विचारों का आदान-प्रदान
(c) उन्हें निर्देश देना
(d) उन्हें अपने विचारों से अवगत कराना **PTET, 2011**

उत्तरमाला

1. (b)	2. (a)	3. (c)	4. (c)	5. (a)	6. (a)	7. (a)	8. (d)	9. (b)	10. (c)
11. (d)	12. (c)	13. (b)	14. (c)	15. (d)	16. (b)	17. (b)	18. (c)	19. (c)	20. (a)
21. (d)	22. (a)	23. (b)	24. (d)	25. (b)	26. (a)	27. (d)	28. (b)	29. (b)	30. (d)
31. (d)	32. (c)	33. (a)	34. (d)	35. (c)	36. (b)	37. (b)	38. (b)	39. (c)	40. (d)
41. (b)	42. (a)	43. (b)	44. (d)	45. (a)	46. (c)	47. (d)	48. (c)	49. (a)	50. (c)
51. (d)	52. (b)								